बिरहवारीशमाधवानलकामकंदला चरित्रभाषा ॥

(बोधाकविकृत)

प्रथमखण्ड पूर्वार्द्धभाग ॥

जिसमें

बोधा कविने माधवानल वा कामकंदलाके पूर्व्व जन्मका चरित्र वा माधवानल कामकंदला के विरह का वर्णन वा कामसैन और विक्रमादित्य राजाकी लड़ाई वा फिर माधवानल कामकंदला का समागम वर्णनकिया है ॥

जिसको

बैश्यकुलोत्पन्न कन्हैयालाल कुरेले के ज्येष्ठ पुत्र गणेश प्रसादने सब काव्यानुरागियों के अवलोकनार्थ शुद्ध करके प्रकाशित किया।

प्रथमबार

इस मतबे में जितने प्रकारकी काव्यकी पुस्तकें छपी हैं उनमें से कुछ नीचे लिखी जाती हैं॥

नवीनसंग्रह

जिसमें भक्तभयहारी कुंजबिहारी रसिकशिरोमणि श्री कृष्णचन्द्र और श्रीराधिकाजीके लीलाबिषयक नानाप्रकारके अत्युत्तम कबित्त और सवैयादि बर्णितहैं जिसको हफ़ीजुल्लाहखां सांड़ीनिवासि मुदर्रिस मदर्सा मौज़ा बन्नापुर परगनै बंगर थाना बघौली स्टेशन ज़िला हरदोई ने अपने शौक़ीन दोस्तोंके दिलबहलानेके निमित्त अति परिश्रमसे संग्रह किया॥

षट्ऋतुकाव्यसंग्रह

हफ़ीजुल्लाहखां संग्रहीत जिसमें बसन्त, ग्रीष्म, बर्षा, शरद हेमन्त, शिशिर छओ ऋतुओं के कबित्त व सवैया ऐसे २ अत्युत्तम लहलहे रँगीले परमचुहचुहे रसीले, अपने रसिकमित्रों व रंगीन तबीयतवाले महाशयों के चित्तबिनोदार्थ बड़े परिश्रमसे छांट २ कर लिखेगये हैं॥

प्रेमतरङ्गिणी

हफ़ीजुल्लाहखां संग्रहीत इसमें चित्रबिचित्र सामयिक प्रत्येक ऋतुओं के कबित्त सवैया हरएक कबिके बना ...किये गयेहैं इसकी उत्तमता देखनेही से मालूम

बिरहबारीशमाधवानलकामकंदलाचरित्रभाषा

की भूमिका ॥

सर्वरसिक जनोंको बिदितहो कि आजतक यह ग्रन्थ (बिरह-बारीशमाधवानलकामकंदला) नहीं छपाऔरउन लोगोंसे बहुधा सुननेमें आया कि जिन लोगोंको इसके सुननेका संयोग भया कि क्या कहैं यह पुस्तक छपीनहीं मिलती अगर मिलती होती तो इसको प्रायः पढ़ा करते इसबात को जब हमने बहुत लोगों के मुहँसे सुनकर बिचार किया कि यह पुस्तक जरूरछपवाना चाहिये परंतु यह पुस्तक किसी के पास पूरी नहीं मिलती थी तो हमने कई पुस्तकोंसे शोधकर समग्र किया और एतद्देशीसर्व रसिक जनोंके प्रीति अर्थ छपवाया और इसका सर्व अधिकार श्रीयुत मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) को देकर स्वाधीन किया अब यह जानना चाहिये कि इस ग्रंथके विषय पर ध्यान देने से आप लोगों को मालूम होगा कि उस प्राचीन कालमें जब महाराज बीरबिक्रमादित्यकाराज्यथालोगोंकीप्रीति कैसीसच्ची थी और धर्मका प्रचार कैसा रहा करताथा इसपुस्तक के पढ़ने से आपलोगों को विदितहोगा कि जबश्रीकृष्णचंद्रमहाराज गोकुल से द्वारावती को पधारे उस समय गोपी जन श्री यदुरायजीकेबिरहमें अतिव्याकुलहोबन२ फिरती भईं और कहती भईं श्रीबिहारीजी अमुक२स्थानोंमें अमुक२लीला करिहमलोगों को बश्यकरके आप श्रीद्वारकापुरीको पधारे उसी समय कामदेव अपनीस्त्री सहित प्रकट होकर अपने कामरूपी बाणोंसे गोपीजनोंको आच्छादित करदिया तब गोपीयोंने शाप दिया कि जैसे तुमने हमलोगोंको ऐसी बिरहब्यथामें पीड़ितकियाहै वैसे तुम भी कलियुग में अपनी प्रियाके विरह में वियोगी होकर भ्रमण करोगे इसीशापके कारण कामदेवको जन्म लेनापड़ा जो

माधवा नल हुआ और रति राजकन्या भई पर उसके ग्रहों
जाना गया कि इसमें सब वेश्या के लक्षणपाये जावेंगे राज
ने इस बातके सुननेपर उसबालिकाको कटेहरामें रख नदीमें बह
दिया जिसको एकनटने देख नदीसे निकाल खोलने पर एक
स्वरूपवती कन्यापाई और प्रसन्नहोकर उसे अपने घरलाया प
लापोशा और उसे नादविद्यासिखलाय अतिप्रबीण कियाऔर
उसे राजा कामसैनके सभा में लेगया जो कि कामावती नग
रीमें राज्यकरताथा उस नटने इस कन्याको उसी राजाकोसौंप
बहु द्रव्य पाय घर को लौटआया अब कामदेव का वृत्तान्त सुनि
ये कि उसने ब्राह्मणके घर जन्मलिया और नाम उसका माधवा
नल रक्खागया जो सर्व बिद्याओं में प्रवीणहो बहुधा बीणा
बजाया करताथा अब यह जानना चाहिये कि किसी समय में
लीलावती ने जन्म लियाथा कि जिसका गणितशास्त्र में ली-
लावती नाम का ग्रन्थ अबतक प्रचलित है उसी समयमें एक
बिद्वान ब्राह्मण ने लीलावती से शास्त्रार्थ किया और परास्त
होजाने पर उसको यह शापदिया कि तुझको वैधव्यका दुःख
भोगना पड़ेगा इस शापके पश्चात् लीलावती ने बहुत तपस्या
कर महादेव जी को प्रसन्नकिया और यह बरमांगा कि हमको
कामदेव ऐसा पुरुष मिलै जिसपर श्रीभोलानाथजीने एव मस्तु
कह उसकोमन बांछितबरदान दियाजब उसकाजन्म दूसरा पुहु
पावती नगरी में रघुदत्तनामक ब्राह्मणके घरमें भया जो वहांके
राजाका कर्म्मचारीथा जिसके घरमें थोड़ही कालमें वहकन्या
सर्व विद्यामें प्रवीणहो यौबन अवस्था को प्राप्तभई जो एक दि-
वस अपनी सहेलियोंके साथ श्रीदुर्गा देवी के निमित्त पुष्पवा-
टिका में गई जहां पर माधवानलबीणलिये पंचमरागका अला
प करताथा वह नवयौबना पूजनकरनेके पश्चात् उस वाटिका
के मनोहर पुष्पोंकी सुगंध लेती हुई उस स्थानमें गई जहां मा-
धवानल बीण बजा रहाथा उसके स्वरूप को देख लीलावती

मूर्च्छितहो भूमिपर गिर पड़ी जब वह सचेत हुई तब माधवानल को भी उसी अवस्थामें (मूर्च्छित) देखा यह चरित्र देख लीलावती की सहेलियां उसे समझा बुझा घरलाईं परन्तु वह ऐसीका मवश्य होगई थी कि अपनी सहेली सुमुखीको भेज माधवानलको बुलाया और दोनों में परस्पर संभाग हुआ पश्चात्माधवानल बहुकठिनाईसे उसे संतोषद घरआया और प्रतिदिन बीण बजाया करताथा जिसको सुननगरकी सबनारियां अति बिकलहो अपना सबकृत्य छोड़ उसका बीण सुनने को धावतीं थींनगर के निवासियों ने यह दशादेख राजाके पास जा प्रार्थना की कि माधवानलके कारण नगरकी यह अवस्थाहै राजा ने पुरबासियोंके बचनों को सुन माधवानल को बुलवाया और उसके गुण की परीक्षाले उसको प्रसन्नतापूर्वक बिदा किया और मनमें विचारा कि ऐसे गुणीजनको जो मैं देशसे निकाले देताहूं तो लोग मेरे न्यायपर हँसेंगे और जो इसे रहने देताहूं तो प्रजा बाराबाट हुईजातीहै पश्चात् राजाने अपनी प्रजाका हित विचार दूतके प्रति माधवानल से कहला भेजा कि हमाराराज छोड़ जाओ यह संदेशा सुन माधवानल एक तो लीलावतीके बिरहमें ब्याकुल थाही और दूसरे नृपकी यह आज्ञा पाय निराशहो देश भी छोड़दिया और बाँधोगढ़ की राहली और वहां जाय एकबागमें बटवृक्षके नीचे बिश्राम किया जिस वृक्ष पर एक सुआ रहताथा जो कि बड़ा प्रबल था वह सुआ बिरह ब्यथा की बातें माधवानल की सुन उपदेश दियाकरताथा और उसके चित्तकी वृत्ति को रोकता था इसीप्रकार उसवृक्ष के नीचेचातुर्मास ब्यतीतभयेतिसकेपश्चात्माधवनलने कामावतीनगरीकी राहली औरसुआनेभीअपनाघरत्यागमाधवानलका संगधरलिया उसनगरमें जाय एकतमोलीकोअपने सदृश देख वहां ठहरनेकाविचार किया जिसने बड़े आदर सत्कार पूर्वक उसको स्थान दिया और कुछकालपश्चात् ऐसा संयोग हुआ कि एकदिन माधवानलनेअ-

पना बीणाले राजा की सभामें जानेका विचार कियाजब ड्योढ़ी परपहुंचे तबड्योढ़ीदारने जानेसेरोका और कहाकिसभामें किसी को जाने की आज्ञा नहीं है और सभामें गायन प्रचार हो रहाथा जिसका शब्द सुन कर माधवानल ने कहा कि मृदंगीका जो पूर्वाभि मुखीहै उसका बायें हाथका अँगूठा मोमका है इसकारण से वह बेतालाबजाता है इसबात को सुन ड्योढ़ीदार ने राजा के पासजाय कह सुनाया कि एक ब्राह्मण बीणा लिये आया है और ऐसी बातें कहताहै यह सुन राजा ने माधवानलको बुलालाने की आज्ञादी माधवानलने राजा से यथोचित सन्मान पानेपर राजाने अपने गले से गजमुक्ताकी माला उतारमाधवानलको पहिरादिया और माधवानल राज्य सभा में ऐसा सुशोभित हुआ जैसे कि बगुलोंमें राजहंस शोभाको प्राप्तहोता है और कामकंदला और माधवानल की जब चार आखेंहुईं तबतो दोनों आपुसमें मोहित होगये तिस पश्चात् गाय न का प्रारम्भ हुआ और कामकंदला अपनी कलायें तथा नृत्य गान आदि ऐसी दिखातीभई कि जिसका वर्णन आप लोगोंको ग्रन्थ देखने से विदित होगा फिर क्या हुआ कि एक ऐसी अद्भुत कला दृष्टिगोचर हुई कि उस नटीके नाचते नाचते एक भ्रमर उसके कुच पर आबैठा और उस भ्रमर ने उस स्थान पर ऐसा काटा कि वह पीड़ा के क्लेशमें घबरागई परन्तु बेबश उसने यहबिचारा कियदि इसको हाथसे छुटाती हूं तो भाव नष्ट होताहै और जो पांव रोकतीहूं तो तालसे बेताल होजाती हूं उसने ऐसी उक्तिकी कि अपने सर्ब अंग की बायु बटोर उसी स्थान द्वारा ऐसी बायुछोड़ी कि वह भ्रमर उड़गया इसबात को जितने सभासदथे किसी नेन लखपाया केवल माधवानल ने यह चरित्र देख प्रसन्न हो वह गजमुक्ता का हार अपने गलेसे उतार नटीकेगले(डार)छेड़ बीणाका तार। करि रागको प्रचार ॥ गायो तानकोसम्हार । भयोचकित दरबार ॥ जाको नाहिं पारा वार। ऐसेगुणकेअगार॥

देखरीझी वह नार। बाढ़ो माधवा को प्यार ॥ या ग्रन्थ मति-
सार है तिस पश्चात् माधवानल ने वही पंचमराग भूलकरगा-
या जिसके कारण पुहुपावती देश को छोड़ना पड़ाथा जिस-
को सुनि नृप सहित सबसभासद वा कामकंदला मोहितहो चि-
त्र की भांति रहगये माधवानलने एक ऐसा राग गाया कि जि-
ससे जो मसालें जलती थीं सो बुझ गईं सो इसको कामकंदला
ने दीपक राग गाकर मसालें जलादीं फिर उसने घननाद गा-
कर मेघों को आकाशमें आच्छादित कर दिये इसराग का शब्द
सुनि वहनटी अति क्रोधकर सारङ्गनाद गाने लगी जिस से
जो मेघ घिर आये थे सो खुल गये इसके अनन्तर उस बिप्रने
क्रोध कर ऐसाराग गाया कि जिसका शब्द सुनि कामकंदला
स्वर वा ताल भूल बेताल हो बिकल भई और मूर्च्छित हो थर
थर कांपने लगी उस नटीकी यहदशा देख राजाकामसेन अति-
क्रोधित होकर विप्र से ऐसे कटुबचन बोला हे द्विज तुझको अप
ने गुणका ऐसा अभिमान आया जिससे मेरी सभामें विघ्नडा-
ला और मेरा दिया हुआ पारितोषिकतूने मेरे सन्मुख नटी को
दे दिया और रंक का रंकही रहगया तब बिप्रने कहा इसकी क-
ला के ऊपर मैंने आपकी शंका मान अपना मस्तक नहीं दि-
या वो यदि मैं देदेता तोभी कुछभी न था ऐसी २ बहुतबार्त्ताहुईं
पश्चात् उसनृपने यही कहा कि हमारा राज्य छोड़अभी चले-
जाव तब बिप्रने वहां से उठ अपनी राहली और वहां जब काम
कंदला ने नृपसे बिदाघरजाने की मांगी और आकर अपनी
सहेली कोबिन्दा को भेजकर कहा कि हे बिप्र आज आप मेरे
गृहमें प्रवेश कर मुझे पवित्र कीजिये ऐसा कंदला का संदेशा
सुनि बिप्र अति प्रसन्नहो को बिंदा के साथहोलिया और दोनों
चलते २ कामकंदला के स्थान को पहुंचे कामकंदलाने बिप्रका
बहुत सत्कार किया और प्रीति पूर्वकदोनों को भोग बिलासकर
ते २ दिन ११ व्यतीत होगये एक दिन बिप्र ने शोचा कि य-

दि कभी राजा सुनेगा कि माधवा नल कामकंदलाके भवनमें है तो निस्सदंह मुझे मरवाडालेगा ऐसा बिचारकर मनमें धीरज धर सोते समय कामकंदला के हाथ में राजा केभयकेकारण अपने निर्बाह न होने का बृत्तांत सब लिखकर उसको वैसेही अवस्थामें छोड़ वहां से बिदाली और चलते चलते राजाके नगर से तीन कोसनदीकेकिनारे जा बिश्राम किया तदनन्तर सुआ से बोला हे मित्र अब कहां चलूं और किससे अपनी बिरह पीर का वृत्तांत सुनाऊं कि जो मेरे इस अपार दुःखको दूर करेगा इतना सुन शुक बोला कि हे द्विजोत्तम अब आप उज्जैन नगरी को चलिये वहांका राजा बीर बिक्रमादित्यअति धर्मज्ञपरोपकारी और सत्यब्रतीहै वही राजा आपकी पीर को हरेगा शुक की ऐसीबाणी सुनकर माधवानलने उज्जैन नगरी की राहली और वहां पहुंच श्रीकालेश्वरके मंदिर में डेरा किया और दोघड़ी बिश्रामकरने के पश्चात् माधवानल ने सुआ से अपनी प्राणप्यारी कंदला का वृत्तांत वर्णन करनेलगा कि हे प्रवीनमैं कंदला को सोती हुई अवस्थामें छोड़ चलाआयाहूं कहीं ऐसा न हो कि वह जागने परमुझे न पाय प्राण त्यागदे तब शुक बोला कियदिआज्ञा हो तो मैं जाऊं और कामकंदला की कुशल क्षेमका संदेशा लेऔरउसे संतोष दे लौट आऊंगा यह सुनि बिप्र ने एकपत्र लिखि सुआके गले में बांध दिया सुआ वहां से उड़ाऔर चार दिवस मार्ग में व्यतीतकर पांचवें दिवस कामकंदला केबाग में एक वृक्ष पर जा बैठा और कामकंदला बाग में अपनी सहेलियों के साथ माधवानल के बिरह की बातें कर रही थी कि इतनेमें सुआ वृक्षसे नीचे उतर धीरे धीरे उसी स्थान पर जापहुंचा कंदला ने उसशुक के गले में पत्रबँधा देख उसे पकड़अपनी गोदमें बड़ी प्रीति से बैठा लिया और गले से पत्र छोरकेप्रीति पूर्वक पढ़ने लगी और सहेलीको आज्ञा दी कि शुक के लिये थोड़ा भोजन लावो वह तुरन्त उठ भोजन लाई जिसकोसु-

आने हर्षपूर्वक गृहण किया पश्चात् शुक माधवानल के उज्जैन नगरी पहुंचने तथा बिरह अवस्थामें व्याकुल रहने का संदेशा सम्पूर्ण वर्णन किया और उसे सब प्रकार से संतोषदे बिदा मांगी तदनन्तर कंदला ने भी पत्र का पलटा लिख उसी प्रकार सुआके गले में बाँध उसे बिदादी और सुआ उज्जैन नगरीकी राहली और चार दिवसमार्गमें व्यतीतकर पांचवें दिवसमाधवा को आय प्रणाम किया माधवाने पत्र पाय शुक को आशीर्वाद दिया और कंदला के क्षेम कुशल का वृत्तांत पूंछकहनेलगा कि हे मित्र अब कैसा यत्न कियाजावे कि जिसमें वह प्राण प्यारी प्राप्तहो तदपश्चात् सुआ बोला कि हे द्विजदेव इस नगरी का राजा बीर बिक्रमादित्य नित्य प्रातःकाल अस्नानकर इस मंदिरमें महादेवजी की पूजाकरने को आताहै यदि तुम राजासे भेंट करोगे तो तुम्हारा काम निस्संदेह सिद्ध होगा इसप्रकार शुक की बाणी सुन माधवानल महादेवजी के मंदिर में गया और बहुप्रकार से अस्तुति कर बोला हे नाथ अब आप के सिवाय इस संसार में मेरा दुःख हरनेवाला कोई नहीं है इससे मेरी सहाय कीजिये मैं आपकी शरणागतहूं इसप्रकार प्रार्थना कर बाहर आया और खरीमट्टी ले मठ में यह दोहा लिखा ॥

दो॰ धनगुण बिद्यारूप के हेती लोग अनेक ।
जो गरीब पर हित करै तेनहिं लाहियतु एक ॥

इसप्रकार दोहालिख अपने डेरेमेंआयादूसरेदिन राजाप्रातःकालअस्नानकरि महादेवजी के मंदिर में आया और मंदिरके द्वारपर लिखाहुआ दोहा पढ़ चिन्ता करने लगा कि इसदोहेकेलिखने वाले का कुछ हेतु है ऐसा बिचारकर दोहाका पलटा लिखा॥

दो॰ दोहाको पलटो लिखों दर्द भरे नरईश ।
देत एकबिक्रमसुन्यो काज पराये शीश ॥

ऐसा दोहाका पलटा लिख तथा महादेव का दर्शन ले राजा अपने घर आया और यहांमाधवा नल अन्य दिवस महादेवजी

के मंदिरमें गया और अपने दोहेके पलटे में लिखाहुआ दोहापढ़ औरउसके बदलेमें यहगाथानीचेलिखचला गया(गाथा)कूताकि अंग पुकारं। जौनराम अवधेश पुकारं॥बिछुरं दर्द अपारं। सहि· जानत माधवबिरही॥ अन्य दिवस राजा प्रातःकाल शौच आदि नित्य क्रिया कर मंदिर को पधारे और गाथा पढ़ने के पश्चात् अपने बलकी बीरता लिखचले आये और अपनी सभा में जाय राज्य सिंहासन पर बिराजमान हुए और मंत्री तथा दरबार के सब सभासदों के आगे मंदिरका सम्पूर्ण वृत्तान्त बर्णनकिया और यह प्रतिज्ञा की कि ॥

दो॰ गाजपरै ता राज्य में मुखताको जरिजाय।
बिरही दुख टारे बिना अन्नपान जो खाय ॥

ऐसाकठिन प्रण राजाने ठान सब राज्य भरमें डौंडी पिटवाई परंतुबिरही नरका शोधकहीं न मिला तिस पश्चात् राजा सभामें बीरारख बोला कि जोकोईउसबिरही नलको खोजिकर ढूंढ़लावेगा मैं उसेबहुतपारितोषिक दूंगा उसीसमय एकबारबधूने बीराउठाया और राजाकेसन्मुख हाथजोड़ बोली कि महाराज मैं बिरहीनरका खोजकरलाऊंगी यह कह राजासेबिदामांग अपनेगृहकोगई और सोरह शृंगार बारह आभूषण धारण कर बीणा बजाती भैरवीरा ग का अलाप करती हुई मंदिरके समीपहो जा निकली जिसका शब्द सुन माधवानल उसके समीप आया और गौरी राग के- समय भैरवी गाते हुये सुनि मनमें कंदला का धोखा खा मूर्च्छि त हो पृथ्वी पर गिर कंदला २ पुकारने लगा उसी समय बार- बधू को निश्चय हुआ कि हो न हो यही बियोगी है तब हाथ पकड़ उसे उठाय हृदयसे लगाय उसका सब वृत्तांत सुनि वहां से बिदाहो राजाके समीप आ इस प्रकार बोली कि महाराज वह बियोगी महाकालेश्वर के मंदिरमें ठहरा है यह सुनि राजाने रथ भेजा माधवानल को बुलवाया जिसपर चढ़ माधवानल- राजाकी सभामें आया माधवानलको देख राजाने सिंहासन से

उठप्रणाम किया और माधवानल ने भी आशीर्वाद दिया और राजासे यथोचित सन्मान पाय स्थितहुआ इसके उपरांत राजाने नाम गांव इत्यादि पूंछ आनेका कारण पूंछा तब माधवानलने अपना आद्योपांत वृत्तांत सब वर्णन करदिया तिसको सुन नृपति ने बहुप्रकार माधवा को समझाया पर उसके मनमें एक न भाया अंतमें राजा बोला फिर द्विज देव हमारे राज्य भर में अथवा रनिवासमें जो सुकुमारी तेरेचित्तमें चुभे मांग ले और इस के सिवाय मैं ग्वालियर का राज्य भी समर्पित करूंगा उसे ले सुख भोग कर परन्तु माधव ने कुछ स्वीकार न किया निदान-माधव के ऐसेबचन सुन राजा क्रोधितहो सेनापति को सेनासजने की आज्ञादी और ज्योतिषियोंसे शुभदिन पूंछ कामावती-नगरीका पयानकिया और कुछ दिवसमार्गमें व्यतीतकर कामावतीके निकट मदनावती के बागमें डेरा करता भया पश्चात् कामकंदला के प्रीति की परीक्षा लेने के हेतु आपने वैद्य रूपधारण कर कामावती नगरीकी राहली और जब राजा के अवासके समीप कामकंदला के द्वारेपर पहुंचे तब बैद्योंकी भांति पुकार करने लगे उसशब्द को सुनि कामकंदला की दासी भीतरसे बाहरनिकल आई और उस बैद्यराज को पुकार जहां कंदला बिरह बेदनासे ग्रसित पर्यंकपर पौढ़ी थी वहां लेगई और कामकंदला भली भांति आसनदे चिकित्सा तथा बिरह बिथा का हाल पूंछने लगी बैद्य ने उसकी नाड़ीकी परीक्षा ले रोगोंके लक्षणों का वर्णन किया परन्तु उसको इसरोगोंमें लेशमात्र भी ग्रसितन पाया और कहने लगा कि मुझे ऐसा निश्चय होता है कि हो न हो बिरह बिथाही के कारण तुम्हारी यह दशा हुई है तबकामकंदला की सखी बोली कि महाराज आपने इनके रोग की ठीक परीक्षा की इनके इसरोगमें ग्रसित होने का यह हेतु है कि कुछ दिनहुए कि इसनगरी में एक माधवानाम का ब्राह्मण आयाथा कि जिसकी प्रीति के कारण यह कंदला ऐसी बिरही अव-

स्थाको प्राप्त हुई तत्पश्चात् दोनों की प्रीति का आद्योपान्त बैद्यजी के सन्मुख प्रगट कर दिया और बोली कि उस पुरुषका शोध अभी उज्जैनका लगता है तब बैद्यने दोनों की ऐसी परस्पर प्रीति देख मनमें धन्यबाद दिया और बोला कि हां उस माधवानलब्राह्मणको मैंने उज्जैन नगरीमें अति दुर्बल देह और बिरहके कारण अतिजीर्ण अवस्थामें देखाथा परन्तु थोड़ेदिनहुए कि वह ब्राह्मण तो नाश को प्राप्त होगया बैद्यके ऐसे कठोर बचन ज्योहींकंदलाने सुने त्योहीं हाय मित्र माधव ऐसाबचन कहप्राण त्याग दिया जब राजाने कंदलाकी ऐसी दशा देखी तब अति चकृत और व्याकुलहो पश्चात्तापकर बोला कि निरअपराधमैंने झूठ बोल इसबाला (कामकंदला) का प्राण लिया और पापका भागी बना इसके पश्चात् उसकी दासियां भी हाहाखाय पुकारने लगीं तब राजा (बैद्य) ने उनको धीरजदे समझाया कि मेरेपास तो सातादिन के मुए हुये प्राणी के जिलाने की औषधि है तुमक्यों ऐसा पश्चात्ताप करती हो बैद्य के ऐसे बचन सुनि दासियाँ चुप होरहीं और राजा उनसबको इसप्रकार उपदेशकरता भया कि जबतक हम औषधि लेकर न लौट आवें तबतक तुम इसबाला को इसी अवस्थामें रखना और मेरी बाटचार पहर ताईं हेरना जो मैं आकर न जिलाऊं गातो इसकी हत्या मुझे लगेगी ऐसा कह औषधी लानेके निमित्तबिदाले मनमें अति गलानि करता हुआ राजा बैद्य निजस्थान को आताभया और आप तो हँसकर माधवानल को समीप बुलायबोला हेद्विज मैं कामावती नगरी में कामकंदला के देखने के अर्थगयाथा पर वहां जानेपर यह चरित्र सुनने में आया कि कामकंदला तो कुछ दिन व्यतीत हुये कि मृत्यु बशहोगई राजाके ऐसे बचन सुन माधवाने भी कंदला कंदला पुकार तन त्याग दिया यह दशा देख राजा भी चकृत होता भया और मनमें चिन्ता करने लगा कि मैंने बृथा झूठ बोल दो जीव काघा-

त किया और अयश सहितजीने से तो मरना भलाहै ऐसा वि
चार राजा ने मंत्रिनको बुलवाया और चन्दनकी चिता बनाने
की आज्ञादी मंत्रियों ने माधवानल के देह त्याग करने का हे
तु पूंछा तब राजा ने सब वृत्तांत वर्णन कर कहा कि मैंने वृथा
दोनों के प्राणघात किये इससे मैंभी विप्रके साथ चितामें दग्ध
होऊंगा और तुमप्रजा पालनकरो राजाके मुखसे ऐसे वचन सु-
नि मंत्रीने हाथ जोड़ बहुप्रकार समझाया पर राजा ने एकनमा
ना और यह वृत्तांत दलमें प्रकाशित हो गया अन्तमें राजा ने-
चिता सजवाय माधवानल की लाश को उसी पर रखआय
चितापर चढ़ने लगा कि उसी समय एक ब्राह्मण भी आय
पुकार कर कहने लगा कि हे राजा विक्रमादित्य आजप्रातः का-
लतू मेरा मुखदेखकर उठाथा इससे तुझे यहदोषप्राप्तहुआ इससे
मैं भी तुम्हारेसाथ जलूंगा जिससे यह मेरा मुख दूसरे की हानिन
करै यहसुनराजा ने ब्राह्मण को उत्तरदिया कि हे द्विजवर तुमयह
वृथा चिंता क्यों करतेहो यहकह ज्योंहीं राजा चिता पर चढ़ने-
लगा त्योंहीं बैतालआय प्रकट हुआ और राजा का हाथपकड़-
चितासे उतारा और सब वृत्तान्त (माधवनलकामकंदलाकेमृत्यु-
का)सुनराजाको धन्यवाददेने लगा जिसके पश्चात् बैतालबोला
कि आपयहां से सबको बिदाकीजिये और मैं एकांत में माधवा
नलको अभी जिलाये देताहूं यहसुनिराजाने सबको वहां सेजा-
नेकी आज्ञादी और एकान्त होनेपर बैतालने शेश सुतको आ-
कर्षण किया आकर्षतेही शेशसुत (नाग) आयउपस्थित हुए
और बैताल ने उनको सब प्रसंग सुनाया जिसको सुनिशेशसुत
ने राजा की प्रशंसा की और दोबूंद अमृतलाकर बैताल को दे
आयअंतरध्यान होगये और बैतालने वह अमृतले माधवाके स
मीप जाउसके मुंहमें छोड़ा ज्योंहीं कंठमें बूंद प्रवेशहुआ त्योंहीं
माधवानल हायकंदला कहउठबैठा और बैतालद्विजको लेराजा-
के समीप आया और राजाने अतिप्रसन्नहोकर माधवाको हृदय

से लगाया और सब वृत्तान्त सुनाया जिसके पश्चात् राजा ने बैतालसे दूसरी बूंदअमृतकी लेकामावतीनगरी को सिधारा और कामकंदला के भवन में (जहांकिवह मृतकपड़ीथी)गया और उसके मुहमें अमृत छोड़ा ज्योंहीं अमृतकंठमें प्रवेशकिया त्योंहीं हायमित्र माधवाकह कंदला उठ बैठी तबराजाने माधवानलका चरित्रबिस्तारपूर्वक बर्णन करि अपने सबसैन्य सहित चढ़आने का वृत्तान्त कहसुनाया निदान कंदला के(प्रीति)अथवा पतिब्रतकी परीक्षालेने के हेतु राजाने उसके गले में बाहँडालरसमय बचन कहे जिसका प्रत्युत्तर कंदला नेयहदिया कि आपतो ब्राह्मणकेदासहो और मैं ब्राह्मण की दासीहूं इससे आपको ऐसेब्यंगबचन मुझसे न बोलना चाहिये तब राजा बोला कि जो कोई गणिका को द्रब्यदेवे वो उसीकीदासी होजातीहै तब कंदलाने कहाकि मैं वोगणिका नहींहों मैं तो सिर्फ माधवानल के सिवाय और दूसरे को अपनी बाँह नहींदी और एकसमय ऐसाभीहुआ था कि एक दिन कामसेन राजा ने आकर मुझसे प्रीति करना चाहा और ज्योहीं मेरेहृदयमें हाथलगाया त्योंहीं उसके हाथ जलबलगये तबसे फिर वो मेरे नृत्यकरनेके सिवाय और कोई इच्छा नहींकरता और मैं आपको अपने पतिब्रतकी परीक्षा देतीहूं ऐसा कहकामकंदला ने राजाको अपने पतिब्रतकी परीक्षा के हेतु अग्निको दाहिने हाथ में रखकर बोली कि आप डेरे में जाकर देखिये कि माधवानलके बायें हाथमें छाले पड़े यानहीं यदि पड़े होवेंतोजानलेना कि हमारी उसकी प्रीतिमें किसी प्रकार का अंतरनहीं है तबराजा ने कंदला को ऐसा दृढ़ब्रत देखवहांसे बिदा हो डेरामेंआय माधवाको बुलाय उसके बायें हाथको देखातोयथार्थ छाला पड़ाथा तिसके पश्चात् दोनों की दृढ़ प्रीति देखकर सब सभासदोंको बैताल सहित बुलाकर कहा कि आपलोग नृपकामसेनके पासजाकर मेरा यहसंदेश कहना किया तोआप कंदला देवेंयायुद्ध ठानें यहआज्ञा नृपकी पाय बैताल सचिव सहितनृप

कामसेन की सभा में जाय प्रणामकर अपने आने का कारण
सुनाय तथा राजा बिक्रमादित्य का संदेशा कह स्थित भये और
माधवानल कामकंदला की प्रीतिमें ब्याकुलहो राजाके पासजा
उनसे कौलकराय अपना आद्योपान्त वृत्तान्त सुनाय और राजा
बिक्रमादित्यको यहांतक बुलालानेका कारण बैतालने बर्णन
किया जिसको सुनि नृप कामसेन क्रोधित होकर बोला कि हम
कंदला को न देवेंगे परन्तु युद्ध ठानेंगे ऐसा राजा का प्रति उत्तर
सुनिमंत्री सहित बैताल चले आये और राजा बिक्रमादित्यको
सभाका वृत्तान्त कहसुनाया यहसुनि राजा(बिक्रमादित्य)प्रातः-
कालउठसेनापति को बुलासैन्य सजने की आज्ञा देताभया नि-
दान सब सैन्य सजवाय आपरथपर आरूढ़ होवहांसे कूचकर
रंगभूमि में जहां कि कामसेन राजा का दलजोयुद्ध करने को उ-
द्यतथा पहुंचा और दोनों दलके सन्मुख होनेपर युद्धकाप्रारंभ
हुआ और ऐसाघोर युद्धहुआ कि सहस्रों बीर नाशको प्राप्तहुए
निदान अन्त में ऐसा चरित्र हुआ कि बिक्रमादित्यके पास एक
योधा रनजोर सिंहनामकबड़ाशूरबीर था और कामसेनके पासभी
वैसही एकयोधा मेढ़ामल्लनामकथा दोनोंने (रनजोरसिंह, मेढ़ा-
मल्ल)आपुसमें ऐसी पैजखैंची कि हम तुमदोनों में जो जीते उ-
सीकानृप बिजय पावै ऐसीपैज दोनोंने करि अपने २ राजाके
पास अपनी २ खैंची पैजोंका बर्णन किया जिसको सुनिकाम-
सेन ने यह प्रतिज्ञा पत्र लिखदिया किजो मेरायोधा मेढ़ामल्ल रन
में पराजय होवेगा तो मैं छत्र सहित कंदला देदेऊंगा और इ-
सीप्रकार बिक्रमादित्यने लिखदिया कि जो मेरायोधारनजोरसिंह
रणमें पराजय होवेगा तोमैंभी चत्रसिंहासनदे उज्जैन नगरीको
चलाजाऊंगा इसतरहके प्रतिज्ञापत्र दोनों बीरोंने आपुसमें बद-
लकर युद्ध का ठान ठाना और ऐसा महाकराल युद्ध हुआ कि
जिसका सम्पूर्ण बर्णन इस ग्रन्थके अवलोकन करने से बिदित
होवेगा अन्तमें रनजोर सिंहने मेढ़ामल्लको परास्त करिआपराजा

(बिक्रमादित्य)केपासजाय प्रणामकिया और यहां राजाकाम-
सेन ने मेढ़ामल्लको युद्धमें जूझाहुआ सुनि अपने मंत्रीको बि-
क्रमादित्यके पास भेजा और सम्मातिके हेतुनिवेदनकरने कीआ-
ज्ञादे बिदाकिया मंत्रीको आयाजान बिक्रमादित्य ने आदरपूर्ब-
कउसका सन्मान करि और उसका संदेशा सुनि (सम्मति)बड़े
आनन्द से स्वीकार करमंत्री को बिदादी तदनन्तर मंत्रीवहांसे
बिदाहोकर कामसेनके पास आसम्मति स्वीकारका वृत्तान्तसु-
नायाजिसको सुनि कामसेन ने बिक्रमादित्य के पास आनेकी
तय्यारी की और पहुंचने के पहिलेबिक्रमादित्य ने आगे बढ़कर
मिलाप किया और दोनों डेरामें आय एक सिंहासन पर बिराज-
मानहो हुलास सहित बार्त्ताकरनेलगे और राजा कामसेन
अपनी ढिठाई की क्षमामांगी जिसके पश्चात् कामसेनने माधवा-
नलकोबुला अपने सबक्रोधको त्याग भेंटकी और कुशल क्षेम
आपुसमेंपूछी फिर कामसेन राजाने बिक्रमादित्य से बिनयकी
कि महाराज आपचलकर मेरा भवन पवित्र कीजिये जिसके
ऐसे नम्रबचन सुनि बिक्रमादित्य माधवानल सहित मंत्रियों
को ले रथपर चढ़ कामावतीको गवन किया और वहां
पहुंच अवधनाथके दर्शन करि सहस्र गऊ ब्राह्मणों को
दानदे पुनि वहां से चल राजा के भवन में प्रवेशकिया और रा-
जा कामसेन बिक्रमादित्य को दरबार में लेजाकर प्रीतिपूर्बक
सत्कार कर दोनों नरेश सिंहासन पर बिराजमानहुये और प्रीति
सहित वार्ता होने के पश्चात् कामसेन ने कंदला के बुलाखाने
की आज्ञादी और दूतने ज्योंहीं कंदला से राजसभा का सम्पू-
र्णप्रसंग तथा राजा का संदेशा सुनाया त्योंहीं उसके बामांग
फरकने लगे और अपनी अनुचरियोंको बुलाय राजसभामें
साथ चलने के लिये बोली यह सुनिवे सखियां दौड़ बस्त्रआ-
भूषणले आईं और कंदला से शृंगार करने के लिये कहापरन्तु
उसने प्रीतम के मिलाप में देर होने के कारण शृंगार न किया

और सखियों को साथले राजभवन में जा प्रवेश किया जब कंदला दरबार के समीप जापहुंची तब एकाएकी माधवानल की दृष्टि कंदला पर तथा कंदला की माधवपर पड़तेही दोनों बाजूसेअपने २ हाथपसार और सर्बलज्जात्याग दोनों हियेसे लग भेटकरनेलगे और दोनों की यहदशा देखसखियों ने आउनको न्यारा किया पुनिदोनों मिलराजा के पासजा दोनों नरेशोंको अंजलिजोर स्तुति कर आशीर्बाद दिया जिसके अनन्तर दोनोंराजोंने सम्मतिकर माधवानल कामकंदला को बनारस बाराणसीका राज्य दिया और बहुतसा हयगय रत्नादि आभूषण दे उनकोजाने की आज्ञा दी जिसके अनन्तर राजा कामसेनराजा बिक्रमादित्य को आतिथ्य और सत्कारसे प्रसन्न करताभया और राजा बिक्रमादित्य ने भी अपना प्रणपालराजा की आतिथ्य स्वीकर की और कामसेनकी प्रीति के कारण कुछदिवसबिक्रमादित्य को कामावती में बास करना पड़ा और यहां जब माधवानल कामकंदला दोनों अपने भवन में आये तो ब्राह्मणों को बुलाय बहुतसा दानदिया और दास दासियों को भी बहुत सा पारितोषिकदे बिदा किया और दोनों सुखपूर्बक बिहार करने लगे कुछकाल सुख से भोग पुनि एक दिवस माधवानलने अपनीप्यारी लीलावती को स्वप्न में देखा कि बिरह ब्यथा में बहुतपीड़ित है तो हायप्यारी २ पुकार पर्यंक से नीचे गिरपड़ा माधव के गिरने का शब्द सुनि कंदलाभी अकुलाउठी ज्योंहीं किमाधव को ब्याकुल दशा में पड़ाहुआ देखात्योंहींहायहाय कह उठकर माधव को सचेतकिया और उसी समय सखियन सहित माधवानल से बिहाल होने काकारण पूछनेलगीतब माधवने स्वप्नहोने तथापुहु पावतीनगरीमें लीलावतीकी प्रीति होने का सम्पूर्ण वृत्तान्त कहसुनाया तिसको सुनिकंदला ने रात्रितो उसी अवस्था में बिताई और प्रात होतेही राजा बिक्रमादित्यके समीप जा बिनयपूर्बक माधवानल को रात्रिमें ली-

लावती को स्वप्न में देखने के कारण बिरहवंत होना तथा पहु-
पावती नगरी में माधवानल और लीलावती की प्रीति होनेका
सम्पूर्ण वृत्तान्त कहती भई जिसको सुनि राजा बिक्रमादित्य
ने राजा कामसेन तथा माधवानल को बुलवाया और कामसे-
नके सन्मुख माधवानल से लीलावती का सम्पूर्ण हालसुनाया
इसके उपरांत दोनों राजाओं ने अपनी २ सैन्य सजवाय पहु-
पावती नगरी को पयान किया और कुछदिवस मार्ग में व्यतीत
कर पहुपावती नगरी के निकट डेरा किया इनके आनेसे पहु-
पावती नगरी में पुरबासियों में चरचा फैली कि जिसब्राह्मणको
देशनिकाला दिया था सोअब वह ब्राह्मण कामावती तथा उ-
ज्जैनपतीको साथले आया है और जब यह चरित्र लीलावती
की सुमुखी सखी को बिदित हुआ तो उसने भी आय लीला-
वती से वृत्तान्त प्रगट किया पश्चात् उसे पंचखंडा में लेजाय
माधव को बताय और राजा कामसेन वा बिक्रमादित्यकी से-
न्यको बतलाती भई अब राजा बिक्रमादित्य के डेरेका वृत्ता-
न्त सुनिये किजब राजा सब से निश्चिंत हुआ तब माधवानल
और आप कुछ सवार साथले रथपर चढ़पहुपावतीकी शोभा
देखने के निमित्त उसीओर चला और चारों ओर से बागोंतड़ा-
गोंकी शोभा देखता हुआ चौक बजार में पहुंचा और वहां से
राजभवन और लीलावती के निवास स्थानकी शोभा देखता
हुआ आगे बढ़ा कि इतने में एक दूतने आय हाथ जोड़ यह
बिनयकी कि हे नरनाथ आपकी भेटके हेतु राजा गोबिंदचंद
आते हैं ऐसा सुनतेही राजा बिक्रमादित्यने वहां पर तंबूतान-
ने की आज्ञा की और तुरंतही डेरा खड़ा कर उसे सबप्रकार से
सुशोभित किया कि इतने में राजा गोबिंदचंद भी उपस्थित
हुये और राजा बिक्रमादित्यने उनकी आगत स्वागतकर हाथ
मिलाय सिंहासनपर बिराजमान किया पीछे आपभी सिंहासन
परबैठगये पश्चात् गोबिंदचंद ने सबप्रकार बिननीकर कहा कि

हेनरनाथ आपने बड़ी कृपा की जो घरबैठे मुझे दर्शनदिये और सनाथकिया इसके अनन्तर राजा बिक्रमादित्य ने माधवानल और लीलावती का सम्पूर्ण प्रसंग कहसुनाया और उसकाली-लावती के साथ स्वयम्बर रचने के लिये निवेदन किया जोसु-नि राजा गोबिंदचंद ने भी हर्षसहित स्वीकार किया और बि-दा ले अपने मंदिर की ओर सिधारा वहां से थोड़ीही दूर बढ़ने पर उससे अचानक कामावती के राजा (कामसेन) सेभेट हुई फिर रीत्यनुसार मिलाप कर राजा अपने महलोंमें आया और यहांराजा बिक्रमादित्यने भी कामसेन राजा वामाधवानलसहित अपने डेरेको सिधारे अब राजागोबिंदचंद का बृत्तांत सुनिये जबकि राजा दरबार में गया तब रघुदत्त को पास बुलाया और उससे सम्पूर्ण वृत्तान्त प्रगट कर माधवानल के साथही लीला-वती के स्वयम्बर रचनेके लिये आज्ञादी जिसको सुनकर रघुद-त्तने भी स्वीकार किया तिसके पश्चात् राजाने ज्योतिषियों व पंडितों को बुलवाया और ब्याहका मुहूर्त सुधवाया और री-त्यनुसार लग्न लिखवाकर नाऊ ब्राह्मण हाथ विद्यापति (माधवानलके पिता) के यहांभेजी यहां सबप्रसंगबिद्यापतिने जान कटुम्बियों वा सनेहियों को बुलाय लग्न रखवाय नाऊ ब्राह्मणों को तो बिदाकिया और आप राजा विक्रमादित्य के डेरे को जा राजा से सम्पूर्ण घरका प्रसंग कहता भया तिसको सुनि राजा अति हर्षितहुआ और माधवानल को बुलवाया तब-माधवानल ने ज्योंहीं पिता को देखा त्योंहीं चरणों में शीश नवाय बहुत भांति पिता से मिलभेट पिता पुत्र दोनों एकत्रहो राजाके सन्मुख बैठगये पश्चात् राजाने लग्न आई हुई जानकर बिद्यापतिको बहुतकुछ हयगय द्रब्य दे बोला कि आप अब जाय ब्याह की तैयारी कीजिये यहकह तुरंतहीमाध-वानल सहित कामकंदलाको रथपरचढ़ाय उनके साथ(बिद्याप-ति) बिदा किया और अपने सेनापतियों वा बहुत से योद्धाओं

को उनके पहुंचा आने की आज्ञा दी और जबकामकंदला स-
हितमाधवानल अपनेभवनके द्वारपरपहुंचेतो मातायुतसबनारि-
यों ने बहूबेटे को मुहचायन और टीकाकर गृहप्रवेश कराय ब-
हुप्रकार सुमंगल गीत गाती भई और कुल के सब रीत्यनुसा-
र नेग होने के पश्चात् जब अगवानी का दिन निकटआन प-
हुंचा तो बिद्यापतिराजा बिक्रमके डेरे में जाता भया और कामसे-
न सहित नेवतकर और बरात की शोभा प्रतिष्ठा के हेतु बिनय
कर अपने घरको आया अबरघुदत्त के यहांका वृत्तान्त सुनिये
कि राजा गोबिंदचन्दकी आज्ञानुसार घरके और प्रजाके सबछो-
टेबड़े आनन्द में कोई तो मंडफ बनाने और कोई सामग्रीआ-
दि इकट्ठी करने में मग्न थे और तय्यारीहोत करते में जबमंड-
वाका दिन आपहुंचा तबरघुदत्तने सबनगरका निमंत्रणकिया
और राजा गोबिंदचंद के पासजाय आगामी बरात के बिषय
का प्रसंग सुनायबोला कि अबआप कृपापूर्वक चलकर यहका-
र्य (कन्या का ब्याह) सिद्ध कीजिये ऐसे बचन सुनि राजा ने
तुरंतही कोतवाल को बुलवाया औरआज्ञादी कि नगरको भली
भांति सुशोभितकरो और आप रघुदत्तके यहांगये कोतवालने
राजाकी आज्ञानुसार उसनगरको केलाआदि बंदनवारोंसेअच्छी
भांति सजा और की रात्रिको रोशनी कराई जिस्से नगर जग-
मग २ होनेलगा इतने में माधवानल की बरात राजाकामसेन
और बिक्रमादित्य से सजीहुई बड़ी धूमधाम से रघुदत्तके यहां
चली जिसको नगरकी नारियां अपने २ अटानपर चढ़ीहुईदेखने
लगीं और जब कि बरात रघुदत्त के द्वारपर पहुंची तब आतश-
बाजी हुई और रघुदत्त ने दूल्हा के टीका में हयगय और बहुमू-
ल्य रत्न दिये और बरात को डेरा देताभया और भलीभांति जे-
वनारकराई और दूसरे दिवस माधवानल और लीलावती की
भांवरेपड़ी और रीत्यनुसार दहेज इत्यादिक नेगहोनेके पश्चात्
बरात के साथलीलावती की बिदाहुई जिसका बर्णन आपको

ग्रंथ के अवलोकन करने से प्रगट होगा माधवानल जबलीलावती को ब्याह अपने द्वारपर पहुंचा तो मातायुत सब नारियोंने दूल्हा वा दुलहिनि को ले गृहप्रवेश कराती भईं और राजा विक्रमादित्य वा कामसेन राजा गोविंदचंद वा विद्यापति वा रघुदत्त और माधवानल से मिलभेट और बिदाले अपने २ देशको सिधारे और माधवानल कामकंदला वा लीलावती सहित बिहार करनेलगे अब आप लोगोंको जानना चाहिये किइस भूमिकाके लिखनेका यह प्रयोजनहै कि एकबारइसको अवलोकन करनेसे आप लोगों को इस ग्रंथ का आशय बिदित होजायगा इसके बृत्तान्त की श्रेणी आपलोगों के ध्यान में आजायगी इसभूमिका को बिस्तार पूर्वक बर्णन करने का यहीप्रयोजनहै कि जब आपलोग इसग्रंथ के आशय को आद्योपान्त समझेंगे तब निस्संदेह इसके ग्राहक होंगे ॥

अब आपलोगों से मेरी यही प्रार्थनाहै कि यदि मुझ अल्पबुद्धि से कोई चूक किसीप्रकारकी बनपड़ी हो तो उसे क्षमाकरना सर्वथा उचितहै और मुझे जान पड़नेपर मैं उसे शुद्ध करासकूंगा इसग्रंथ की पूर्ती करने में मुझे बाबू बारुणी प्रसाद सेठ काशी निवासी और पंडित नाथूरामपाठक जबलपुर वासी से बहुत कुछ सहायता मिली ॥

आपका कृपाकांक्षी गणेश
प्रसाद वल्द कन्हैयालाल कुरेले
जिला जबलपुर मध्य प्रदेश
मिती बैशाखबदी २ संबत् १६५१
ता० २२-४-६४ ॥

———

इश्तिहार ।

प्रकटहो कि हमारे एक मित्र परमानन्द सुहाने के संग्रह किये हुये कई एकग्रन्थ छपकर तैयारहैं जिन महाशयों को देखने की अभिलाषा होतो नीचेलिखे पतेसे पत्रभेजें कीमत ठीकठीक ली· जायगी बेल्यू पेबलकरके पुस्तक उनकी सेवामें भेजी जायगी ।

पुस्तकोंके नाम ।

राजा दुष्यन्त वा शकुन्तला चरित्रभाषा । पतिब्रता माहात्म्य वा कौशिकब्राह्मण धर्मव्याध सम्वाद भाषा ॥ श्रीराधाकृष्ण हिं- डोला ॥ प्रभाती भक्तरत्नाकर॥ होलिका दहन फागोत्सव ॥ पा- वसकवित्त रत्नाकर ॥ किस्सानल दमयन्ती ॥ चन्द्रहास चरित्र चिन्तामणि ॥ परमानन्दकृत सर्वसार संग्रह प्रथम भाग—

श्रीराधाकृष्ण रासलीला प्रथमखण्ड पूर्वार्द्धभाग वा उत्तरार्द्ध भाग इसी छापेखाने में छपैगा ॥

पुस्तकमिलनेका ठिकाना ।

कन्हैयालाल गणेशप्रसाद कुरेले गुरहाई बाजार श्री बलदाऊजीके मंदिरके सामने ।

(जिलाजबलपुर)

(सी, पी,)

विरहवारीशमाधवानलकामकन्दला चरित्र भाषाका सूचीपत्र ॥

(बिरहबारीश माधवानलकामकंदलाचरित्रभाषा)

प्रथमखण्डपूर्वार्द्धभाग ॥

(प्रथमतरंग)

दो०। द्विरद बदन मंगल सदन बिघ्न हरण शिरताज ।
कृपा करण औ बुधिकरण नमोनमो गणराज ॥

छप्पय। तिलक भाल बनमाल अधिक राजत रसाल छबि ।
मोर मुकुट की लटक चटक वरणत अटकत कबि ॥ पीताम्बर फहरात मधुर मुसकात कपोलन । रच्यो रुचिर मुख पानतान गावत मृदुबोलन ॥ रतिकोटि काम अभिराम अतिदुष्ट निकंदन गिरिधरण । आनंद कंद ब्रजचंद प्रभु सुजयजयजय अशरण शरण ॥

सो० । गिरिजा रमण कृपाल बिघ्न हरण दूषणदरण ।
मोपरहोहु दयाल होहि ग्रन्थ भाषा सरल ॥
रुज नाशक रविदेव तिमिर हरण संशयशमन ।
नमो चरण तवदेव होइग्रन्थ पूरणसुभग ॥

दो० । जिहि भूधर करपर धरो सह्यो सबै जंजाल ।

तिहि चरणन पर शीश धरि बरणत कथारसाल ॥

छप्पय। प्रथमशाप कनबाल द्वितिय आरुण्ड खंडगन। पुनि कामावत देश बेस उज्जैन गवनमन॥ युद्धखंड पुनिगाह रुचिर शृंगार बखानो। पुनिबहुधा बनदेश नउम बरज्ञान बखानो॥ कही प्रीतिरीति गुनकी सिपत नृप बिक्रमको सरसयश। नौखंड माधवा कथामें नौरस बिद्या चतुर्दश॥

चौ०। सोसुनसुखचनदोषनकोई। यहगुणकथनकवित्तनहोई॥
मतवारो बिरही नर जैसो। उनमादी बालक पुनि तैसो॥
शिथिल शब्द थे सबही भाषत। अर्थ अनर्थ अर्थ नहिंराखत॥
सुनिसज्जन निश्चय सुखपावै। मूरख हँसि मूर्खता जनावै॥

दो०। जिनचाखो चाखो नहीं तेकिनपावै चोज।
बोधाचाहै सो बकै मतवारे की मौज॥

चौ०। पूरीलगी डगी फिरनाहीं। सुरतलेश महबूबामाहीं॥
बिछुरनपरी महाजनकावा। तब बिरही यहग्रन्थ बनावा॥

दो०। पत्रीछत्र बुँदेलको छत्रसिंह भुवमान।
दिलमाहिरजाहिर जगत दानयुद्ध सनमान॥
सिंह अमान समर्थ के भैयालहुरे आहिं।
बुद्धिसेन चितचैनयुत सेवों तिन्हें सदाहिं॥
कछुमोते खोटीभई छोटी यही बिचार।
डरमान्यो मान्यो मने तजो देश निरधार॥
इतराजी नरनाहकी बिछुरिगयो महबूब।
बिरह सिंह बिरही सुकबि गोताखायोखूब॥
बर्षएक परखत फिरो हर्षवंत महराज।
लह्यो दानसनमानपै चितनचह्यो सुखसाज॥
यह चिन्ता चितमेंबढ़ी चित मोहित घटकीन।
भौनरोन मृग छौनसो तौनकहा परवीन॥
बढ़िदाता बड़कुलसबै देखेनृपतिअनेक
त्याग पाय त्यागो तिन्हें चितमें चुभेनएक॥

कवित्त। देवगढ़चांदागढ़ामंडला उज्जैनरीवाँ साम्हर सिरोज अजमेरलौं निहारो जोई। पटना कुमाउ पैधि कुर्रा औ जहानाबाद सांकरी गलीलौं वारेभूप देखआया सोई॥ बोधाकबि प्राग औ बनारस सुहागपुर खुरदा निहार फिर मुरक्यो उदासहोई। बड़े बड़े दाता तेअड़ेन चित्तमें कहूं ठाकुर प्रवीन खेतसिंह सो लखोनकोई॥

दो०। जिकिरलगी महबूबसों फिर गुस्सामहराज।
बिनप्यारी होवे सोक्यों मोमनको सुखसाज॥
यो सुनि गुनि निजचित्तमें लिखिदियबालाएक।
रहिये खेत नरेश के चरण शरण तजटेक॥
तबहीं अपने चित्तमें सकुचौं सोच बनाय।
मेरे ऐसी बस्तु कह काहि मिलों लैजाय॥
बनतयहै बनिता कही वे राजा तुमदीन।
भाषाकर माधोकथा सोलै मिलो प्रवीन॥
यो सुन थिरह्वैहो कथी बिरहीकथा रसाल।
सुनरीझे खीजैं तजे खेतसिंह छितिपाल॥

छप्पय। बुन्देला बुन्देल खंड काशी कुल मंडन। गहिरवार पंचम नरेश अरि दल खंडन॥ तासु बंश छत्ता समर्थ परनापत बुझिये। तासु सुवनहिरदेश कुल्लआलम जस सुजिये॥ पुनि सभासिंह नरनाथ लखि बीर धीर हिरदेश सुव। तिहिपुत्र प्रबल कबि कल्पतरु खेतसिंह चिरंजीव हुव॥

दो०। नवयौवन बनिता निपुण शुभगुण सदन सुभान।
बूझत रसबस के बहुत प्रियपै प्रीति विधान॥
अतन कथन के कथन यो केलिकथन परवीन।
बिरहगिरह प्रेरित तहां बिरही पाते रस लीन॥
बाला बूझत बाल में सुन बालम सज्ञान।
कहा प्रीति की रीति है कीजै कत उनमान॥

(बिरहीवचन) अरे यारप्यारी कठिन करन कठिन नरकोय।

हारजीत दुखसुख यथा खेलजुवाको होय ॥

कबित्त। हैनामुशकिलएकरती नरसिंहकेशीशपै साग उबाहि-बो।दैबेको कोटिलौंदान अनेक महेशलौं योग खरे अवगाहिबो ॥ बोधा मुशकिल सोऊनहीं जो सतीहो सम्हारो शिखीनको दाहि-बो। एकही ठौरे अनेक मुशकिल यारीकर प्यारी सों प्रीति को निबाहिबो ॥ अतिछीन मृनालता के तारहूतै तिहि ऊपरपांवदै आवने हैं। सुइबेदतै हार सखी है तहां परतीत को टाड़ोलदाव-नेहैं ॥ कवि बोधा अनी घनीतेजहूतै चढ़िताप न चित्त डुगाव-नेहैं। यह प्रेमको पंथ कराल है जूतरवारकी धारपर धावने हैं ॥

चौ०। जोनर देहदेह देस्वामी। तौ सनेह जिन देय बिरानी ॥ जो सनेह करनी बशदेही। तौ जिन बिछुरै मीत सनेही ॥ जो कदापि बिछुरै मनभावन।तौजिय जाय चला तेहि दावन ॥ छातीफट दोटूक न होई। तौ किमि जानव बिछुराकोई ॥

कुंडलिया। जासोंनातो नेहको सोजिनबिछुरै राम। तासों बि-छुरन परतही परतरामसोंकाम ॥ परै रामसों काम काम संसारी छूटै। छूटैन वहप्रीति देह छूटै जो टूटै ॥ कहैं बोधा कबि कठिन पीर यह कहियेकासों। सोजिन बिछुरै रामनेह नातोहै जासों ॥

दो०। सहल बाहिबो सिंहशिर बोधा कबि किरवान।
प्रीति रीति निर्बाहिबो महिरम मुशकिल जान ॥

सो०। प्राणजाहि तजिदेह देह जाय पुनि खेहहो।
तौलौं निबाहै नेह पवतोमिलपियको मिलै ॥
ऐसी कहिये प्रीति प्रनपन पालै पीवसों।
जीवदेहकी रीति एक बृथाही एक बिन ॥
(वारावान्य)प्रीतिषरम कहिकौननिज पतिउपपतिगणिकक्की।
ये बिरही कहि तौन जो न होय सबते सरस ॥

दो०। होय मजाजीमें जहां इश्कहकीकी खूब।
सो सांचो ब्रजराज है जो मेरा महबूब ॥
आँख कान बुधि ज्ञान की प्रीति चारबिधिजान।

चारभांति जिनके यथा बिरही कहे बखान ॥
प्रथम पतंग कुरंग पुनि माधव नलकी प्रीति।
चौथे यारी ज्ञान मय भृंग कीटकी रीति ॥
चार प्रकार तियानकी रीझ कहत कबिलोग।
धन गुण रूपशरीर लघु कै पुनि दीरघ योग ॥
रूपवंत बश रूपके बिभौ बिभौ वशजान।
गुणके बश गुणवंततिय डीलडील उनमान ॥
अजब गजब मनकी लगन अनमिलहूलगजाय।
जैसी सूरज कमल सों शशिचकोरके भाय ॥
दीपक और पतंगकी आँख लगेकी प्रीति।
चुम्बक जड़लोहो कठिन समस्वभाव यहरीति ॥
प्रीति अनेकन में अधिक एकरीति यहहोय।
ज्यों कुरंगसुन रंगको तत्क्षणडारत खोय ॥

चौ०। भांति अनेकप्रीति जगमाहीं। सबहिसरसकोऊघटनाहीं ॥
जाको मनाबिरुझो है जामें। सुखी होतसोई लखितामें ॥
याते सुनयारीदिलदायक। कीजैप्रीति निबाहिबेलायक ॥
प्रीतिकरै पुनिऔरनिबाहै। सोआशिक सबजगतसराहै॥

दो०। जो वैसी जोड़ी मिलै प्रीति करौ सब कोय।
कामकन्दलासी त्रिया नरमाधो सो होय ॥

सवैया। रामसौनामको श्यामसोसुन्दर राधेसीबाम महेशसों योगी। कोबकतासम शेषप्रताप प्रभाकर यौंपुरहूत सो भोगी ॥ बोधाबड़ाई बड़ेबिधिसों रजनीपति सौंजग आननरोगी। देख्यो सुन्यो न कहूंकबहूं भयोमाधवानल सो और बियोगी ॥

(सुभानउवाच)

दो०। अरेपिय! मोजीय की शंकनिवारो येह।
कोमाधो कोकंदला कैसे जुरयोसनेह ॥

(बिरहीवाच्य) रतिपतिको रतिके सहित गोपिनदई शराप।
तिहि सजीवजगआय के पायो बिरहसंताप ॥

मदन भयोद्विज माधवा कामकंदला जोय।
बारों तिनकेइश्कपर योगी भोगी दोय ॥
(सुभान वाच्य) कागुनाह रतिनाह सों नाहभयो उहिवेक।
सो कहिये लहिकामजा पायो सजाअनेक ॥
(बिरहीवाच्य)
चौ०। सुनसुभानयारादिलदायक। माधोकथा न कथबेलायक॥
दुर्घट बिरहयार को पावै। बूड़तउछलत तनुगालिजावै॥
बिछुरनहोय मीतसों सोई। ऐसी कथा न कहिये कोई॥
मोहिं तोहिं बिछुरनपरजैहै। कथनी कौनकाम यह ऐहै॥
(सुभानवाच्य)
अहेमीत ऐसीनहिं भाखौ। कथिकै कथानखारिडतराखौ॥
जीवन मरण उचित वे दोऊ। प्रेमकथन चूकौ मतिकोऊ॥
दो०। जानत करबल हाथवह बिनामौत की नेत।
तदपिसनेही रागको पीठकुरंग न देत॥
इतिश्रीबिरहबारीशमाधवानलकामकन्दलाचरित्रभाषाबिरही सुभानसम्वादेशापखराडेमंगलाचरणप्रथमस्तरंगः॥ १॥

(दूसरातरंग)

(इश्ककारंजानाम)॥ अथ अगलाखराड बिरहीबचन॥
चौ०। सुनसुभान अबकथासुहाई। कालिदासबहुरुचिसहगाई॥
सिंहासनबत्तीसी माहीं। पुतरिन कहीभोजनृप पाहीं॥
पिंगलकहँ बैतालसुनाई। बोधा खेतासिंहसहगाई॥
रुचिरकथासुनइ दिलमाहिर। इश्कहकीकीहै जगजाहिर॥
दो०। सुनसुभान वृषभानकी सुताहेत ब्रजराज।
धरयो देहबसुदेवके गेह नेहतिहिकाज॥
गोकुल बसिघरमहरिके कीन्हेनि असुरनिपात।
गावत वेदपुराण सो कथालोक बिख्यात॥
(छन्दचौपैया)
ब्रजमेंबसब्रजनन्दघर कुंजनधेनुचराइ। बसि करकप अरसिकर

हरिको लखिदृगनअघाइ॥ अगणितहनतअसुरदिनप्रतिहरिबन उपबननबिहारें। भीरअहीरनकेसुतसंगीबहुरंगीबपुधारें॥लसत देख घनश्यामरूपको घनश्यामा तननीकी। नीलकंठकी कंठनीलता सोऊलख अतिफीकी। बरही पक्षसदा माथेपरताको मुकुटबिराजै। माथेपाग शिरपेंच हरितअतिमंदललितमनराजै॥ जगमगातछ-बि जटित जवाहिर पन्ननजेव जनाई। भाल तिलक शोभालखि भाल में केशरगंध सुहाई॥ भृकुटी भुवैंधनुष महँगंजन रंजन निकट लसी है। बेंदीललित शरदशशिमें जनुबूड़न जाहिबसी है॥ कारे अनियारे बड़वारे रतनारेदृगप्यारे॥ अलिखंजन मृग मीन कमलदल पानिपजलसुतवारे॥ मुकुरकपोल नासिकासु-कंठमें हैं कछु अधिक सुहाई। अधरसधर बिंबाफलवारे बिहँसन ताहिलजाई॥ दाड़िमबीचलसतलखिरदछबि पंचाननरवभारी। डाढ़ीलसत सुढारलालकी जैसीगोल सुपारी॥शालिकरामाशि-ला पुनि कहिये हिरणगर्भ अतिनीकी। चिम्बुकबिन्दु उपमाते लखिबेंदी रोरीकी ॥ फनिसम अयन पूंछसम जुलफैं मनमुक्तन बिचराजै। चूसतब्याल शरदशशिको जनु उभैअमीरसकाजै॥ बिहँसत परतहरत मनसबके कुवाँकपोलन माहीं। मनोकालिन्दी तीरनीर में भ्रमरी युगपर जाहीं ॥ कुंबुकंठसम कंठबिराजत निरखपरेवा हरषै। शुंडादण्डबाहु गिरिधरके भूमि भारजेकरषै॥ प्रफुलित अरुण कमल समकरलखि नखनख तावलिजैसी। जलसुत गजरा राजत तिनमें उपमा मिलत न ऐसी॥ उरसम शिला उदर कटिकेहरि नाभि बिउरसमगाई। दृगखंजन रोमा वलि ब्याली निकसिक्षुधितह्वैआई॥ डोलत लखिमुक्तानासा में गरुड़ पक्षके धोखे। उरकपाटका शोधिरही जनु कुकुमारन डरवोखे॥ मुक्तामालहिये परसोहै उपमा एकलसीहै। जनुपावस घनश्याम मध्यह्वै बग पंगत निकसी है॥ गुंजामाल लाल लालके उरपै ररकत ताकी। जनु उफनातिहिये मोहनके रति वृषभान सुताकी॥ पीताम्बर उरश्याम श्यामके उपमा एकनभा

नी। जनु पावस घन श्याम मध्य यह बिज्जुघटा घहरानी। फूलन हार फूलके तोरा अरुबहार सरसावै। छापें अंगअंग चंदन की लखि त्रैताप बुझावै॥कछनी कछे सुरङ्ग किंकिणी कर में झुन झुन बाजै। जनु बसंत किंशुक फूलनपर भ्रमरसमूहन राजै॥ गुरुनितंब उंगरी गतकारी पिंडुरीगुल्फ सुढारू। सोहतहै युगल साँवलमें जलज साँकरे सारू॥ चरण राजके शरण सहायक तारन तरन बखाने। उपमा कौन कीजिये तिनकी तीनि लोक यश जाने॥ पावन लसत पांवड़ी प्रभुके करमें लकुटरंगीनी। लटकत चलत त्रिभंगी मूरति करीमैन छबिछीनी॥ आकर्षण कर मुरली बनितन की जबजेहि कुंज बजावैं। ब्याही अन ब्याही निशंकह्वै निकरि गेह तजिधावैं॥ तजैंलाज गृहकाजराज को फिरैं रूप अनुरागी। यहै खीज गुरजन वा पुरजन आकर ने सब त्यागी॥ ग्यारह बर्ष अधिकदिन बावन प्रकट खेल प्रभु कीनो। फिर अखंड बृंदाबन अजहूं रहतराज रस भीनो॥ भजना नन्द द्वारका छाये गोपिन बिरह बढ़ायो। गुप्तखेल में खेल और यो ललिता प्रकट दिखायो॥

चौ०। द्वादशबर्षहरियुतब्रजनारी। हरिगिरिधरकेसंगबिहारी॥ रहसि दिखाय नहासि पुनिसोई। गयो त्यागि द्वारावतिकोई॥

छंदपद्धरी। निज प्रेम पंथ बनितनि बढ़ाय। ब्रजराज गयो बिरहा बढ़ाय॥ तिन एक एक कारण अनेक। तिनकरैं धरैं सुर श्यामटेक॥ निशियाम काम दूजोनकोय। लखि गेह गेह अति रुदित जोय॥ कोसकै काहि समुझाय बाल। ब्रजबाल परीं सब प्रेम जाल॥

त्रोटकछंद। ब्रजगावन दीन समाजजहां। बनिता लखि मीन समूह महां॥ तहँधीवरह्वो ब्रजराजगयो। मुरलीस्वर पूजन जारिछयो॥ चलिकै छलिकै सबखैंचलई। मकरध्वज गाहक हाथ दई॥ अँसुवन प्रवाह पखारधरी। बिरहागिनि सों परिपक्ककरी॥ गृह भाजन में सबशोरकरैं। सुख इंधन लावत जोरकरैं॥

करुणाकरतीं दमको भरतीं। अति धीरन बीरन क्योंकरतीं॥

दो०। यौं अनेक थल एकही हरिगुण कथा प्रवीन।
मुरली बिरह दवागि सों कर उरझी सुरझीन॥

त्रोटकछंद। सुरझी फिरना उरझी जबते। हरिही अनुरागरही जियते॥ बिलखैं सिगरी न लखैं पियको। कलपैंतलफैं न लखैं पियको॥ हरिहो हरिहो हरिहो रटतीं। दम ऊरधलै दमसी भरतीं॥ निशि बासरवो करुणा करतीं। मूर्च्छा लहि हाकहि भूपरतीं॥ कबहूं बनकुंजनमें बिहरैं। लखि केलि सहेठ बिलापकरैं॥ कबहूँ गज झुंडन देखिहँसैं। हरिजू बिनको बनमाहिंबसैं॥

दो०। सुनहु भोज ब्रजराजकी सखी तीनबिधि जान।
प्रथम सात्वकी राजसी फिरतामसी बखान॥

(सात्वकीन सखिन के बचन दंडकमें)

कंतसों न मंत और गेहसों न नेह कछू सुत सों नसुत रह्यो ज्ञान कोनगार्योहै। पानसोंन प्रीति लोकरीतिकी प्रतीति नाहीं पानी पनाह कछू सुख में न सार्यो है॥ बेदसों न भेद लहै भाभी को भरोसो कौन दुःखको न दोष बुद्धिसेनयों बिचार्यो है॥

(राजसीन सखिनके बचन दंडकमें)

जिनपै सयानी वारी लालगृहकाज त्रास सासको न मान्यो औरकोऊ काबखोड़िहैं। जिनपै हुलासवो बिलासपतिवारवारे थकीं ब्रजबासिनै चरित्रकेते जोड़िहैं॥ बोधाकबि तिनहू जो ऐसीरीति कीन्हीतो का हमहू उनसीहू हैं और ऐसी प्रीति तोड़िहैं। नेकी बदी बोड़िहैं बिपति बरुगोड़ि हैं जो कान्ह हमैं छोड़िहैं तो हमतो न छोड़िहैं॥

दो०। सुनी निबाहत जगतमें बाँह गहेकी लाज।
सकुचनकीन्ही अंकभरि हमैंतजत ब्रजराज॥

(तामसीनके बचन सवैयामें)

हमतो तुम्हैंचाहि के याजगको उपहाससह्यो अरुकासमहा। पुनिपापउ पुण्य बिचार्यो नहीं परलोक काहू लोककी

चित्तचहा ॥ इतनेपैतजो तो तिहारो बनै कबिबोधाहमैं कहनेको रहा । जिनप्रेम मुकाबिले पीठदई नरते जगबीचजियेतोकहा ॥

(सामान्यतासखिनके बचन चौपाई में)

श्रीब्रजराज रासरच भामिनि । अमितबिलास दिखायेकामिनि ॥
कै वह शरद निशासुख कीन्हों । कै अबनाथ अमित दुखदीन्हों ॥

सो० । हियते बिछुरे नाह हिमऋतु इमिआगम जगत ।
उलटी एकपनाह शीतदिवस दाहैं करत ॥

चौ० । अबयो बिरह न बूड़त कोई । कैपषान यहतनु नाहिंहोई ॥
गये न निकसि प्राण दुखदायक । जबदेखे बिछुरत ब्रजनायक ॥
गये न नैन फूटमतवारे । इन बिछुरत ब्रजराज निहारे ॥
भस्म न भई देहयह तबहीं । चल्यो त्यागि ब्रजनायकजबहीं ॥
भुजन चापिहरिहियसोंलायो । कठिनजात बिधिकुलिशबनायो ॥
अबयोचंदउगतकेहिकारन । निशिऔ दिवसनये जिमिभारन ॥
बृन्दाबन के द्रुमलहि चारे । हरिबिछुरत बिधिक्यों न सिधारे ॥
गयो न सूखिकालिन्दी बारी । जिहिजलकेलि कीन्हगिरिधारी ॥
कै वह सुखकै यह दुख भारी । करयो कहा हमको गिरिधारी ॥
निलज प्राणअबनिकसत नाहीं । मिलहिंजायहरिगिरिधरकाहीं ॥

(अथबचन चौपाई)

लिखिकर ऐसो प्रेम नवीनो । कौन बिचार बिरहलिखि दीनो ॥
याते बिधिकी भूल अनैसी । जोपै करत निहायत ऐसी ॥

(अथसखी बचन दोहा)

ये स्वामी मनशोच यह आवत अग्र बसंत ।
पियबिदेश हिय बिरहयुत किहिजीवै कोतंत ॥

सवैया । बटपारन बैठिरसालनपै कोयलीदुखदायकरेररिहै । बन फूलहैंफूलपलाशन के तिनकोलखि धीरजकोधरिहै ॥ कबिबो-धामनोजके ओजनसों बिरहीतनतूलभयोजरिहै । कछु तंतनहीं बिनुकंतभटू अबकीधौंबसंतकहाकरिहै ॥

त्रोटकछन्द । जगमें जबआयबसन्तबस्यो । तबकन्दर्प मूरति-

वंतलस्यो॥ नवपल्लवपातनयेड्डुलहैं। मदनड्डुलवीचधजासुलहैं॥ वनफूलतपुंजपलाशनके। नितसीजतवेसउतासनके॥ नवकञ्ज कली जलमेंलसिहैं। बिरहीजनकेमनकोकसिहैं॥पिकचातकशो- रखरेकरिहैं। बिरहीजनप्राणनते हरिहैं॥ कुसमासरफूल निषंगभरे। अमलानसुधीरनमौरधरे॥

छन्दपद्धरिका। जगमाहिं आयसाज्योबसन्त। जबप्रलयका- लसंसारअन्त॥ जिनधामनहींभानुनहिंलाज। तिनकोबिशेषदुख भवसमाज॥ सुनिकठिनकोकिलाकूकबीर। असकौनप्रबलजोधरै धीर॥लखिकेरसालको मारुबाल। असकौन भयोबिरहीबिहाल॥

सवैया। मुखचारभुजापुनिचारसुनैं हदबांधतबेदपुराननकी। तिनकीकछुरीझकहीन परै इहिरूपयाकोकिलातानकी॥ कवि बोधासुजान बियोगीकिये छबिखोई कलानिधिआननकी। हम तौतबहीं पहिचानीहती चतुराईसबैचतुराननकी॥

दो०। यहबसंतऋतु बारिनिधि बिरह बढ़त लखिबीर।
ब्रजनायक खोहित बिना किमि करलागहितीर॥

चौ०। प्रफुलितकञ्जफुले जल माहीं।मनहुंपुत्रबाड़वकेआहीं॥ देखत दहत बियोगीलोचन। बिनसहाय ब्रजपति दुखमोचन॥
दशहूं दिशिपलाश छबि छाई। मनहुंसकलबन लाइलगाई॥
यह निरधूम दवागिनि सोई। पान कीन्ह गिरिधारी सोई॥
दहत कूक कोकिलकी गाढ़ी। जनु रनुमारू गावत ढाढ़ी॥
नउतम पात अरुण लखै कैसे। लालित पताकर रणमें जैसे॥
उनत भृंग भोरत बन माहीं। बरषत मनहुं पंचशर आहीं॥
पवन चक्र चहुंदिशिते धावत। मनहुं मतंग गजकहुं आवत॥
पवन बबूरा बजत कठोरा। क्षितिपै नृप बसंत को तोरा॥
जब अवश्य बीतत है जैसी। तबसहाय साजत बिधितैसी॥
हरिक्षिति सुखद चंद्रिका जोई। ज्वालहाल यहि अवसरसोई॥
शीतल मंद सुगंध बयारी। त्रिबिध तीन तापशम नारी॥

दो०। बिरह गिरह चौकित चकित चली बियोगिन भाम।

जेहि बनितन पूरबकहूं ताहिमिलो घनश्याम ॥
इतिश्रीबिरहबारीशमाधवानलकामकंदलाचरित्रभाषा
बिरहीसुभानसंबादेशापखंडद्वितीयस्तरंगः २ ॥
(इश्कवरविक्रमनाम)

(तीसरातरंग)

(अथाअगलावखंड)

चौ०।सुनबररुचिसोइप्रेमकहानी।बिरहबिकलबनिताअकुलानी ॥
चलि संकेत भूमि त्रिय आई। ढूँढ़ा बहुत न मिलो कन्हाई ॥
छंदसंयोगता।बटछाँहपायगायोननाह।तियहियेहोतमनमथदाह
करबीनलीनपरबीनसाज। गुणकथन कीन्हतहँकीन्होनराज ॥
सवैया। तबनेहनफादिलमोललियोछबिआपनीलेकेब्यानेदई।
पुनि माललैदाम चुकायोनहीं मुलकात चिन्हारउ भूलगई ॥
घटै कीमत बोधा जो माल फिरे वंजिके बेवपारमें टूटठई।
रुनकोपै बनै हमयो समझै मन बेचो न जानिकै लूटभई ॥
दो०। ब्याहु ब्याहु बोधा सुकबि करीनिहायत खूब।
बरद बंदिदी आशिका बेदरदी महबूब ॥
विद्यापदछंद। इहिजगकोन प्रीतिकरिरोयो। कीन्ही प्रीति पतंग दीपसों तुरत आपनोखोयो ॥ सुनत कुरंग तीनबधिकरके बान हियोदे ओड़े। सुरन मध्य सुरराज देहते भगपाछो नहिं छोड़े ॥ भई पषान बामगौतमकी शशिसकलंक निहारो। मृगके मोहभरत नृप मृगहो चरयो सघनबिचचारो ॥ सोई ब्रजबनितन पर बीती कहने कछुन आयो। बोधालागि उहि प्रेमपंथमें कौन न गयो डहकायो ॥
चौ०।सुनसुभानइहिबिधितियगायो।धनुषबाणधरिमनमथआयो।
बाउनबाम बिरह मत मोई। जानत मनमथ कै वह जोई ॥
अँशुवा बहै ठाढोभरि आवै। जब अखरौटी बीन बजावै ॥
ताहि देख दैताल तहाई। मनमथ बहुधा बाल खिजाई ॥

सो०। उच्चाटन शरलाय मोहन शोकन उनमदन।
मनमथ अतिहरखाय मारनशरपंचमलग्यो॥
चौ०। नवअवस्थाबिरहीतनजवहीं। अतनसतनवरणतकबितबहीं॥
दरशन आयमदन तब दीन्हा। अतिही आयउदीपन कीन्हा॥
छंदगीतिका। यहचरितलखिरतिनाथको प्रज्वलिततनवनिता भई। अतिकोप सातुकलोपके यहघोरशापतिन्हेंदई॥ लखि बिरहबस जस मोहिं खिझावत जुलिन व्याकुल चालमें। तिमि होउगे दंपतिबियोगी कठिन तिहि कलिकालमें॥ करबीन लै अतिदीनहो बनबन फिरो बिरहानचै। पुनि द्वारद्वार पुकार करहू भेषयोगीको रचै॥ पुनि शापबो त्रैतापयुत रतिनाथहाथ दुखोमले। सतभंगमयो घररंगभयो बिनकाज व्याध सिढ़ैमले॥
दो०। कबहूंनीके भले में ओटपाय करियेन।
सुन श्रोहित उपदेशमें वानरहोमरियेन॥
सो०। शाप पाय पछिताय पुनितासों बिनती करी।
तन छिनबिरह बलाय सहबीहम केते दिवस॥
चौ०। निमिषकठिनजबबिछुरतभोगी। कितकदिवसहमरहबबियोगी॥
स्वामिनछमहु अपराधबखानो। मेरेकृतको गुसा नआनो॥
सो०। जोपिय सों संयोग सुखिनबंध बेरनाविषै।
देय बिरंचि बियोग कोटराज किहिकाजतिहि॥
मनमथके सुनबैन कह्यो बिरहिनी बालने।
अरेधीरधर मैन तोहिं बिरहब्यापै सरल॥
जन्म आदि ते होय बिरह बीज तेरेहिये।
द्विजतन पावै सोय बरसदोइ दशलों रहै॥
बिछुर जाय सोइ वाम बिनसो बहुतकि बिरह।
दुसह बिरह सन नाय बाघवगीरवरषबसहु॥
पुनियह आप प्रताप मृगनयनी त्रियतोकोमिलै।
तेरह दिवस संयोग भोगकरहु तुमतासुघर॥
तापर होय बियोग बरष दोइ दशमासजग।

कठिन बिदेश कहबाम चारमास बन बन फिरो ॥
यों कह अपने गेह गई वियोगिनि बालतब ।
मनमथ दरद सनेह आयो निजअस्थान को ॥

(अथलीलावती जन्म)

सो० । द्वापर युगके अन्त पुरी बनारस के बिषे ।
कायथ नाम सुमन्त तासुसुता लीलावती ॥
बालदशामें बाल पढ़्यो ब्याकरण भाष्यतब ।
निजकृत ग्रंथरसाल चरचाहित नूतनरच्यो ॥

छंदचौपैया । विद्यादशचारी बड़े बिचारी पढ़ीकुमारी चौंसठकला बखाने । बुधवंतन सगड़े कुपंथनखंडे सबबिद्याधरजाने ॥ पंडित उपदेशी सहज सुबेशी एक एकदिनआयो । षटआगम जाने बेदबखाने सबविद्याधरजायो ॥ चटसारीआयो विप्रसुहायो सबही आदरकीन्हो । आसन वो बासन भोजन खासन सुर सरिता जलदीन्हो ॥ भोजनकरपांड़े चरचाचांड़ीं तुरतहिराखिबढ़ाई । भटक्यो दिशि बारहु चारचबारहु पंडित मिल्यो न भाई ॥ सुनके इतआयो सुयश सुहायो धन्य धराधरकासी । पंडितजीतेलाखन भाषत भाखन नरशिव नारशिवासी ॥ सबही जुरिआये मोदबढ़ाये चरचा जुरके कीजै । हारैहूजीतै प्रभुताजीतै कौन एकलिखलीजै ॥ जो तुमसबहारो होतसबेरे पायँनमेंरलागो । सब गरभफारके शिर फिकारके जाँघतरे होभागो ॥ तुम जीतो आछे आगे पाछे खड़े गलिनमहँहूजौ । हौं ओरछोरलौं निकसचोरलौं जंबु सुयश देदीजौ ॥

दो० । चारपहर चरचाकरी कर करार परवान ।
काशी पुरवासी सबै भये न तासुसमान ॥

चौ० । चारपहर यामिनी बिहाई । भोरखबरलीलावति पाई ॥
ताको जीत सक्यो नहिंकोई । अचरज यहै नग्रमें होई ॥

दो० । भोर शोर सुनिशहरमें लीलावतिमतिजोर ।
आयजुहारी बिप्रको पुरवासिन है सोर ॥

सो०। उपदेशी द्विजबात ताकुमार तासोंकही।
बचन एकबिख्यात तासु अर्थकोउलहतनहिं॥
दो०। कन्याने जननी जनी सुत उपजायो तात।
बनिताने भर्त्ता जनो लोकबेद बिख्यात॥
(लीलावति जानी)
सो०। ऐसे वचन अनेक लीलावति जानी सबै।
बिप्र न जान्यो एक जो लीलावतिने कह्यो॥
चौ०। पगनहीन दश दिशिहूंधावै। बिनाजीभके बेदपढ़ावै॥
मुख बिहीन जो अन्नखाय। जात न जानी कोधौंआय॥
सबहिनकी नारिनसोंरहै। कुचमरदै अरु माताकहै॥
बेदकलाम पढ़तहै दोऊ। वाबिन तुरक न हिन्दूहोऊ॥
(बिप्रनजान्यो)
छंदभुजंग प्रयात। रह्यो चाहतें तातनय ओर ऐसी। फँसो बेनचाहै अहेराहै जैसी॥ रह्यो कै फँसो खांड़यो है फुमानी। तरी है तिन्हैं संतकैधौं अयानी॥ हँसे तालदैदै सबै नग्रवासी। अहे बिप्र जीतीकैधौं नाहिंकासी॥ हती चौदहों लोक में दृष्टि जाकी। भई बुद्धियो छिप्रही भ्रष्टताकी॥
दो०। जंघजोर मडवा तरे भांवरसात भ्रमाइ।
अपकीरतिकन्या दई द्विजकोब्याहुबनाइ॥
छंदपद्धरिका। उपहास भयेपर जरयोबिप्र। तिहि शाप दीन्ह बनिताहि छिप्र॥ जसहन्यो मोर अभिमानबाल। तसहूं दीन शाप यह बाल॥ जेरचे ग्रन्थ तुम अति प्रवीन। तेहोयँ सबै दारिद्र लीन॥ जोपढ़ै पुरुषतो बढ़ैरोग। बनिताहि होयबालम बियोग॥ इहसबबखरयो बनिताहि दुःख। बिप्राहि बिरोधको लयो सुःख॥ हारहुजीत करिये न टेक। द्विजकोह मिटै भूपतिअनेक॥
चौ०। शाप सबै बनितापर बीती। चरणशरण शंकरकोचीती॥
बिधवाबाल सर्बसुख त्यागिन। नवयौवन प्रवीन बैरागिन॥
निशिदिन करै शंभुकी सेवा। निगमागम जानत सब भेवा॥

पूजी द्वादश बर्ष बिशेखी । तासुभक्ति गौरीबर देखी ॥
छंदचौपैया । तब उमँगि वृषभध्वज कही बनिताहिको तप देखिकै । तुवसिद्धिभातप वृद्धिको भा काम मांगु बिशेखिकै ॥ वह बिमुख भोगिनि तियबियोगिनि पुरुषकी इच्छानहीं ॥ भवछोरलाज मरोरके भय छोड़ यह अरजै कही ॥ सुननाथ दीनानाथ मैं जग जनु होत तुव पद ध्यायके । जिन दीन भानु दयोन तिनहिं देत बिरह बुलायके ॥ हौं पति अपतते बिमुख सुखते दुख अनेकसदा लह्यो । ममसघन बन यौवन बिसूरत फलितना कबहूंभयो ॥ मोहिं दीजिये रतिनाथ सो पतिनाथ गिरिजानाथ ये । कहे शम्भुहोय समस्त पूरबजन्म पियसो साथय ॥ द्विज शापघोर घटैनहींजेहि घरीलौंघटप्रानहैं पुनिहोय प्रापति पीयको रतिनाथ तो रतिवानहैं ॥
दो० । बरपायो पायँन परी परमप्रीति करनारि ।
पुनि आई निज गेहको लीलावति तिहिबारि ॥
चौ० । संधि पाय लीलावति नारी । भई आयब्राह्मणघरनारी ॥
पुहुपावती पुरी अतिसुन्दर । तिहिसुवास मनचहत पुरन्दर ॥
गोबिंदचन्द भूपतिहि जानो । बेदवन्त प्रतिवन्त बखानो ॥
रघूदन्त प्रोहित तिनकेरा । खेदवन्त कुलवन्त नवेरा ॥
सीतवृन्तातन के घरनारी । तिहिघर बासलीन्ह सुकुमारी ॥
जन्मघोस साइति असजानी । पुराचीन वविजोन बखानी ॥
दो० । मारगसित तिथि त्रैदशी निशि भरणी पदपाय ।
जन्मलीन्ह लीलावती रघूदंत घरआय ॥

(अथारति जन्मकारण चौपाई)

निजअस्थान मदनरति नारी । करहिशाप बश चिन्ता भारी ॥
कलियुगप्रथमचरण जगमाहीं । अबतक भूपपापरति नाहीं ॥
पुनिनिराट कलियुगजबआवै । तबकोपीरकौनकीपावै ॥
नरदेही इहिअवसर लीजै । शाप भोगकोयोगनकीजै ॥
दो० । बिप्रहौन मनमथ कह्यो नृपतनयारतिहौन ।
मिलनशापके हाथहै शोचकीजियेकौन ॥

दक्षिण दिशि परभावती नगरी रेवातीर ।
रुक्मराय भूपतितहाँ नक्रपानसधीर ॥
धनको गुणको रूपको दक्षिण कहिअतिधाम ।
होतजमाने आयके कल्पलतासी बाम ॥
रतिनिजमति उनमानिकै गवनतुलाबिनुकीन्ह ।
रूक्मरायनिजघरिनउरआयबसेरोलीन्ह ॥
कृष्णपक्ष परमायउष मृगशिरनिशाबिशेश ।
जन्मकंदलाबालको धामराजकेदेश ॥
ताकीलग्नबिचारके कह्योज्योतिषीएह ।
महाराजयहकन्यकाउपपतिकराहिसनेह ॥

छंदपद्धरिका। अतिसांगीतपरकरहिप्रीत । करबीणसाजगावै अभीत ॥ मिलनटिनघटिनभटकेअनेक । लहिनटाबटाफेलनसुबेक ॥ परपुरुषप्रगटराखैरिझाय । सबछैलवृत्तजानैउपाय ॥ नरनाथसुनैइमबिप्रबैन । अतिभोउदासमतिमौनचैन ॥ यहसुताकटहरा बीचनाय । नरबदाधारदीन्हीबहाय ॥ द्वैपहरगहरतिहिभयोबौर । इकनग्रअग्रतटलग्योठौर ॥

दो०। रेवातटउत्तर दिशाहीरा पुरसोनाम ।
ग्रामबिषेगणिकाबसैनव यौबनगुणग्राम ॥
प्रथम कुनामगूजरतहाँगणिकनकोगुरुदेव ।
सोप्रभातरेवा पुरीकरै शंभुकीसेव ॥
तटनिहारकेकटहरानिकटगयो सोआय ।
लघुरवसुनिगुनिकेदयाकन्यालई उठाय ॥
जातगूजरीऊजरीप्रभुदाताकोनाउ ।
तिहिपालीहियहेतकरसुतासुताकेभाउ ॥

चौ०। बर्ष पांचमें कन्याजबहीं । लग्यो पढ़ावननायक तबहीं ॥
सुर गतितालसाज बजवावै । रागरागिनी भेद पढ़ावै ॥
तिवरी तांड वनाच नचावै । एकौघ रीक्षमानहिं पावै ॥

दो०। मजलिसलखिरीझोनृपति दीन्होंदान अपूर ।

निजकरराखी कंदला कछु महलनते दूर ॥
गुणस्वरूप ताकी क्रिया करबीतादिनप्रकास।
जबमाधव नलआयहैं कामसैनके पास ॥
इतिश्रीबिरहबारीशमाधवानलकामकंदलाचरित्रभाषाबिरही सुभानसम्बादे शापखंडेतृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥
औवल इश्कनाम ॥ अथअगिलावखण्ड

(चौथातरंग)

दो० । जैजैजै ब्रजराजश्री श्यामसच्चिदानंद।
जै माता वृषभानता अभय करनजगबंद ॥
सो० । गढ़ा राजवरलेख गोंड़सोमबंशी नृपति।
महाराज वे एक उनसमनहीं अनेकनृप ॥

(छन्दगीतिका)

पुहुपावती पुरीबसै महाराज गोबिंदचंदकी। रचनाबनी विचित्र जहांजनुपुरी है सुरइन्द्रकी ॥ बनबागकोटि तड़ागनृपसम महल सबहीके बने। गुणरूपदान प्रमानकोक्षिति पालसेनरवरगिने ॥
(छंदपद्धारिका) पुहुपावतीनगरी बिशाल। गोबिंदचन्दलहि भूमिपाल ॥ बैठसुपाटतब राजकाज । तबलसहिंमनहुं सुरपति समाज॥समरथ्थहथ्थजब गहतखग्ग।शंकितअतंकथरहरतछग्ग॥ भ्रूपति पतंगबड़िरै निरंग। जबकोपि चढ़तभूपति तुरंग ॥ बिद्धुवा प्रवीण बिद्याप्रकास। सो रहहिं सदाअवनाशिपास ॥ अति शीलवन्त गुणज्ञानखानि। तिहिपुत्रमाधवा बिप्रजानि ॥
दो० । कृष्णपक्ष दशमीमघा मारगमास बखानि।
बिष्णुदास निजघरनिउर माधवजन्मसुजानि ॥
चौ० । सुनसुभानयारादिलदायक। अबयहबिरहनकथबेलायक॥
तजत शरीर चीणतिहिहोई। मनबिराग बाधतहैसोई ॥
तोहिंमोहिं अंतरपरजै है। कथनी कौनकाम यह ऐहै ॥
अहोमीत ऐसीजिनभाखो। कथकेकथा न खण्डितराखो॥

जोयहबिरहछूटतनजैहै। कथानिशानी जगमें रहि है॥
यातेमन शंकानहिं कीजै। पूरणप्रेम पंथजग दीजै॥
(बिरहीबचन) (छंदसंयुत)

जबतेजन्म द्विजकेगेह। रतिपतिलयो शापसनेह॥ तबते विप्र घरआनन्द। अतिहित करत गोबिन्दचन्द॥ ज्यों२ बूड़त मनमथआव। त्योंरूपगुन भरपाव॥ बोलनहँसन चलन चितौन। तासोंमोह बाँधेकौन॥ शुभ २ करी बरषेचार। हर्षेतात मात निहार॥ सुन २ नादबेद बखान। माधवदैन लाग्योकान॥ पंचम बर्षजान बिहात। तबब्रत बंधकीन्हों तात॥ कछु दिनबिप्र अपने गेह। पढ़बेको कियो अतिनेह॥

छंदपद्धार। उठिप्रात करैमज्जनबिचार। पुनिपाठ बेदप्रभुध्यान धार॥ तबतात साथनृपपासजात। महराजताहि देखेसिहात। अतिरुचिरन्गग माधवाप्रवीन। कछुदिवसगयेकरबीन लीन॥पुनि लखन लिख्योदिशिचारधाइ। बैठेयकन्त कछुमजापाय॥इकदिवसशम्भु बाटिकामाहँ। देख्योबिप्र तेहिबालकाहँ॥तियसखिनसाथ छबिकीनिकेत। लहलहीबैस ललितासुचेत॥ अतिचतुरशम्भुके पास आय। कीन्होंप्रणाम शरणैसुधाय॥ तिहिबेग माधवानलबीर। शिवधाम लखीतियई न भीर॥ जनुशशि समूहमंदिरउदोत। शिवधाम सुभगजगमगत जोत॥नवबैस सबैसोहैंकुमार। भयोमस्तमाधवानल निहार॥ धरकंधबीण परकमललीन। चल भावतिया के हाथदीन॥ पुनि बीण साज माधव अड़ंग। शिव शरणध्याय गायोषड़ंग॥ यद्यपि कुमारिका कामहीन। तद्यपि बियोगकीन्हीं अधीन॥ तेरहींमाधवा में समाय। छबिनिधिअथाहमें गोतखाय॥ धरवार सियामोध्यान आदि। तियछकित भईजगजानुबादि॥ इतरह्यो माधवाचकितहोय। बिषहरवियोग केभैरमोय॥ सुमुखी सुआयातियपायधार। कहिखबरदारहोवै कुमार॥ चलभौन बेगि लागीअबार। तुवजनानि चित्तबाढ़ी बिकार॥ तियसुनत सखी के निठुरबैन। लखिबिरही मीततनु जल्द

नैन ॥ पुनिकह्यो बिप्रसहजोर पानि । नितदेवदर्शयह ठौरआनि ॥ पुनिपरी शंभुचरणन अधीन । बरदेहु येहमोहिं जानदीन ॥ गौरीसमस्त बोली सुबानि । तियगमन कीन्ह यहसत्य मानि ॥ तिहि दृगन अग्रतेओट होत । द्विज बिरहसिंधु में लयोगोत ॥ भुइँ पस्यो पटकि बीणा सुपागि । दृगलगालगै शरबिरहलाग ॥ रघरहतसाँस हियफटत जोर । दृगचलेवार शिवचरण तोर ॥ पुनि पोंछि आँशुडगस्यो प्रवीन । शिरपागधार करबीण लीन ॥ निहचलसुनैन बिरहीसुरंग । लटपटी पागग्रीवाउतंग ॥ मनमालिन चकित आयो निकेत । लखिपरन लह्योसबहीन हेत ॥ बिगरयो विशेष सुतको सुभाय । बिद्याप्रकाश यह हेतपाय ॥ इकबिष्णु दास पण्डित प्रवीन । तिहिहाथ माधवा सौंपिदीन ॥ यहपढ़ैगुनै परवीन होय । सुन बिष्णुदास द्विजकरहु सोय ॥ शिशु पढ़हि और तिनके अवास । तिहिपुत्र दीनबियाप्रकास ॥

दो० । बिधिहि भाव लीला वती माधव एकहि साथ ।
विष्णु दास घरबर्ष दिन संथालीन्हों साथ ॥
सो पंडित मंडित पढ़ै बिद्या दशऔचार ।
पुराचीन मतिग्रंथलखि बिधिवतकहि निरधार ॥

छंदछप्पय । ब्रह्म ज्ञान रसादि नाद पुनि बेद बखानत । बैद्यक गणित बिशेष ब्याकरण जलतर जानत ॥ धनुष धरनपुनि कहत नित्य सांगीत नचावत । कृषी निपुणता बाणिज्य अश्वधावत चढ़िधावत ॥ रतिकेलि आदि बाधा सुकबिसभा चातुरी इलमलहि।इमपुराचीनमतग्रंथलखियेविद्यादशचारकहि ॥

दो० इन मध्ये चौंसठि कला बरणत कबिजन और ।
ते माधव लीलावती नजर करी तिहि ठौर ॥

सोरठा । सुन सुभान यहरीति दिलभर दिल महरम कहत ।
दीद २ परप्रीति माधव लीला वति यथा ॥
बढ़त एकही साथ दिन पर दिन अधिकात हित ।
लीलावति रति नाथ द्वैतन मन एक इभये ॥

दयो माधवा हाथ दोहा लिख लीलावती।
बरौं चिताके साथ के माधो द्विजकोबरौं ॥
माधव बिषय सनेह निबहैतो निबहै सही।
धरै रहैनर देह नातो कासंसारमें ॥ २ ॥
येही बोल करार कराखे दोउ ओरते।
बहुबालक चटसार जाहिर और न काहुभव ॥

छंदपैगाम। चित चाहदयो प्रिय प्रानते। के लिखेलबतरातनजाहि बखानते॥ आशिक औ महबूबहुओ दोनों ओर ते। प्रेम कथा कहदिवसबितावत भोरते ॥ योंद्विज माधव चित्त बसोहित मित्रको। चित्त न आवत एक सिखावत कित्तको ॥ त्योंहिय बालप्रबीन हितूकहचाहती। त्याग कियो गृह काज सनेह निबाहती॥ बाग तड़ाग इकंत सुमंत्र बनावहीं। साजि बीण सितार झलैलगुगावहीं॥ काममई सब बाम ब्राह्मने काम सों। माधव नल तज धाम रह्यो लगबामसों॥

(अथलीलावती स्वरूप कथन)

दो० अंकुरयोबन बालसो सती रूपके गेह।
है माधो द्विजसों लगो जाको प्रेम सनेह ॥

छंद दोधक। है द्विजराज मुखी सुमुखी अति। पीनकुचाह गरुरी गररी गति॥ है हिरनाक्षय बाल प्रवीनिय। त्योंद्युतिदामिनि की करिछीनिय॥ पन्नगमेचकसी बरबैनिय। कुंदनलोंझलकै सुखदैनिय॥ है न बड़ी अति प्रीति भरीत्रिय। तीक्षणभौंहकटाक्षकरचोविय॥ खेलतसी उलती मगडोलहि। कंचुकी आपकसै अरुखोलहि॥ हारउतारिहिये पहिरै पुन। पाँवधरै लहित्यों न उराधन॥ हारशिंगारशिंगारहि सुन्दर। क्योंन बसै तियछैल दिलंदर॥ यों कटि मोरत छांहनिहारत। ओढ़नी बाराहिवारसम्हारत॥ केशर आर दियेसुकमारिय। मैन मई झलकै नवनारिय॥ नेवर योंझलकाय चलैजब। छैलहियो करखै निरखै तब॥ घूम घुमारिय घाँघरिया सजि। वाड़कओढ़नी ओढ़चलै

लाजि ॥ फूलभरीगजरा पहिरैउर। माधवत्यों सुमिरत्तहरीहर ॥
दो०। फुलवारी के रति लखी सदं सुकल पखिरात।
रही वही चुभि चित्त में सो छबि कही न जात ॥
(अथ माधवा छबि कथन)
संधारका छन्द। शिरजदं पाग बिलसत सुवेश। रहि जु-ल्फ २ घुंघरारि केश ॥ उर सुमन हारतुर्रा जरीन। कुम कुमत्रि पुंड्र भृकुटी परीन ॥
छंदद्रुबिला। कटि पीत पटशुभ देख। कछनी सुरंग बि शेख॥ गलबीच मुक्तामाल। पगपाउड़ी लहिलाल ॥
छंदपधरिया। जगमगताड़ित गजराज हाथ। चंपक बरन तन रति नाथ ॥ कुंडल लसत नवत सरूप। छबिको देखरीझत भूप ॥ करमें लसत लकुटसुरंग। झलकत प्रेम हिये उतंग ॥ अरुण कटाक्ष भरे सनेह। करमें बीन अति छबि देह ॥
चौ०। बेसकइश्क बिप्रउरमाहीं। पढ़िबोगुनिबो सूझतनाहीं ॥ बीणालिये नगर में डोलै। दिल अंदरकी बात न खोलै ॥
दो०। धनको गुणको रूपको विद्याको अभिमान।
माधवनलको जगतमें सूझतनरनहिंआन ॥
सो०। सबको सकत रिझाय जोरीझतु जेहिगुन बिवश।
माधवनलको पाय दिलमाहिर मोहत सबै ॥
मूरख आतिहि रिसाय माधवनलसे गुनी पर।
ढिग आवत उठजाय फिर पीछू गिल्लाकरै ॥
माधव जिहि अस्थान लीलावति भेंटे तहां।
पुरबासिन उन मान कछुक प्रीति लक्षितभई ॥
तब माधवलगिकान प्यारी सों या रीतिकहि।
जाते होय गलानि सो निदान कीजै नहीं ॥
छंदछप्यदा। धनुधरो वह थलगूढ़जहँ दूजो नहिं खुलिये। शत्रुबधनको मंत्र अंतकाहू न बूझिये ॥ बिद्याअरबित प्रगटकीजे कारजलागि। दान मंत्र अभिमानकाम कामा संग त्रियपागि ॥

पुनि प्रीतिरीति बोधा सुकबिप्रगटकरत जेमंदमति । कीजै इकंत येमंत्र सबभये प्रगट उपजत बिपति ॥

सो० । माधव बचन सभीत सुनबिलखी लीलावती ।
तेरे बिछुरे मीत मोंको अब मरबो उचित ॥
मैं तोको दृढ़जान मनसों अंतर धन दियो ।
अंतरकियो निदान गोपिनको गिरिधरयथा ॥

स० । लोककीलाजको शोचप्रलोकको वारियेप्रीतिकेऊपरदोई ।
गांवको गेहको देहको नातो सो नेहपै हातो करै पुनि सोई ॥
बोधा सो प्रीति मुबाह करै घर ऊपर जाके नहीं शिर होई ।
लोकको मीत धरा तजो मीत तौ प्रीतिके पैड़े पड़ोजिनकोई॥

दो० । बनत निबाहैं जगत में बोल केलकी लाज ॥
बोलगये सुनिये सुजन जियत रहो केहिकाज ।

सो० । लीलावति के बैन सुनिमाधो चुपहोरह्यो ।
उगलत बात बनैन सांप छछूँदरकी कथा ॥
पुनिप्यारीतन चाह बिलखतदे ऊतरदियो ।
तूही सकत निबाह कैनिबाह करतारकर ॥
बिछुरो कहिहै कौन दोचित जब एकत्रहैं ।
जाहिर जगमें हौन आशिककी बेबाकिफी ॥

दंडक । चौखटा नबेली जहां पौनको नगौन ऐसो ठौर मनभावती सोहेतके निबाहिये । चाहिये मिलाप बिसराइये न ऐको बेर मिलिबेको कोटि २ बातें अवगाहिये ॥ बोधाकबि आपने उपाय में न कमी कीजे दुसतुवरे लनकी दुष्टपै न चाहिये । समयपाय बन जायकीजैसो उपाय आली दूसरोनजाने तौ इश्कसराहिये ॥

सो० । हौंआवत उपहास लोभन आवत जीवको ।
हाड़चाम अरु मास बारों तेरी प्रीतिपर ॥
घाटबाट सुनुमित्र मिलिबो नित चितचाहकर ।
प्रीति निरंतर ब्रत्त यतन जाम राखें रहत ॥

दो० । सुनहु नृपति लीलावती गई आपने गेह ।

ताके बिछुरे बिप्रउर बाढ़्यो बिरह सनेह ॥
इतिश्रीबिरहबारीशमाधवानलकामकंदलाचरित्रभाषाबिरही
सुभानसम्बादेशापखंडेचतुर्थस्तरंगः ४ ॥

पाँचवाँ तरंग (अथअगलाबखंड)

छंदमोतीदाम । गई अपने घरको वहबाम । भईतबहीं अति कोपितकाम ॥ बढ़्यो बिरहान रह्यो चितचैन । ढर्‌यो हितमाहिं बढ़्यो बिषबैन ॥ रहीपट ओढ़ अटापर सोइ । नहीं दुख दीरघ जानतकोइ ॥ सखी सुमुखी तियकी परबीन । दशालखि चित्त असंभवकीन॥ कछूतियके जियखेदनआजु । भयोजुरकैयहकन्हि अकाजु॥नहीं तियके मुख पै यहलोच। करै सुमुखी अपने चित शोच॥जगी इतनेखनमें वहबाल। करी अकरी मनमंथ बिहाल ॥ भये दृगलोचन रंग विशेख । कपी सुमुखी तियको मुखदेख ॥ परीपियरी सियरी मनमाह । रही जकसी थकसीकहि काह ॥ नहीं मुखबोलत डोलतबीर। कछूतनकी मनकी कहुपीर ॥ गही जड़ता नहिं बोलत बैन । भई कहबेदन संत कहैन ॥ कहूंउझ की झिझकी डरमान । लगी कहूंडीठके मूठखान ॥ कह्यो कित बारदयो चितचैन । चले ढरके भरके जुगनैन ॥ छुटी जड़ताभई चेतन बाल । कह्यो सुमुखी सुन मोहियहाल ॥

दो० । इश्कनशा बेशक पिये कहै सखी सों बैन ।
मेरे तेरे चित्तको तनकउ अंतर हैन ॥
बैन कहत तद्यपिबनै अन कहबे की बात ।
हंसिके दीन्हों कांठमें पांव आपने हाथ ॥
सो मैं तोसों कहतहौं परै न दूजे कान ।
कान २ जाहिरभये कान २ है जान ॥

चौ० । निश्चयपायबालतबबोली । पीर आपने दिलकी खोली ॥
कहै बाल सुमुखी सुन प्यारी । मेरेउर बेदन यह भारी ॥

दो० । सुमुखी कहै सखी सुन मोते घटी न होय ।
तेरेमनकी चाह पर तन मन डारों खोय ॥

चौ० बीणलियेगावतजोबजावत। माधवनलसो बिप्रकहावत॥
आयबीर चितचोर न बारो। लगै मोहिं प्राणनतें प्यारो॥
जो तैं नाहिं मिलावत प्यारी। तो मैं जियत नहीं इहिबारी॥
सुमुखी कहै सुनौ हो बाला। है तेरो निज तात कराला॥
सुनै कदाचि होय तो कैसी। छिपत नहीं यह बात अनैसी॥

(लीलावतीबचन)

होनहार जो अजहूंहोही। खड्गधार किमि काटहु मोही॥
मर किन जाउँ प्रीति नहिं छोढ़ौं। नेकीबदी शीशपर ओढ़ौं॥
बरु किमि लिखी भाल को मेटौं। देहु छोड़ माधवनल भेंटौं॥
दो० ज्यों चकोर शशि सों पगो दुख सुख लह्यो दुरैन।
दृग फूटे जिह्वा जरी इश्क पंथ छूटैन॥
छप्प० कह चकोर सुखलहत मीतकीन्हा रजनीपति। कहक-मलन कह देत भान सह हेत कीन्ह अति॥ घुन कहँ कहा मि-ठास लकुट झूरी टकटोरत। दीपक संग पतंग आयनाहक शिर फोरत॥ नहिं तजत दुसह यद्यपि प्रगट बोधाकबि पूरी पगन। हैलगी जाहि जानत वही अजब एक मनकीलगन॥
चौ० अबतो आनिबनी सबयेही। जीव जायकै मिलैसनेही॥
जौ लौं नहीं माधवा देखौं। तौलौं जग ऊजर कर लेखौं॥
सो० प्रेमपंथ दृढ़ जानि लीलवति के बचनसुन।
ताके हितकी बानि तबबोली सुमुखी सखी॥
अब जनि होहु उदास धीरजधर लीलावती।
पूजोंतेरी आस भूलन करहुं प्रकाश जग॥

(अथमाधवबिरहकथन)

दो० सुनसुभान लीलावती गई आपने गेह।
ताबिछुरत उरमाधवा बाढ़ो बिरह अछेह॥
छंदछप्पय। प्रथमलाख अभिलाख बहुरि गुण कथन गुणन गनि। पुनि सुमिरन उद्वेग प्रगट उनमादि तहांभनि॥ चिन्ता ब्यापै चित्त ब्याधि पुनि ब्याधि बढ़ावै। जड़िजड़िता को अंग

असम प्रलाप सुभावै ॥ कबि कहहिं दसादस माधसर बात गमन बरणनकहां। बिप्रजी अवस्था तादिन दशवर्ष बिरह जादिन कोपत महां ॥

(माधोअचनदशाअवस्था)

छंदसुमुखी। जबते तजो बनितापास। तबते चित्त बिप्र उदास॥ बिधिपै चलत न कोई उपाव। है जिहिहन्यो बिरहाघाव॥ कलनहिंपरत निशिहू भोर। बेशक इश्कको भयो जोर। करगहि बीण यहचितचाह। कैसेलहैं चित्तमजाह॥ यह रुचिभई उरमें आय। अब यहु नगरदेखीजाय॥ जाके बीच मेरो मित्र। ताके बसत निशि दिन चित्त॥ यों अभिलाष बीत्योजान। अवगुण कहतकथन बखान॥ तरसत नैन ये मेरे। बिनादीदार पियकेरे॥ हितूके नैनहैं जैसे। नहींबराम में तैसे॥ सुमिरनकी कहीयह रीति। हियघटकी कठिनकी प्रीति॥ धोती श्वेतछूटेबार। औपुनि आड़लसत लिलार॥ अंजनअधर नैनतमोल। दिलवरज्यो कहोमृदुबोल॥ चोली कसतउकसत बार। सोछबि बसीचित्तमँझार॥ है उद्योगकी यह रीति। पानी पानिसों नहिं प्रीति॥ गली हेरत दिवानेकी। गई सुध भूलखाने की॥ इसी मजकूर है उनमाद। जोकीजै सहीनस न्याद॥ बिछुरनतेरी अनेरीयार। दिलकोभयोदरद अपार॥ बूझौब्याधि को यहअंग। पीराहरा फीकारंग॥ तेरेदरश बिन यह बाल। मेरोभया ऐसाहाल॥ कधी दिलदार जो आवै। अजब रँगसुरँग सरसावै॥ चिन्ता तेरीयेसाई। कभीतू हेतमोताई॥ तरनी निकट चितमिल बाम। हिलमिलकिये बहुत बिश्राम॥ तो लोलरसताहीला। इलाकिम राखिये जीला॥ जड़होरहे जड़ता सोय। जैसा चित्रपक्षीहोय॥ यारनयों कह्योपरलाप। वे अबकूपहि यकछुदाप॥ हँसीनहीं बरणतकोय। निरस निधनजानबसोय॥

(अथप्रलाप के उदाहरण)

कछुरगो प्रापत द्विज चीती। वहैप्रलाप अवस्था बीती॥

कहै वहै जोई मनआवै। जाको मजा न कोऊपावै॥
घटैदरद मेरेहियकी जातें। कहुबे मीत मीतकी बातें॥
इश्कपन्थ नहिं चीन्हत क्योंहीं। बरगद भयेबड़े तुमयोंहीं॥
बस्तु वहैजो औरै दीजै। बोवैकाटै टेरनाहिंकीजै॥
सुनहुं बृषभतालवदी बातें। खोयो जन्म बिनौलाखातें॥
बूझतये दिवाल तुम बोलो। कारणउर अन्तर को खोलो॥
इश्कहकी कीहै फुरमाया। बिनामजाजी किसी न पाया॥
हजरत नवीकही थी आगे। सो कुर्राकाजी को लागे॥
वोबेकागा कर्कश बानी। तू क्या इश्कमजाजीजानी॥
बिछुरे का दिल मनमें आवे। अरे नीम तू क्यों न बतावे॥
क्यों पीपल तू थलहल डोलै। इमली क्योंन बाउलीबोलै॥
हरगज दरगज बिलाबिल बेला। खूबखेल मस्ताना खेला॥
हजरतनवीकहरफ़रमाया। कानीको कानावर आया॥
क्या रसाल तुमपुत्र डुगायो। हक्कमुकाम धनीको गायो॥
अहेलाड़ले कूपरूपवर। एकबेर क्यों न कहोहरीहर॥
यहसुन बूझैं लोग लुगाई। घरभूतें के कहुंरिसआई॥
खबर भयेमाधो समझाया। सो भूला जिनने योगाया॥
सहन में हैऊरध रेखा। योंही अजबतमाशा देखा॥
योंहीं गस्त नगरकोदेही। पै नहिं लखमें परतसनेही॥

दो० उरबिरहाजुर सो ज्वलित पुरलखि भयेउदास।
तबतकि चल्योतड़ाग ढिग शंकरमठसुर बास॥

चौ० नमस्कार शंकरसोंकीन्हा। पुनिद्विजमाधो बीणालीन्हा॥
बहुबिधि शंकरको गुणगायो। पीछेदिलको दर्दसुनायो॥
ये स्वामी शंकरजग नायक। मेरीपीर सुनौ तुम भायक॥
बिछुरी प्रिया बल्लभा मोहीं। सो दुखनाथ सुनावोंतोहीं॥

तोटकछन्द। गजगामिनिकामिनि बामवरं। सुखदायक मोहियपीरहरं॥ सुकमारियप्यारी नेहभरी। हिरणाक्षय को किल नादकरी॥ गवढ़ीनवढ़ी द्विजराज मुखी। परबीन प्रिया बनिता

सुमुखी ॥ कटिकेहरिनेह भरीरवनी। गजमत्तमतंग यथागवनी ॥ लखिपीन कुचामन मोदल हैं। कुचसंघसकीनन सत्तु कहैं ॥ अतिजोरन जोरमयो पचि कै। न कढ़यो मनमत्ततहां खचिकै ॥ लटछोर जँजीरनडारदियो। छुटवै पुन बेशक जोर कियो ॥ नवयोवन सोवन माँझरहै। अबभूल पर्यो दुख कौनक है ॥ चिंत चाहत पै मिलते न बनै। खल अंतर कंदृपकूरहनै ॥ बिसरयो घर औ सुख स्वादसबै। इमि माधव शंकर सों बिनवै ॥

दो० बागतड़ाग महेशमठि लख्यो मजाके काज।
पैनहोययारी बिना बिरही को सुख साज ॥

चौ० सुन सुभान यह इश्क मजाजी। जो दृढ़ एक हकादिलराजी ॥ पढ़ैपढ़ावै समुझै कोई। मिलै हक खामिद कोसोई ॥ उनमुन उनमुन उनमुनमेला। इश्क हकीकी झेलमझेला ॥ लखिके ध्यान धनीको आवै। पूरण प्रेम निशानी पावै ॥ बेद किताब यहूमतबूझै। तीन लोक ऊपरतिहि सूझै ॥ नाहक कवितरचै जोकोई। हरगिज गलत पढ़ै जो कोई ॥

इतिश्रीबिरहबारीशमाधवानलकामकंदलाचरित्रभाषाबिरहीसुभान सम्बादेबालखंडेपंचमस्तरङ्गः ५ ॥

(अथ अगिलावखंड)

(छठवांतरंग)

सो० जब मिलिबो नहिं होत हितलगाय के दृगन मैं।
तब आशिक की जोत जारतनेह बसीठको ॥
पिय प्यारी अरुपीय दूती को देखत जियै।
ज्यों रोगी को जीय रहत समानो बैद्यमें ॥

दो० लीलावति छकि तकिकहै सुमुखी सो जियदाप।
मेरो माधव मीतको तेरेहाथ मिलाप ॥

सो० आनमिलावै मोहिं जो तू माधव मीतको।

और देहुँ का तोहिं मेरो शिरतुव बैठका ॥
है नकछू पहिंचान निज जियकी खोलैं नहीं ॥
कछू निशानी देहु तू अपने जियकी निशा ।
सोमाधोलखि लेहु मोंसोहोय अमीत तब ॥

चौ० चिट्ठीलिखन लगी सुकुमारी । थिरचित नाहिं बिरहा की जारी ॥ अहो मीत माधव नलमेरे । वाफिक तो कह बिरह दफेरे ॥ इश्कनशातू मों कहँदीन्हा । अजबकैफमेरेहियकीन्हा ॥ निशि दिनचंग चढ़यो चितमेरो । रहत निहारत मारग तेरो ॥ सुखदै इश्क बिसाहाखोटा । चोटेजीव दैनका टोटा ॥ इश्क करै तो ऐसीचाही । एकै ख्यालपरै दिनजाही ॥

दो० कहिबो सबको सहलहै कहा कहेमें जात ।
कहिबो और निबाहिबो बड़ी कठिन येबात ॥

सवैया । वादिनकी वह बान सधासन्दान पै बोधा महाविषसी भई । बातें कहींबग ध्यान सबैपर मीन सी बावरी बुद्धिफिदैं लई ॥ होंतो दिवानी भई सो भई उनसों न करी जड़ता वज के दई । यारी नहीं पै कुयारी करी दगारे दगादार दगासी दई ॥ काहूसोंका कहिबो अबहै यह बात अनैसी कहेते कहावत । कोऊकहा कहिहै सुनिहै कही काहूकी कौन मनै नहिं भावत ॥ बोधा कहे को परेखो कहा दुनिया सब मांस की जीभचलावत । जाहि जो जाके हितूने दई वह छोड़े बनै नहिं ओढ़ने आवत ॥ कबहूं मिलिहौ कबहूं मिलिहौ यह धीरजरी मैं धरावो करै । उर ते कढ़ि आवै गरेते फिरै मनकी मनही में सिरावो करैं ॥ कबि-बोधा न चाटिसरै कबहूं नितहूं हरिवासों हिरावो करैं । मुँहते ही बनै कहते न बनै तनमें यहपीर पिरावो करै ॥

सो० चिन्तामेरे चित्त माधव तेरे दरशकी ।
फुलवारीतकमित्त बनैतो मो हित आउने ॥

दो० बधकुरंग को बाहिलिया लावतशीश चढ़ाय ।
मेरीसुधि लीन्हीं न तू हिये नैन शरलाय ॥

छन्दसुमुखी। पातीपाय सुमुखीबाम। आईमाधवाके धाम॥ पातीबाँचमाधवलीन्ह। हियमें हँसेदूती चीन्ह॥ कैसे रहतसो कहहाल। लीलावती प्यारीबाल॥ सुमुखीकहै सुनुममनाथ॥ जबसेछूटे।तेरोसाथ॥ निशिदिन माधवाकीटेक। कारणकरतरहत अनेक॥ त्यागेबसन पानीपान। नैननतीर नदिनसमान॥ग्री-षमतपनतेरीप्रीत। बिछुरन जानया बसरीत। नैनाभये बादल श्याम। बरषतरहत आठौयाम॥ पठायो मोहिंतेरेपास। दरशन की करैवहआस॥ योंसुनमाधवा दुखपाय। नैननरहेआंशूछाय॥

सो० दोष दीजिये काहि दीनबन्धु आधीनसब।
सो अब मेंटनजाहि पैयंतजो दैयतपाहिल॥

दंडक। सुनहे सुमान मेरोदरद अपार ग्रासभोजन नभावै रैनरंचकनसोवत। तेरीये तलाव तालाबेली तनमेरे चैनभावदि-लहर इनआंखन से जोवत॥ बोधाकबिचीकने चवाई धरैखरड उठैमनमें उठाहसोतो मनहीमें गोवत। निरदई दईपै मेरो कौन बशप्यारीतूतौ अंदर में मेरोदिलंदर में रोवत॥ बशना किसीके सोतो हाथदीन मानकेहैं और सोकहै कासहैजो है आपनीकरी॥ लगालगी होत तीनलोकमें नसूझौ और ठौरहू कुठौरकान शंक रंचकधरी॥ बोधा कबि अब इस भांति सुखनाहिं ऐसे बिछुरग-ये की पीर उमँगिहिये भरी॥ कीजैका उपाय काहि दीजै दो-षप्यारी अरी लगन इन आंखिन की आखिरी गरेपरी॥

सवैया दहिये बिरहानल दावनसो निजपावन तावनको सहि ये। चहिये सुखतो लहिये दुखको दृगवारपयो निधिमें बहिये॥ कबिबोधाइतने पैहितू ना मिलै मनकी मनही में पचैरहिये। गहिये सुखमौन भई सोभई अपनी करी काहूसेका कहिये॥

दो० अबतूमोको लैयमिल भयतजके निरशंक।
दो दुख नाहककोसहै कर बिनलगै कलंक॥
को जाने पुनि है कहा होनहार की बात।
पलकत फावत के परे बीत कलप से जात॥

सो० पातीलिखीबनाय सो सुमुखी के हाथदिय।
प्यारीपै चलजाय बिरह बिथा कहियो सबै॥
चौ० तुममोहिंखबरमित्रकीदीन्हीं। बूड़तबिरहबाँहगहिलीन्हीं॥
अब मैं नजर करौं कातेरी। हाजिर चितवत गरदन मेरी॥
जलकी बाढ़िपियूष पिवायो। मृतकजीव फिरघट में आयो॥
नइया आय बिरह निधिकेरी। बूड़त राखलीनयह बेरी॥
(सुमुखी बचन)
चौ० चलद्विजवहांतालतट देखी। हौंउपायइककरत बिशेखी॥
हरहर शब्द ताल तट होई। तब तुम जानहु टेरत कोई॥
लीलावती सों भेंट कराऊं। तेरे मनकी तपन बुझाऊं॥
चलि सुमुखी निज डेरे आई। लीलावति को कथा सुनाई।
सो० चिट्ठी माधव केर लीलावति निजकर लई।
हियेलाय सतबेर कछु उदास हर्षतकछुक॥
चौ० सुमुखीकहैसुनोकिनप्यारी। चलबिशेषचलियफुलवारी॥
चलके बाल बाग में आई। ताकी सुधि काहू नहिं पाई॥
छंदत्रोटक। द्विजको लखिती रतड़ाग तहां। मनमोदभयो बनितानमहां॥ सुमुखीहरनामतहांसुमिरयो। तबमाधवनेकरबी-णधरयो॥ चलबागमें आश्रमभागगयो। उरलाहि दुहूनदुहूनल-यो॥ सुखके आंशू उमड़े नरहैं। मुखते भर लाज न बातकहैं॥ थल एक दुवोतहां बैठगये। सुमुखी तियके करपानदये॥ भय लाज न बालन बोलसकै॥ चितकी चित बाहर हो झलकै।
सो० तिय केहिय की पाय माधो सों सुमुखी कही।
भई यामनी आय बसिये चल भामिनिभवन॥
योंसुन भयो हुलास माधोनल चाह्यो चलन।
कहूं धरो नहिंत्रास व्यभिचारिनकी रीति यह॥
दो० ज्वारी व्यभिचारी मदी मांस अहारी कोय।
इनके शोच सँकोच नहिं दयाकसकनाहिंहोय॥
सो० कायाको बूझेह कोऊ व्यभिचारी नरन।

सूझत न जिनको येह स्वरगमकर जरौयथा ॥
इतिश्रीबिरहबारीशमाधवानलकामकंदलाचरित्रभाषा
बिरहीसुभानसम्बादेबालखंडेषष्ठस्तरंगः ६ ॥
इस्कमुहब्बत नाम अथअगिलाव खंड ॥

सातवांतरङ्ग प्रारंभः

दो॰ बिरहतंतु को अंतकर भजुराधे घनश्याम ।
लीलावतिके धाम को माधो चल्यो सकाम ॥
बैठि एकही सेज में लगेदोनों बतरान ।
त्यों सुमुखी रुचिकै दिये तियके करमें पान ॥
व्यभिचारिन को केलिमें झेलन रंचकहोय ।
लाज तजै उर उरभजै हरबरात है दोय ॥
याते कछुबरणौन कछु आभूषण शृंगार ।
व्यभिचारिन की केलिमें केवल कहत बिकार ॥

छंदबिलावल । पहिराय बसनसुरंग । तिमिलसत केशरअंग ॥ शृंगार भूषण बेलि । अंगसाजसुत्रेलि ॥ त्रिबिधा सुगंध समेत । छबि फूलमालादेत ॥ चांदनी सेबनाय । पुनिसेज बंधतनाय ॥ बीरा परस्पर खात । रसअंगअंग बतात ॥ छातीछुई जबपियना थ । तबबाल पकरचो हाथ ॥

दो॰ यथानारंगी रेशमी तिहिसमान कुचदोइ ।
पूरबपुरायन ते पुरुष ग्रहण करतहैं कोइ ॥
सो॰ सुमुखी झरपलगाय आँखमाधवाकोदई ।
चलीआप मिसपाय झपटबाँह बालाधरी ॥

सु॰ जानकेरीतनवोढ़न की छलिकैगहि माधवाबालसकेली। सोहिलखी बिलखी तबहीं जबहीं सुमुखी धरिबांहढकेली। बोधा छुड़ायो खरैपहुँचातब हायकह्यो वहबालनकेली ॥ येरीअरीये सखीसुनिये इहिधाममेंमोहिं न छोड़अकेली ॥

छंदत्रोटक । तियचाहतबाँहछुड़ायभजों । पियचाहत है कबहूं

नतजों॥कसिकैससिकै रिसचित्तधरै। ननकारबिकारन वोरकरै॥ जबहींपियकी बाँहपियनाथगहै। तबहीं तियवासोंछोड़कहै॥पग केछुवतै अकुलातखरी। मुखसे निकसै सखी हायमरी॥ करछूट- तबाल उठायचलै। तबमाधव पीनउरोजमलै॥ पुरलोगन को डरबालहिये। बिगरैसोरंचकशोर किये॥ पियसों बिनवै जिन बांहगहौ। तज औरसबै हठसोयरहौ॥ हँसिये खेलिये कहिये बतियां। रतिनाथ न हाथधरै छतियां॥ मदनज्वर माधवाबूड़ रह्यो। भयको तजिकै निःशंक गह्यो॥ अति कोपित कंथभयो तबहीं। थहरानलगी बनिता तबहीं॥ पटुचापिरही कसिजंघद्दु- वो। पियसों बिनवै जिनअंकछुवो॥ बलकै करसोंकुचचापिर- ही। पियतो घंघराकी फूंदगही॥ झकझोरत छोड़त जोरकिये। लपटी भयलाज न बालहिये॥ करिमैंथिर पारदजोरखिये। नव- ढ़ातियको रसज्यों चखिये॥ घुंघुरूरवघायलसेबिहरै। जनिश्रोणि तस्वेदप्रबाहढरै॥ कुचशूरभले रणमाहलरै। दोउजंघ सुजानहु- तैनटरैं॥ बिथुरे मुतिआइमिसो न धरै। त्रिदशांजन फूलन वृष्टि करै॥ अतित्रासभयो तियके हियमें। तबमाधवजान गयोहियमें॥

दो॰ रतिमें रतिपतिसोंकरत कारनबेपरवान।
पैमुरनाहींकी कहन माधवसकत जवान॥

स॰ केलिकरी सिगरी रजनी पहफाटत दोनोंउठ अकुलातुहैं। कैकहुनींदउनींदे खुले जगकी भयतेनहिं धीरधरातुहैं॥ बाधार- हे चकचौंध हुवो उठिजैबेको दोनों हियेसकुचातु हैं। ऐसेथके छबिकेरसमें लपटाय गरेसों दुवोगिरजातु हैं॥

दो॰ केलिकरी सिगरी निशा निशानमानी चित्त।
साहसकै माधोचल्यो मोहिंबिदादे मित्त॥

चौ॰ सिगरी रैनकेलि तिन कीन्हीं। भोर टेरतमचुर ने दीन्हीं॥
चाहत उठो उठो नहिं जाई। रहेदुवो तिय सों लपटाई॥
हिय सों छूट सकत हिय नाहीं। गरेलगे दोनों गिरजाहीं॥
भोर भये जगकी भय होई। बिछुरन क्योंसाकिये दुखहोई॥

सो॰ अहोप्रिया सुनप्रान मोहिंजान घर को कहा ।
भये दिवस गुजरान अइहौं इत रजनी समय ॥
लीलावति की बांह आय सखीसुमुखी गही ।
अपनेघरकीचाह डगर चल्यो द्विजमाधवा ॥
रोवन रंग सुरंग अनुरागे जागे नयन ।
छबि छकिभये मतंग बलकन सेझूमतचलत ॥
सरिता केतट आय झलझलान अनुराग युत ।
नौढ़ाको रसपाय मगरूरी दिल पै चढ़ी ॥
माधो करि अस्नान दईअंजुली भानुको ।
पूजा बिधि परवान सोकीन्हींसरितानिकट ॥

(चौपाई बिरहींउवाच)

सुन सुभान यारा दिल दायक । अबयह कथान कथबे लायक ॥

(सुभानउवाच)

अहोमीत ऐसीजिन भाखौ । कथिकै कथान आधी राखौ ॥

(बिरहबचन कथा प्रसंग)

दो॰ सुमिरि २ गुण मित्रके दह्यो बिरहके दाप ।
माधोनल करबीणलैपंचम कस्यो अलाप ॥
यथामकर संक्रांति को यात्री चलत प्रयाग ।
त्यों नारी सब नगरकी चलीं बिप्रअनुराग ॥

भुजंगप्रयात । सुनौ बिप्रको ज्ञानकुलकानछंडी । नारी नगर की राग अनुरागमंडी ॥ हतीं जो जहां रूपजैसे जहाँते । चलींदौरिसोलाज त्यागे तहाँते ॥ चलीं माधवा पासको बालजातीं । हंसैं तालदै दैन काहूसकातीं ॥ छुटेबार बाँधेनलज्जा सँभारैं । चहूंओरते माधवा को निहारैं ॥ जकीसीथकीसीचकी चित्त डोलैं । रजाचित्तको तौ मजाकोनखोलैं ॥ करयो जातनाहीं अचंभौसोभारी । न जान्यो कियोमाधवाहालकारी ॥

दो॰ घर २ कूहरसीभई कूहरही पुरछाय ।
ऊहर सब कूहरभई बनितनलगी बलाय ॥

चौ० अचरजयहै नगरमेंगुन्यो। जोनहिंकाहू देख्यो सुन्यो॥
सोवत बाल माधवैटेरै। जागे ते सरितातटहेरै॥
वेमजकूर डगर में ठाढ़ी। हँसतीं कहा कौन सुखबाढ़ी॥
एकहि आपु न सोवतराती। बिरहसुराहनार सबमाती॥
रोवैं हंसैं चहूँदिशिधावैं। एकैखड़ी गलिनमें गावैं॥
एकै बूझैंसबही येही। तुमकहुंदेखो बिप्रसनेही॥
सो० उनमादी सबबाम लाजतजे ब्याकुल फिरैं।
भूलो सुत पतिबाम किय माधव जादूगरी॥

झू०। दृग एक अंजन आँजिकै एकैचलीं अकुलांय। एकै महावर देत बिसस्यो दयो एकईपांय॥ एकै अन्हात उमाह बाढ़ी चलींबसन चुचात। एकै लिये करमें बिरी तेहू बनै नहिं खात॥ एकै लिये करमें कसौनीसो कसी नहिं जाय। उढ़नि यालपेटे शीश सों अरुकंचुकी लियराय॥ शिशुतो पुकारैंद्वारमें भरतारखोरनमाहिं। द्विजनंदकीपहिरैंदगीसरमेंदगीनहिंखाहिं॥

चौ० टूरतहार बारनहिं बाँधे। उघरोशीश कंदला काँधे॥
एकै करमें लिये मथानी। एकन छोड़े माटीसानी॥
एकै लोईकरमें लीने। एकनके करगोबरभीने॥
एकै नदीतीरजो नारी। बसनत्यागिउठिचलींउघारी॥
जलशिरधरगेहकोजाती। जलढरकायचलींउनमाती॥
एकैलड़िकैछीर पियावत। चलीं निपटबहरोवतआवत॥
दो० तनमन बूड़ि बिरहमें मूर्छित ह्वै गिरजायँ।
सरिताके तटकामिनी बिनजल गोताखायँ॥

त्रोटकछन्द। सरिता तटबाल बिहाल फिरैं। अपने पटसोंफँदि फैलिगिरैं॥ दुख औसुख जानि कछू न परयो। बनितानि कहा हियहेतुधरयो॥ जो जहाँसो तहाँ चकचौंधिरह्यो। आश्चर्य कछूनहिं जात कह्यो॥ सबको लखती सबमौन गह्यो। यह बेद न भेद कछूनकह्यो॥

दो० करनाटी माधो भयो बीणा के सुरधार।

डोलाकैसी पुतरियाँ नचींनगरकी नारि ॥
सो० माधोनलको चाहि तनछाया बनिताभईं।
मौनगहै डरपाहि माधो घरको पथलियो ॥

छन्दसुमुखी। जिहि दिश चलै माधो मित्त। तित २ चलैं व्याकुल चित्त ॥ रंचकचेतन चित्त माहँ। नारि भईं द्विजकी छाहँ ॥ जेहि ओरमाधो जाय। तेही ओरबहैबलाय ॥ बाढ़ीचित्त में यह शंक। अबमोहिं वृथालगत कलंक ॥ कबहूंसुनै ऐसी राय। बिछुरन मित्तसों पड़जाय॥ माधोचित्त यहभयमान। छूटि गोगृह लख्यो नहिं आन॥ बनिता लगीं अपने पंथ। चीन्हें पुत्रसोंदरकंथ ॥ बाढ़ोशहरमें यहशोर। माधो है सहीचितचोर॥ जादू है कछूयह कीन्ह। बनिता भईंसब आधीन ॥ अब हम नगर छोड़ैं क्षिप्र। कै कढ़िजायँ माधोबिप्र ॥

दो० लखि अद्भुतकृत बिप्रको पुरजन रिसउरआन।
दरवाजे महराज के गये फिरादेठान ॥
द्विजकी वहबारीभई पिछलीकथा बिचार।
पड़वाकी बिनतीगये घुड़वाआये हार ॥

इतिश्रीबिरहबारीशमाधवानलकामकन्दलाचरित्रभाषा
बिरहीसुभानसम्बादेबालखण्डेप्रजाफिरादीनाम
सप्तमस्तरंगः ॥ ७ ॥ (इश्ककज्जाल नाम)

(अष्टमतरंग प्रारंभः)

यह अष्टमेतरंग में सुन सुभानयह स्वाद।
माधोनल अरुप्रजासों नृपसों होयबिवाद ॥

चौ० शोरसुनत राजा उठिधायो। पुरबासिनसों योंफरमायो॥
दिलकी कहोदरद नहिंगोवो। को असिचाहत शहरबिगोवो ॥

झू०। करजोरके बनियाउठे बलराम ताकोनाम। तेलीतमोली संगलै कीन्हें अनेक प्रणाम ॥ तजिलाज को महराज सों उच्चरोसब दुखसाज। सुननाथ दुखकी गाथ जासोंहोत शहर बिराज ॥ पुरबीण २ लिये फिरैद्विज माधवा तिहिनाम। मनभाव

ताकीकान तजिउठि दौरतीं सबग्राम ॥ हमतौ न जानैं है सही जादूकछू वहपास। तनछांहसी डोलैं त्रियानहिं डरहिं प्रीति प्रकास ॥ हम रहैं नाहीं नगर में अबबृद्ध बालकजान। कहिकोसकै बिनकाज को निशिहैसकी कुलिकान॥ हगदेखबीको कहैनहिं सुनी काननबात। है कियो जैसोमाधवा इहि नगर में उतपात॥ नित बिप्रबीण बजावही नितबिकल होतींबाल। भयलाज पुत्र भरतार तजिगृह काज फिरहिं बिहाल॥ बिटिया बहू बनिता बिमोहीं छोड़के सबत्रास। धौं प्रेतलागो माधवा छुटिचेत गवो अनयास॥ आड़ी रहैंनहिं गेहमें छांड़ीसुलाज बनाय। ठाढ़ींसो बिप्रसनेहसे उठिदौरतीं अकुलाय॥ दै दै कपाटन बेड़ियेकैकेसो यतन अनेक। मुखमारिगारि उचारिकै करजोरि जाहिं सटेक॥ तरुणी सबैमदमत्त सों मदिरा पियैंद्विजगान। गिनती है नाहिं महावते नहिं अंकुशै कुलकान॥ वेरीनराखे लाज की उठिवन्द ने सुखसाज। कुलको कि लावो तोड़के भजिजाय योंकरकाज॥

सो॰ सुनसाहिब यहपरि बलीराम बानिक कही।
धरेबनत नहिंधीर बनतहमैं त्यागे शहर॥
सुनि बानिकन के बैन महाराज उत्तर दियो।
कहयो छानकर लैन हैं जु बुलावत बिप्रको॥
कछू असहसा काज करैफेरि पछिताय सो।
ज्यों नृपहनिकर बाज पछितानो उरशूलधर॥
नकुल हन्यो द्विजएक बनिकन दे द्विजनन्दनै।
स्वामित करत अनेक श्वान सिपाहीने हन्यो॥
सिंह पिंगलक साहि संजीवक वृषभैहन्यो।
भयो दरदपुन ताहि सोसुनाहित उपदेश में॥

चौ॰ द्विजको बोलिभूप पठवायो। माधोराज सभामें आयो॥
सोहै पाग जरकसी तुर्रा। जुल्फबावरिन कोलखिजुर्रा॥
केशरखौर भाल में दीन्हें। पगनपांवड़ी लकुटीलीन्हें॥
जलजकंठुका मुक्ताकानन। शरदचन्द्र समसोहत आनन॥

मुखतमोल अधरन अरुणाई। बिहसन दशनतड़ितछबि छाई॥
जलसुत गजरा दोइकरमाहीं। फूलन के झलाबहुआहीं॥

दो० हाटक सोंतनु बिप्रको लसत त्रिगुण जियार।
जन सुमेरकी अंगते धसी सुरसरी धार॥
श्वेत धोती पट्टकाजरद करमें लीन्हेंबीण।
मनोमोहनी मन्त्रने नरतनु धरयो प्रवीण॥

चौ० हती गुसासबके हियमाहीं। काहूलख्यो आवततेनाहीं॥
दै अशीश तंडुल द्विजदीन्हें। सो नरईश शीशधरिलीन्हें॥
करिसनमान पास बैठायो। बीरा दै बृत्तांत सुनायो॥
प्रजालोग इहिभांति बखानत। माधोनल कछुजादू जानत॥
बीण बजाय बामबश कीनी। अनुरागीं फिरतींरसभीनी॥
तेरेतनलज्जाताजिहेरैं। हँसि अठिलाय नामलैटेरैं॥
माधो २ सोवत कहतीं। स्वप्नहुं बाल बिकल जो रहतीं॥
तनकी छांह भईसँग डोलैं। हैंकासों ना दिलकी खोलैं॥
मूर्च्छा खायगिरैंपुनि धावैं। असनबसन तजितोहित आवैं॥
कैयो सहसन गरकी नारी। तेरेसंग फिरैंसुकुमारी॥

दो० सत्य कहो जबानसे जोहै करयो उपाय।
कौनमंत्र मोहीं नरींदीजै अबैबताय॥

माधवाबचन।

महाराज गोबिन्दसुनहो गुनहीसौबार।
याबूझो बनितानिसों मोहींकहा बिचार॥
हंस्योन बोल्यो जोरिहृगदीन्हों नहीं जबाब।
बूझो धों बनितानसों मोढिगलयो सबाब॥

राजाबचन।

किहिकारणहेरो हंसो जगप्रकाश केहेत।
बशीकरन पढ़िबीनमें चित बित जीहरिलेत॥
हैप्रबीण बीणा लिये मीना कृत तुवनैन।
मौनगहे करबो करत गूँगाकीसीसैन॥

माधोबचन।

मेरेचित नरिनकी चाहन एकौ अंग।
दियै दोषको देतहै उड़ि २ परत पतंग॥
अपनेदिलकी खुशीको हौंगावतलै बीण।
शिला गिरैजो सरगते ताकाकरै प्रवीन॥

प्रजाबचन।

धूर्त्तनरनकी रीतियहबहुत बजावत गाल।
बिनजादू कबहूं नहीं होवै ऐसोहाल॥

माधवबचन।

किहिकारण येरागको उठि दौरैं अतुराय।
राखौकैद नारीनको भयदिखाय समुझाय॥
मोकों तुमसाँचो कर पिछले का परमान।
धोबिनसों जीतैंनहीं मलत खरी केकान॥
पाटी निरबकसारकी कहत गढ़ी किहिहेत।
बालकसों फोरवायकै दोषबढ़इयै देत॥
मोहूको आवतहँसी सुनि २ इनकेबैन।
जैहैबस्तु बजारमें कहतबाणिकसोंलैन॥
बलिजैये जिनके भिया जिन के गुणये आँय।
कामकरावैं हारमें बिषबनियाँ परखाँय॥

राजोबाच।

माधोनल करिकासकतजोनहिं आवैं बाम।
परखइयाको खोरका घरको खोटोदाम॥

प्रजाबचन।

महाराज नीकीकहीयह बिवेककी बात।
द्विजकोगांव बसाइये हम सब निकरेजात॥
बनिता सब खोटीकरी द्विजको करो अदोष।
कहा चलतहै प्रजाको महाराज पररोष॥
जादूबश केहरकरी बाँधे आवत ब्याल।

जागत मुवौमशानहूं लखि जादू को ख्याल ॥

मंत्रीउवाच।

महाराजकोराज की चाह होय सौबार।
तौपुरबासी राखिये द्विजको देहु निकार ॥

माधोबाच्य।

कस्तूरी मृग नाभिमें कीन्हीं विधिन बिचार।
करते रसना चुगुलकी लेते बधिकनिकार ॥
चलि आयो युगचारते बौननते संचार।
राजनके दरबारमें चुगलनको इतबार ॥

(राजाबचन)

माधोको अरु प्रजाको कितको कीजै शोध।
मंत्रिन सों राजाकही होयननीति विरोध ॥

(मंत्रीबचन)

सुन माधव द्विज सत्य कहु अपने जियकोजौन।
उमहैं त्रिय तुवराग सुनियह धौं कारण कौन ॥

(माधोबचन)

बसत जिन्होंके चित्त में राधाकृष्ण मुरार।
तिनकोनर नारी कहामोहत हैं कर्त्तार ॥

(प्रजाबचन)

चौ० व्यभिचारी ज्वारी मतवारो। सुकबि जगाती दूतबिचारो ॥
उत्तर इन्हें बहुत कर आवै। आगलाइ पानी को धावै ॥
हारे तो चित बित हरिलेहीं। उलटो दोष तासु को देहीं ॥
नगर सबै जिनको यश गावै। तिन पै कहा न ऊतर आवै ॥

दो० माधवनल के प्रजा के सुनि मंत्रिन के बैन।
चाह्यो गोबिन्दचन्द नृप परचौ तासुको लैन ॥
कही अखाड़े नृपति के षोड़श सुमुखी नारि।
चारिपद्मिनी चित्रनी हास्तिशंखिनी नारि ॥

(पद्मिनी यथा)

क० कारे सटकारेबड़वारे केशजाके दोनोंभृकुटी पिनाक देहकुं-दनसी गाई है । कमल दल लोचन बिशाल मुख चन्द्रमा सो अधर प्रबाल बाणी पिकसी सुहाई है ॥ बोधा कबि सुन्दर उरोज नारंगी से नख अरु हथेरी सुवास अतिछाई है । गवनमराल सुकु-मार राखै शुद्ध तन धन्य ताके भाग्य जाने ऐसी बालपाई है ॥

(अपरंच)

छप्पय । दीरघ केश कटाक्ष उरोजजंघा नितंबभनि । लोचन रसना अधर लाल नख करत खार गनि ॥ सूक्षमतन अंगुली सुढार बानीकिटकहिय । नासा उन्नचित सकल बस्तर चित चाहिय ॥ सुकुमारि चार चाहत सुमनि देह सुगंधमराल गति । लज्जामान मनोज समय पद्मिनिलह मति ॥

(अथचित्रिनी)

चंचल चित परबीन सलज गोरी गुमान अति । भारीभौंह कटा-क्षमाल घुँघुरारि केशमति ॥ केकीर व कृश अंग उरजजंघानितं-बबढ़ि । सुरतहीन ग्रीवा कपोत साजत भूषण मणि ॥ चितचाह नाहिं पीरे बसन दिसाहित सुकुमारि गनि । लघुगंध देह छुंछुम-क छुभीन कंठचित्र भनि ॥

(अथशंखिनी)

गोरेतन ऊंची कठोर बाणीआतुर गति । नासा हगसम केश देहदुरगंध कूरमति ॥ कुच नितंब अतिपीन बसन भूषण अति चाहत । नहिं जानत मौन सुजान प्रेम अति चाहत ॥ जेहि संयोग यह गुण बसहि । बरजायकामशंखिनी सो जो ललाट विधिना लिखहि ॥

(अथहस्तिनी)

नासा उन्नत भालकेशरूखेदीरघतन । कोता गरदननैन भूरि भोजन चाहतघन ॥ समकुच जंघ नितंब बाँह लम्बोदर जानहुँ । गोरेतन बहुलोभमान अतिकठिन बखानहुँ ॥ गतिगयंद आतुर

मदन कूरसुरीत बिपरीतरति। बलवृद्धि बुद्धिदुरगंधतनु अतिही रंगकरिनीकरति॥

दो० सोमैं तादिन बरणिहौं कोककामको धाम।
जबमाधोनल आयहै फिरपुहुपावतिग्राम॥

(अथनायका लक्षण)

दो० शशकुरङ्ग कहिबृषभबहुरि तुरङ्गक जानि।
चारिभाँति बाला यथा नायक चारिबखानि॥

स० विद्याविनोद पढ़ैबहुधा लखिबैसकिशोर बिराजतसोई। है बिरहीकरबीण लिये मकरध्वज तासुसमाननहोई॥ बोधाबिराजत राजसभा द्विज नादउबेदबखानत दोई। ढूँढ़िफिरौं सिगरी बसुधानलमाधवा सोनहिं नायककोई॥

दो० रहैंअखाड़े नृपतिके षोड़श बाला तेह।
अंतरकपाट लगवायके नृप बुलवाई तेह॥
इतआयसु द्विजकोदियो माधवतज्योविषाद।
करवीणा संयुतसरसमोहिं सुनावोनाद॥

चौ० योंसुनिमाधव बीणालीन्हों। फिरअलाप पंचमकोकीन्हों॥
सुनतैबालसबै अकुलानी। शिथिलदेह मुखकढ़तनबानी॥
बिन्दुखलिततनमन अनुरागीं। माधवओर निहारनलागीं॥
बाला एक रूप मंजरी। ताने एक चातुरी करी॥
अपनेकरकी उँगलीलीन्ही। सोलैकैदशनन बिचदीन्ही॥
बड़ीपीरताके तनबाढ़ी। सोनाबाल बिरहतनबाढ़ी॥

दो० अकबकाय राजारह्यो मुखते कढ़तनबैन।
जो न काननहूंसुनी सो देखी निजनैन॥
प्रजाजाय माधोरहै दूजे द्विज अपमान।
मंत्रिनसोंराजाकही करियेकौनप्रमान॥

(मंत्रीवचन)

चौ० उजरतशहर विप्रकेराखे। का प्रभावबहुआरकेभाखे॥

एकराखि सबहींतजिदीजे। कैसे यहप्रमाण हमकीजे॥

दो० गुसाजान महराज के मनमें माधव बिप्र।
माल कौवस्तिक गायके ताहि रिझायो त्तिप्र॥

चौ० तबपुनिसाहिबयहीबिचारी। किहिअवगुणमाधवैनिकारी॥
एकाबिप्र गुणमयपुनिसोई। याके गये अयशजगहोई॥
प्रजा गये उजरत रजधानी। दुवो भांति यह बात नशानी॥
सुनियों हाल माधवा बोल्यो। दरद आपने दिलको खोल्यो॥

(माधवबचन)

दो० कहासिंह गजराजकी बलि न देवता लेत।
पै अतिदुर्बल देखिकै अजया सुतको देत॥
अरुपुनि सबजग कहतहैं कोमरदे मजबूत।
हट पटाय के लगत हैं ओछे पिंडे भूत॥
तीनजनै इकसूत हो बुकैर लाये माख।
सोसुन हित उपदेशमें मुलतानी कीसाख॥
नारी आननहौं लखी करनारीतज यार।
मोहिंको नाहक धरतहैं भागे पीठपहार॥

(राजबचन)

दो० प्रजात्याग कीक्या चलीसुतदारा तजिदेहुं।
हौंका गुनी निकार के अयशदुनी में लेहुं॥

(बिरही बचन)

दो० सुनसुभान नरकरत हैं यदपि दूर अपराध।
तदपि प्रकट दुखदेत बिधि छिमत नहींपलआध॥
कीन्हे सबकी देहमें बिधि दोनों दृगदूत।
येप्रत्यत्त्त लक्षित करत नेह नशा का सूत॥

दंडक। कीजै इकंतहा तंतमतो मद प्रेमछिपाइबेको सबनेत हैं।आंखी में रहौंउरअंतर ह्वै तऊना बचैचालिकै सुधिलेत हैं॥ बोधा बिरंचि बिचारिरहे सबके जियकी येन२जीकी सचेत हैं। देहमें नेह नशानकरै दृगदूत दशा सबसों कहदेतहैं॥

दो॰ गुप्तपाप जग में प्रगट या सुभाय होजाय ।
जैसे नशा शरीरको नैनन झल कै आय ॥
इतिश्रीमाधवानलकामकंदलाचरित्रभाषाबिरहीसुभानसम्बादे
बालखंडेअष्टमस्तरंगः ॥ ८ ॥
इश्क सारखी नाम ॥ अथ आरन्य खण्ड ॥

नवमस्तरंग प्रारम्भः ॥

छंदसुमुखी । लीलावतिने यह सुधिपाई । माधवकोनिकरावत राई ॥ जगभय छोड़के कुलकान । नृपपै चली अतिहिरिसान॥ करगहि माधवाको लीन्ह । इहि बिधि शोर तिहि ठां कीन्ह ॥ को समरत्थ लखि इहि बार । देहै माधवाहि निकार ॥

छंदनाराच । गहे सुबाँह बिप्रकी सकोपबाल योंकहे । बतावमी-तमोहिं तोहिं काढ़ि देन कोकहै ॥ शापदेउँ तासुको सुना सो हालही करौं । उतार शीश देहते हजूर राइ के धरौं ॥

सो॰ अद्भुत लखि महराज मौन गहे मौनै गयो ।
सचिव सबै शिरताज तिन द्विज कोदीन्ही बिदा ॥

चौ॰ राजाज्वाब कछूनहिं दीन्हों । तबसबमंत्रिनयों मतकीन्हों ॥
पाती नृपके नाव बनाई । सो माधव को दै पठवाई ॥
बीरा तीन पान के कीन्हें । सो लैदूत माधवै दीन्हें ॥
चिट्ठी माधवा बाँची जबहीं । ऊभीश्वासलई द्विज तबहीं ॥

दो॰ आनराय गोबिन्दकी सुनी माधवा बिप्र ।
देश हमारो छोड़ि के जातरहौ तुम क्षिप्र ॥

छप्पय । वनिताको बशकहा पुरुषअपलोकलगावै । सेवकका बशकहा गुसासाहिब फुरमावै ॥ बालकको बशकहा जननिजो बिषदै मारै । दये को दान न देय भिखूको यतन बिचारै ॥ प्रजा निकारै राइ तो कोसहाय ताको करै । यहजान माधवा धीर धरि का चिन्ता चित करि मरै ॥

स॰ पक्षिनको बिरछाहैं घने औ घनेबिरछानको पक्षी हैं चाहक ।

मोरन को हैं पहारघने औपहारन मा॰ [illegible] [illegible]लिबाहक ॥ बोधा महीपन को मुकता औ घने मुकतान को राइ। [illegible]
जोधनहै तो गुनी बहुतै अरुजो गुनहै तो अनेक हैं गाहक ॥

दो॰ जिहि पब्बै कर पै धरी करकी करी गुहारि ।
कहै मामोदीन को हरी ऐसो मुरारि ॥
परलगाय पब्बै उड़े अरु पश्चिम ऊगै भान ।
जो विधि लिखी ललाटमें सो बिधिहोयनआन ॥
दै अशीश महराज को ऊभी लई उसास ।
त्यागि पुरी पुहुपावती माधव चल्यो उदास ॥

छप्पय । जिहि सरवर जल अमल पान कीन्हो दिन प्रति अति । जिहि सरवर को परशि करौ परसन्न देहगति ॥ जिहि सरवर रसरंगसंग सहबासन कीन्हो । जिहिसरवर अवकाज सरस मुक्ता फल दीन्हो ॥ कबि बोधा सो सरवरसदा पूरण निधि युत रहेउ । माधव मराल हंसिराज को है अशीश मारगगहेउ ॥

चौ॰ सुनसुभानयारो दिलदायक । अबयहकथानकथिबेलायक॥

(सखीबचन)

चौ॰ अहो मीत ऐसी जनि भाखौ। कथिकै कथान आधी राखौ॥

(कथाप्रसंग)

चौ॰ डगर चल्यो माधो द्विज जबहीं । गहीबाँहलीलावति तबहीं॥
ताको पुरबासिन धरि लीन्हों । माधव बिप्र पयानो कीन्हों ॥

छंदसुमुखी । बाला गईअपने गेह । लज्जितभयो ताको नेह ॥ ताके तात यह सुनि बात । लाग्यो करनअति उतपात ॥ ताको नग्रबासीआय । लागे सीख देन बनाय ॥ याको वृथा दीजतुदास सिगरेनअद्विज को सोस ॥ बनितन की कहानी कौन । मोहै पुरुष अचरज तौन ॥ काहूदोष ना यहधार । भूली मंत्र के बशिनार ॥

दो॰ धनकोनाशन गायबो घरको लटो चरित्र ।
बटै मान दरबार में प्रगट न कीजे मित्र ॥

छंदपद्धरिया । [illegible] प्रजा कोमानतत्त । तबमौन गह्यो द्विज [illegible] तिय भवनजाय सखि को बुलाय । गहि कंठ कियो रोदन बनाय ॥

चौ० रोवत बाल विरहमद माती । ताकेरोवत बिरहनछाती ॥
अबकहुसखी करौं मैं कैसी । भईदशा माधो कीऐसी ॥
गिरिते गिरों मरौंबिषखाई । तनुतजि मिलौं माधवैजाई ॥
मरोंमिटै दुख मेरो प्यारी । कैसहुप्राण कढ़ैं इहि बारी ॥

दो० कहै तियालीलावती सुन सुमुखीसखि बात ।
कहांजाय गो माधवा तैं देख्यो सखिजात ॥
एक सँदेशो मीतको पहुँचावे तू मोर ।
आजभवन मेरेवसे गवनकरै उठि भोर ॥

सो० माधवनल के पास तुरतगई सुमुखी सखी ।
कीन्ही कथा प्रकास जो लीलावति ने कही ॥

(माधवबचन)

सो० शीश ईश को देउं चढ़ि धौरा गिरि ते गिरौं ।
ढूंढ़मित्र को लेउँ मुवा जियौं पियको सुमिरि ॥
फिरआऊं इहि धाम द्वादशमास बिताइकै ।
कह्यो मोर परणाम हितू भावदी बालसों ॥

दो० गजरा लीलावतीने करते दियो उतारि ।
सो दै माधव मीत को चलीघरैवह नारि ॥
जो माधव नलने कही अपनी कथाकराल ।
सो लीलावति बाल पै सबै बखानो हाल ॥

छंदमोतीदाम । गिरी तिय लैअति दीरघश्वास । भयो सुख स्वादन को सबनास ॥ पुकारत माधवमाधवजोर।करो मकरध्वज ने अति जोर ॥ सखी सुमुखी तियकी परबीन । भली विधि ताहि सिखावन दीन ॥ अहे सुनबाल धरै क्योंनधीर । बिथा सहि चेत नराख शरीर ॥

सो० पीउ मिलन की आश जौलौं घट में प्राण हैं ।

प्राण गये फिरनाश होतदेह अरु नेह ॥

चौ० जेठमास नौमी तिथिजानो। कृष्णपक्ष द्विज कीनपयानो ॥
पुहुपावती पुरी तजिमाधो। चलो जपतकामावरसाधो॥

सो० बाला एक हजार सहससाथ जाके चलैं ।
भाभी के अनुसार जो माधव बनतजि फिरैं ॥

चौ० आफत परी जानपर येती । तजी न मगरूरी दिलसेती ॥
पल २ ध्यान मित्र को आवत । कहै वहै जोई कहि आवत ॥
खगमृगादिलतिकालखिडोलत ।कहियादोस्तहरीहरबोलत ॥
द्रुम २ तर बिलसत द्विजआवै । गाथापढ़िकर हियसोंलावै ॥

(गाथा)

इति बिरंचिमति मंद नाजानतनीत नोतं ।
भावदा बिछुरैदं शिरसि में लिख्यते सोकिं ॥

चौ० बीनबजाय मृगनकोमोहत । तिनके नैनघरी लौंजोहत ॥
देखि सेखि कारे बड़वारे । अनियारे रतनारे प्यारे ॥
हेरन पैन मित्र की पावै । सधे कुरंग रंग सरसावै ॥
शुकसों कहै नाकतूलैनी । पै न भाव तो जोरकहैनी ॥
क्योंगुलाब छबि छावै एती । भावदी गुलतारीजेती ॥
मने करतकलरव दुखदानी । जिनबोलै भावदी बानी ॥

दो० फूलतुराकुनि दाख में बनतै गुजरैचैत ।
फौजदार के फिरतज्यों थानेरहतथनैत ॥

चौ० जोबनसदारहयो सुखदायक । सोबनभयो लाइबे लायक ॥
पूरबदिशा चल्यो द्विजमाधो । कछुदिनगुजरेआयो बाँदो ॥

इतिश्री माधवानल कामकन्दलाचरित्र भाषा बिरहीसुभान
सम्बादेनवमस्तरङ्गः आरण्यखंड १ ॥
इश्कआतसी नाम तरङ्गप्रसंग ।

दशमस्तरंगप्रारम्भः ॥

दो० सुन सुभान ग्रीषमतपन तियतजि चलत बिदेश ।

... सो सागुनो जाहिर यहैकलेश ॥
बटछाया तटतालको शंकर शुभमठ पाय ।
माधवबांदोगढ़ रह्यो चारमासको छाय ॥
चौ० रचिकवित्तशिवकोगुणगावै । शंकमाननाहिंबीणबजावै ॥
याबीणा के गुण त्रिपुरारी । छूटोनगरदेश घरनारी ॥
सर्वसत्यागइसीपरकीन्हा । परनातजोजातयहबीणा ॥
शंकरसोंविनतीयहकीन्हीं । यहबीणामोहिंआफतदीन्हीं ॥
दो० गुणमय बैस किशोर लखिबिरही रूपनिधान ।
बांदो गढ़ बासिन कियो माधोको सनमान ॥
जिहि गुन भुवोमसानहूं चलत धरापर धाय ।
तिहि गुण जियत न यंत्रही कीजै कौन उपाय ॥
चौ० सुवाप्रवीनएकगुणमंडित । तिहिसमानजगआननपंडित ॥
अवतारी अनन्यमतजाकी । तिहिगुणसाधो की मतिछाकी ॥
दो० सुआ कही माधवासों पोनाटकाएक ।
सोकबिबरणी जुदी कर जामें यथा अनेक ॥

छंदपद्धटिका । बटछांह बिप्र ऊपर प्रवीन । गुन कथत गूढ़रस नौमलीन ॥ झलक्यो सो आय आखंडमेह । थर हन्यो बिप्रल खिछानदेह ॥ जीवौन मित्र अस जानजाय । करिये बियोगको का उपाय ॥ दुखकोट कोट तिलकेसमान । बिन मीत बिछोहाब-र्जे जान ॥ इक श्यामघटा दक्षिण निहार । गिरिगयो बिप्रउरशू-लधार ॥ अतिविशद सजल अतिघोर कीन । अति वरहि धरापर बर्जपीन ॥

चौ० भयबश प्रीति माधवामानी । तासों अपनीबिथाबखानी ॥
होयपयोधबिरहिनि दुखलायक । मेरोदरदसुनोतुम नायक ॥
पुहुपावतीपुरी ममप्यारी । नवयौवन बाला सुकुमारी ॥
हिरणाक्षीगजगामिनि गोरी । शशिबदनी सुंदर मतिभोरी ॥
नगनजटितअभरन सबसाजत । दीपमालसीबालबिराजत ॥
दरद भई सबबात बखाने । सो प्रबीन रस के पथ जाने ॥

तासों कहो सँदेशा मोरा। बांधेगढ़ ऊपर पति तोरा॥
तन मन क्षेम चिन्त मतमानो। माधव नल समनामबखानो॥
कहियो मेरी बाला सेती। तेरी फिकर माधवा येती॥
निशिदिन तेरेगुण को गावत। दरशपरश हितज्योंललचावत॥
यहसंदेश प्रिय लों पहुंचावो। मेरेदिलका दरदमिटावो॥
जो तुम कहौ दासनहिं तेरे। येही गुण उपकारिन केरे॥
जो तुम कहौ मनुज हमनाहीं। सो प्रभु इच्छारूपी माहीं॥
जो तुमकहौ बचन नहिं मोही। तौ गराज यह कैसे होही॥
जोतुम कहौ नगर नहिं जानों। सो पुहुपावति नाम बखानों॥
जोतुम कहौ आय क्यों न जैये। सो नृप की भय जान न पैये॥
जोतुम कहौ गुसा नृप काहीं। सो इकचूक भई मो पाहीं॥
मेरी तान नगर सब मोह्यो। यह अचरज पुरबासिन जोह्यो॥
बिन बिवाह मोहीं प्रिय मोहीं। सत्य कहतनहिं गोवत तोहीं॥
यह कारण नृपमोहिं निकारो। सुन बिरतंत पयोद हमारो॥

दो० इहिप्रकार द्विज माधवा कह्यो मेघसों बाद।
पुनिउदास हो बीणगहि गायो सारँग नाद॥
यथा राधिका ध्यानते दुख दारिद्र परात।
त्यों सारँग के सुर सुने घटा न देख्यो जात॥

छंदमोतीदाम। घनोउरझो दुख माधव केर। कह्यो परबीन सुवासों टेर॥ करैवह कोकल मोकल हीन। छटा छहराय लई सबछीन॥ रवैबरही करही कलशोर। घरैतहँचातक पंजरतोर॥ इतेदुखपै न तजे तनप्रान। भयो चिरंजीव रह्यो दिनमान॥

दंडक। ज्ञानध्यान सुयश सयान थिर नाहीं प्रीति रीतिथिरनाहीं कैसे धीर धरियतु हैं। राज थिर नाहीं लोकलाज थिर नाहीं शोकसाज परियतु हैं॥ बोधाकबि बर्षा प्रकाशी पराधीन परबीती पै बिरही की ज्वाल जरियतु हैं। करम गुनाहीकलिकालमें मनुष्य होके ताहीपैजीबेको यतन करियतु हैं॥

दो० सुनसुभान नर देह धरि कलिमें सुखी न कोय।

नृपरोगी परजानिधन गुनी बियोगी होय ॥
चौ॰ इहिबिधिमासअसाढ़बितायो। चलिसुभानतबसावनआयो
संयोगी बिरही नर योगी। इहि सावन सब होत बियोगी ॥
छंदमोतीदाम। लग्यो तरुतावन सावन मास। प्रजारतिकै
मकुसुंभिय बास ॥ चलै बदरा मढ़ि गर्जत नील। मनौ मदन
दल साजत पील ॥ बड़ी सरिता नव यौबनरूप। निहारत या
रहि ते तनतूप ॥ करै बिरही पिक चातक शोर। चलै त्रिविधा
लखिपवन झकोर ॥ सदा सुखदायक जे लखि बीर। भये इहि
श्रावन दावनगीर ॥ कँपै मनबधू लखै न उपाय। मनौ बिरही
तनशोणित आय ॥ हनै शरपंच गहै कर काम। कर्यो विरही
गोहिं श्रावन राम ॥ नहींदिल इश्क देखत कोइ। कहौं अपनो
दुख का सँग रोइ ॥ हती इक कामिनि तीर तड़ाग। सुन्यो ति-
हिमाधो को अनुराग ॥ कहै वह बालअहे द्विजदेव। कछू कहि-
हौ अपनो निज भेव ॥ भयो जिहि कारण छिन्न शरीर। कहौ
अपने तनकी यहपीर ॥ करौं पलमें तुव बेदन दूर। बतावहु
हाल सजीवन मूल ॥ तिहि दियो तब माधवा उत्तरबेश। नहीं
वह औषध है यह देश ॥ लगी चितकी हितकी यह जान। कहै
सबरोगहि योग बखान ॥
स॰। दूरहै मूर अपूरबसों शशि सूरजहो कबिहोकि निहारी।
अंदर बेली नवेलीअबै कहि कैसे मिलै बिन योग दिवारी ॥
बोधा सुनाहै सुभान नहींतू करि कोटिउपाय थकौ उपचारी।
पीर हमारे दिलन्दर की हमजानत हैं वह जाननहारी ॥
सो॰ फिरबोली वह बाल है कैसो तेरो हितू।
सहियत बिरहकरालजाके हितनचेतिजित ॥
दंडक। पगन परीरी प्रानकाहूसोंपगैजो चूरहोतमगरूरीही
मगरूरपै जगीर पै जगीरहै। हेरन हँसन बतरैबे को कौन स्वाद
उनमादनतें और पीर तनमें पगीरहै ॥ बोधाकबिजोहै मेरो हितू
के सुहाती जीवताही में खगो रहै सोई जीमें खगी रहै। कैसी

करौं कहां जाउँ कासौं कहौं दई कहूं मनतौलगैना चिन्तमन में लगीरहै ॥ दिलवरहोय तासों दिलकी बखाने पीर हीन दिलकै-सो दिलदरदकी जान है । जिनके लगो ना सो का पीर जानें घायल की पीरकीघाय प्रमानहै ॥ बोधा कबि बिछुरी जों मालती न बेलीतोहै औरऊकली तौ नदरदबखान है । भूले जिन भरम गमावै चंचरीक कैसे अपत करील तेरो दरदबखान है ॥

दो० त्योंबिचारमाधो दयो ताबनिताको जवाब ।
आशिक इश्क न पाकको वरणतनहीं सवाब ॥
योंसुन सबबनितागईं अपने अपनेगेह ।
कह्यो बिप्रके चित्तमें अवचर एक सनेह ॥

इतिश्रीमाधवानलकामकंदलाचरित्रभाषाबिरहीसुभानसम्बादे आरण्यखंडेबांधोगढ़अस्त्रातितदशमस्तरङ्गः १० ॥

कहर ख्याला नाम ॥ अथप्रसंग ॥

(ग्यारहवाँतरंग प्रारंभः)

चौ० बनितन अपनोमारगलीन्हों ।माधवफिरऋतुवर्णनकीन्हों॥
सुनोप्रवीणमित्रमनभावन।दाहकअति बिरहिनकोसावन॥
कुसुमी चीर बामका साजे । इन्द्रबधूके वेष बिराजै ॥
करैं गान मङ्गल अतिनीके । सुखदायक निजपतिकेजीके
झुंडनझुंडन आगे आवैं । मो बिरही को मन ललचावैं ॥
पैना चुभै चित्तमें कोई । खूबीदेख दून दुख होई ॥

दंडक । चुनरी चुनाव दारपहिरैमृगाछीबनी ठनी झुंड झुं-डन तड़ाग तीर आवहीं । केसरसे अंगअंगरागकरै केसरकोनीबी कसिनीके हमारी जानलल चावहीं ॥ बोधा कबि जोपै नहींनै-न चित्त आपने में तो ये सबै झूठ झूठ ख्यालको बनावहीं । ता-उदौबियोग मनभाउदो न देखो यातें सावन दीखबौही तू हम को न भावहीं ॥

दो० इहि प्रकार गुण कथन करि बीत्यो श्रावणमास ।

पुनि भादोंकीघटालखि माधो भयो उदास ॥
चौ० मघामेघ मुगदरसमलागति । छरहूंबर दवागिनरदागति ॥
मंत्रिहीन नृपकी रजधानी । त्यों भादों की रात बखानी ॥
छंदछप्पद । पंथथकित दिशि बिदिशि रहत अंधेरोरैन दिन । पाप पंक सब ठौर नहीं शशिसूर लखितादिन॥नरिया दिनसंयोग कोक बूड़त बियोग निधि । जल थल सबै मलीन जातजलजात गलित सिधि ॥ भयो बिशेष लखि राजमें देश तज्यो कोकलन तब । रिझवार भूप भादौं भवन सदा दुरावत बात अब ॥
चौ० चातकएकअधम अभिमानी । करषतजीवपीवकरबानी ॥
रहत मयूर धरत जक नाहीं । को बरजै वर बैरिन काहीं ॥
गरजत सिंह घटा घनघोरत । पवन प्रचंड मूलतरु तोरत ॥
झिल्ली गन झनकार अनैसी । हिय में उठत हूलजन ऐसी ॥
कहु प्रवीण विधि पै कहकीजै । पियबिछुरै बरषाजिमिजीजै ॥
बरषाकीविधिखबरन कीन्हीं । लगदृगनेहबिछुरन लिखदीन्हीं॥
दंडक । भालमें लिखत भुलाने मेरी बेर कहूं माखनकेबीच फटकार चहियतु हैं । सोना चूकतेरी बोधा भाव तो मिलोईना फिर बिछुरन जानयाते खुशी रहियतु हैं ॥ जाके बड़े नयन में समाने मेरेनैन तासों बीच पारदीन्हों कैसे धीरगहियतुहैं ! भईनारंज तोहिं करुणा कसाई तूं तो ऐसेनिरदईसोंदईकहियतुहैं॥
सो० भादों की यह रैन होती बड़ीबिहार की ।
ढिगहोती मृगनैन बरषाहोती मैनमय ॥
दो० तौलौं तो जीबो भलो कहा सांझकहभोर ।
जौलौं प्यारी बगलमें करमें उरज कठोर ॥
सो० बीत्यो भादौंमास बरषाऋतु मांदी भई ।
कीन्हों जगत सुबास सरबिवेकी भूप जिमि ॥
छप्पय । जल थल अमल अकाश कमल प्रफुलित सुवासमय । रबिप्रकाश तमनाश पंथ पंथनि सुवासमय ॥ प्रथमकाजदै बालफेर जलजा छरआई । सरसमाज भुवलोग पिंडल-

हिये अघाई ॥ छायो बिवेक संसार सब चक्र बाक मोदि-
तरहत । सामर्थ्य शरद नर नारशोभाबिवश मोहियदहत ॥
सो० पचतन बड़ तिल आध भोजन निसकरारतैं।
पलमें करत असाध पित्त कोतवाली करत ॥
मेघ बढ़े असमान मढ़ैआय दशहूं दिशा।
छोड़त फोरतकान तिन्हैं फोर मारतनृपति ॥
शीतल मंद सुगंध त्रिबिधबयारबहार युत।
हौं न लहत आनंद पीनकुचा संयोग बिन ॥
दंडक। सुनहे प्रवीन पीर कौनपै जनैये जोपै देखत ना नि-
कट सलोनी नोनी धनको। ध्यानके धरत धड़ाको ऐसोलागो
बिना प्यारी संयोग समझाऊँ कैसे मनको ॥ बोधा कबि भवन
में कैसे हूं रह्यो न जाय बिरहदवागिते न जायो जाय बनको।
शरदनिशामें चन्द निश्चर ऐसो ताकी चांदनी चुरैल सो चबाये
लेत तनको ॥
चौ० आश्विनसुदिदशमीतिथिजबहीं।बाँधोतजोमाधवातबहीं॥
नगरलोग सबही पछिताने। बड़ी दोस्ती हमसों माने ॥
पै न चलत खबर वह दीन्हीं। जड़मति उपदेशी की चीन्हीं ॥
सबरोनगर सराहत वोही। वहनिश्चय बालक निरमोही ॥
दो० एकै त्रिय ऐसी कहैं है वहसांचोगीत।
अबला कौने बशकरी योगी काकेमीत ॥
चलत माधवा बिप्रके सुवा चल्यो अकुलाय।
तोबिन द्विज या बटपै मोपै रहो न जाय ॥
चौ० चल्योजातयोंमाधोयोगी। बांधोतजिफिरभयो बियोगी॥
मनमें चल्यो बिसूरत येही। रहै मोर सबनगर सनेही ॥
सवैया। आवतीती हिरनाछी इतै वा झकोर के आंखैं हियो-
हरलेतती। चौंधा लगावत चन्दमुखी गजगामिन सो मगरूरीस
मेतती ॥ बोधा बियोग करै सबको पिकबैनी कठोरहिये न सचेत
तीं ॥ जानती पीर गरीबनकी अहे पीनकुचानहियो हरलेतती ॥

सो॰ निपटलालचीनैन जबदेखें खूबीकछू ।
तबबिछुरै चाहैं न पैनारिनको बसकछू ॥
निमिषसाथ जितहोय पीन कुचाब नितानसों ।
लखैठौरपुनिसोय । फरककरेजे में उठै ॥

छंदमोटका । बाँधों तजि माधो विप्रचल्यो । जाकोहियमैन मतंग मल्यो ॥ पायो गत अश्विन मासजहीं । आयो द्विजकामद शैलतहीं ॥

चौ॰ दीपमालिकादर्शनकीन्हा । दीपदानकामद कहँदीन्हा ॥ पैसुरनी मज्जनकरि माधो । सीता पति ढिग आयो साधो ॥ कर दंडवत् बीण करलीन्हों । यशबरणन रघुबरको कीन्हों ॥ जस कछु बालमीक मुनि गावा । सोमाधो सब प्रभुइसुनावा ॥

सो॰ रघुबरको यशगाय फेर बिथा अपनी कही ।
सुनि प्रभुदीन सहाय सोकहं बिधिबेदन दई ॥

छंदचौपैया । बेदन बड़मोही बिधिबर द्रोही दीन्हीं दया न आनी । सुबरन तनवारी नारिनवारी बिछुरी प्रिया निमानी ॥ तेरे ढिग आयो दरशन पायो दिलको दरदसुनायो । तुमबिरह बियोगी रघुबरयोगी यातेशरण मनायो ॥

दंडक । ब्याउरकी पीरकैसे बाँझपहिंचानै कैसे ज्ञानिनकी बातकोऊ कामी नरमानिहै । कैसे कोऊ ज्ञानी काम कथन प्रमान करै गुरकोसवाद कैसे बाउरो बखानि है ॥ कैसे मृगनयनी भावै पुरुष नपुंसक को कबिको कवित्त कैसे शठपहिचानि है । जानैकहा कोऊ जापै बीत्योन बियोग बोधा बिरहीकी पीर कोई बिरही पहिंचानि है ॥

दो॰ जिन्हैंन बिछुरे आउ तो लगैन मनमथतीर ।
सोकाजानै बापुरो बिरही जनकी पीर ॥

सो॰ प्रभुको है असप्रेम भयो माधवा बिप्रको ।
तोहिंहोइ अबछेम आठसिद्धिनवनिद्धिनित ॥

चौ॰ परदक्षिणादैशीशनवावा।पुनिद्विजचलिमंदाकिनिआवा॥

मिलमो तहां एक पखवारा। पुनि माधो उठिपंथ पधारा॥
बिरही तपै कहुं कलनहिं पावै। सुखकी चाह फेर उठिधावै॥
अग्र एक आरण्य सुहाई। देखी बिटपनकी समुदाई॥
दो० फूले फरेहरेलखे उपबन बिपिन समाज।
उनमादी माधोभयो सुमिरि अग्र ऋतुराज॥

इतिश्रीमाधवानलकामकंदलाचरित्रभाषाबिरहीसुभानसम्बादे
शापखंडएकादशतरङ्गः ११॥
इश्कसहेलीनाम॥ अथ प्रसङ्ग॥

(बारहवांतरंग प्रारम्भः)

चौ० शुकसों कह्यो बिप्र अकुलाई। मोहिंमावदी कीसुधिआई॥
कैसे कहां होयगी प्यारी। नवयोबन बाला सुकुमारी॥
खेलत कहूं सखिन के माहीं। मेरी याद करै कै नाहीं॥
ऐसी छवि कब देखन पाऊं। किहि उपाय पुहपावति जाऊं॥
बिरह रूप बिपरीत न बाढ़ी। हिये मनोताई के काढ़ी॥
कामकथन सब जानत सोई। बड़ी रीझ की बिरहिन होई।
है प्रबीन लीलावति जैसी। मजेदार बनिताको ऐसी॥
यों गुण कथन माधवा गायो। बिरह बूड़ि बिरही फिर आयो॥
छंदपधारिका। इकनग्रउग्र रविसुता तीर। तहँलखी बिप्र बनि-
तानभीर॥ लखि बिकट ठौर गो निकट आइ। अति बिकल चि-
त्तनहिं कल पराइ॥ इश्क बाग तहंलखि अति प्रबीन। तहँत्विप्र
बिप्र परवेश कीन॥ निज दरदकह्यो सब द्रुमन पाहिं। मृगमी-
नआदि जो मिलत जाहिं॥
दो० कानन कूप तड़ाग तरु खग मृग मानवमीन।
असकोजिहिद्धिज माधवा प्रियकीसुधिबूझीन॥
कहतद्रुमनसों तुमनहो सुमनसहित छबि दार।
कहीयार मेरो लख्यो तो छबि अजब बहार॥
चौ० बिटपनअपनोदरदसुनावै। जबचालिद्धाहाँकिसीकीआवै॥

नाम आपनेप्रिय को लेहीं। यों पुनि ताहि उरहनो देहीं॥
हो हिरणाक्षी प्रियाहमारी। शशिवत बदन तज्यो सुकुमारी॥
मृग शावकलो तुश्रयेलोचन। कहां रही दुरि हे दुख मोचन॥

स०। बल्लभा बाल प्रिया बनिता मन भावदीबाग हितूगज गौनी। चंद्रमुखी रवनी है नितंबिनी पीन कुचा सुजनी पिकबैनी॥ बोधाबखानत माधवा यों तरुनी घरनी गवड़ी सुखदैनी। कामिनी कामदाप्यारी तियाश्रयेलीलावती है कि तू मृगनैनी॥

सो० मोहींदेइ निसार तोहिं न बूझी भावदी।
कै चूक्यो करतार मोहिं तोहिं अंतर कियो॥
यह चरित्र लखि बाल चकित भईं तरुणी निकट।
है का इसको हाल कोऊ बूझौ पथिकसों॥
करमें लीन्हें बीण योगी भोगी भूपसुत।
तबइकप्रौढ़प्रबीण दीन्ह ज्वाबसबहीनकहँ॥

दंडक। झुकत सो झांकत सोझुकत झहराय ऐसो देहदु बराइबो न दोषतें डगतुहै। भारीभरेनैन रतनारे तारेअनिमिषनदी ह उरस्वास लै लैपगन खनतहै॥ बोधा कबि माधवा को देखिकै बिचारै बाल चित्तसों चरित सौ तजान पै ठगतु है। कामसोंलस तुनिजबाम बिछुरीहै याते योगी हैनभोगीनबियोगीसोंलसतुहै॥

सो० अलप बुद्धि सुरभंग यादि विदिक्र चटपटी उर।
येबिरहित के अंग दृग न चलत बिभ्रमवचन॥
ताको परचो लैन आपसमें बनितन कह्यो।
कहे बिप्रसनबैन कितेजातकोहौ कहौ॥
उर उपजी कछुबाय किधौं भंग रंगोपियत।
लागी किधौं बलाय बृथा बादसोकाकरत॥

(माधो बचन)

रेखता। नशाक धीनखाते हैं। अये हम इश्क मदमातेहैं। गये थे बागके ताईं। उतैवेछोकरी आईं॥ उन्हींजा दूकछूकीन्हा। हमारा दिलकैद करलीन्हा॥ अचानकभयाभटभेरा। उन्होंने चश्मटुक

फेरा ॥ कलेजा छेदकरज्यादा। भयामन मारुमें मादा॥इश्कदिलू दारसों लागा। हमने दिलदर्द अनुरागा॥ खड़ी फुलवारिया खेलै। जँम्हीरी हाथसों झेलै॥ मज्जा बागिचाका देखै। कसम बख्शीनकीलेखै॥ कली चुनगूंथती चोटी। नबोढ़ानायकाछोटी॥ कधीफल नाँरगीतोरै। फुहारेसैकरों खोलै॥ कधी रवबेलसोंलपटै। कधी गलबांह यों भटकै॥ कधी गावै हँसै बोलै। कधी तुतरायके बोलै॥ झरोखा ओर को चलदी। पवन के दोषदै दुलदी॥ कधीअलसाय तनतोरै। अँगूठी हाथ की फोरै॥ कधी बँदचोलिया कसदी। कधी दिलखोल कै हँसदी॥कधीनीबी कसैखोलै। कधीझुक झूमती डोलै॥ मुनैया तूतिया बरही। मगनकलकेल को करही॥ बिहंगम लाल सुकसारो। करैचंडूल झनकारो॥ तिन्हों के गहने को धावै। परदे गहे क्यों पावै॥ कुरूकहि उनहींको टेरै। न आये गुसाहोहेरै॥ सखीसे कहो गहिल्यावो। जिसी अबकूबसों पावो॥ कबौंबरबानराझूलै। तिन्हीं को देखभ्रमभूलै॥ हिंडोरापास चलजाती। खड़ी झूलै न डरखाती॥ नरमकटिढूनहोजावै। हमाराजान दुख पावै॥ बतानेसे फूलसे झरते। कुलाहल मधुपगन करते॥ कहीं लख चौपराहरखें। कहीं सुजनीनको परखें॥ हमारे निकट चलआई। हमने इक अमृत धुनिगाई॥ दिवाने ओ दिवानी। सखिनके बीचमुसक्यानी॥कह्योनितआइयो साँई॥इसी मकानकेताँई। तिहारादीह हमपावें॥ दिलदरदर्द बिसरावें। उन्होंका रूपनीमाना॥ भयो दिलदेखदीवाना। कछूनाचाहनायेती॥ हमारी चाहउनसेती। कहूंरहोदादिलंदरमें॥

दो० रचना युतद्विजके बैन सुने इश्ककीसैन।
रही ऐननैनी सबै जड़ताधरिभरनैन॥

स० बोधा किसूसो कहा कहिये जो बिथा सुन फेररहै अरगाइकै। याते भलो मुख मौन धरो कै करो उपचार हिये थिरधाइकै॥ ऐसो न कोऊ मिल्यो कबहू जो कहै हित रंच दया उरला

इकै। आवत है मुखलौबढ़िकै पुनिपीर रहै हियमेंही समाइकै॥
चौ० करगहिबीणबिप्रमगलीन्हा। गवनदेशकामावतिकीन्हा॥
कछु दिन मारग माहिं बितायो। क्षेम २ कामावति आयो॥

दंडक। चारो भागबाग वो तड़ाग लखिनीके फेर बस्ती निहारी जैसी मूरत सुचैनकी। उन्नत हवेलिनपैखड़ी अलबेली लसै रति सी नवेली क्यों समान होहि मैनकी॥ बोधा कबिधन गुणरूपकी कहांलौ कहौं दान औ पुरान गुजरान द्योसरैनकी। बिसरयो बियोग भयो माधवा मगन देख कामकैसी कुटी पुरी राजाकामसैनकी॥

दो० अष्ट सिद्धि नवनिद्धि युत घर २ करैनिवास।
माधोमनमोदित भयो सोहतपाय सुबास॥

छंदझूलना। लखि चौक द्वादश नग्रमें दिशितीन उग्रबजार। उत्तर अवासनरेश के लखि कनक कलशहजार॥ रंग्यो निहारत माधवा सुख सिंधु अहरसुबस। जितरतन दशऔ चार पूरणधाम २ अनेस॥

दो० तित हितकै क्षितिपति सज्यो नितप्रति सहितसुचैन।
मैन ऐनते नैन लखि चौक चांदनीऐन॥

चौ० मणिन सुगंध बिसाहतसोई। चाहत बहुत जवाहिरकोई॥
हाटकराज तं तुलत इक ओरा। एकै मुलवत हाथी घोड़ा॥
एकै बसन पटंबर खोलैं। ग्राहक भांति २ के डोलैं॥
यह छबि देखि बिप्र सुखपावा। चलि तब मध्य चौकमें आवा॥
एकै कहैं बिप्रइतआवो। चाहोसो हमसे फरमावो॥
एकै अरज करैं नरनारी। बिलमो साधुदुकान हमारी॥

दो० छबि दायक लायक लख्योबय किशोर मतिजोर।
बरदुकान बरई सुबन बीरा रचतकरोर॥
तासु पास सुख बास लहि माधोबैठोजाय।
करि प्रणाम सन्मान करिबरई लाग्यो पांय॥

(गाथा)

महिरं दीदारकारं। सहरासत सनेहीजो नरा॥
आशिकइश्कअपारं। किजानतहीनं रसमानवर॥

चौ० बय किशोर माधवा जैसो। लड़का हतो तमोलीतैसो॥
कहि गुलजार नाम तिहि केरो। माधव कह्यो मित्रयहमेरो॥
बाग तड़ाग हवाकरजाहीं। पलभरि कोऊ बिछुरत नाहीं॥
लड़का बहुत नगर के आवैं। सबहिन ये दोनों भरमावैं॥
नरनारी पुरबासी जोई। माधो लखि सुखपावै सोई॥
यतीभेष पंडित अतिलौना। नगर नरन को भयो खिलौना॥
आवत जबदेखे नरपावै। आदर कर सबही बिरमावै॥
नीकी बस्तु किसीके होई। नजरकरै माधोको सोई॥

दो० धन बिनु पावतमान अति गुण मय पुरुषप्रवीन।
जैसे बामसुलोचना राजत भूषणहीन॥

स० नेहतजै घरकी घरनी घरछोड़त मातपिताहू न छिद्या। पुत्र बधूतनुजा अनुजा सुखपावहिं जो कछुहोय फलिद्या॥ सेवक तेन समीप रहै कबि बोधा घटै अंखियानसे निद्या। दोऊपरसुख दायक होतहैं देशमें मीत बिदेशमें भिद्या॥

इतिश्रीमाधवानलकामकंदलाचरित्रभाषाबिरहीसुभानसम्बादे आरण्यखंडेद्वादशस्तरङ्गः १२॥

(अथअमावतीखंड)

तेरहवां तरंगप्रारंभः॥

दो० मजलिसहोत नरेशके द्विज सुनपाईबात।
कठिन बड़ी जनऊपरी तहां नआवत जात॥
दरदभरे द्वारेखड़े चिन्ता कीन्हीं चित्त।
कहि लहिये योरंग क्यों ना वह रसना मित्त॥

दंडक। चोरको सनेही को है राड़को सँघाती कहूं निर्गुणी को दायक सरोगी को बगरसी। निरधनको ब्योहुरो सप। द्विय-

भिचारिन की औगुणको गाहक बिडंब उपचारसी । बोधा क-बिआपनी अनैसीको सहैया को है पापीको सरीक परपीर को-निवारसी । गरजी को गरजी निवाजकोगरीबन को ज्वारीको जमानदार को भिखारी को सिपारसी ॥

दो० पढ़ि कबित्त बिनती करी द्वार पौरिया पाहिं ।
कहौ कृपाकर जो हितू तो हमभीतर जाहिं ॥
यों जबाब द्विजको दयो छरी दार उनमान ।
गुसाहोहिं मोपर नृपति तुम्हैं बिदेशी जान ॥

सो० छरीदारके बैन सुन माधो चुप हो रह्यो ।
अकबकात श्रुत नैन बधिकबिवशखगजाल ज्यों ॥

दो० बीणाचार सितार द्वै द्वादश बजै मृदंग ।
चार ताल षट्ताल मिल सजै पांच सुर संग ॥

सो० माधोकर उनमान चोपदार सों यों कही ।
मजा न होत निदान मजलिस मनुज प्रबीन बिन ॥

दो० मिरदंगी पूरब मुखी चल्यो सम्हारैजात ।
ताको अँगुठा मोम को तातैं ताल न सात ॥
नौतेराके बीच में नेवर कांकर हीन ।
करत ताल सुरभंगते रंग नसात प्रबीन ॥
गुसा होत मुग्धानटी सुरकठोर बरजाय ।
सभा आँधरी जानके प्रगट न कहत रिसाय ॥
छरीदार जाहिर करी महाराज परजाय ।
परचो पाय महराज ने द्विजको लियो बुलाय ॥

चौ० माधोको राजा बुलवायो । तुरतहि बिप्र सभा में आयो ॥
ऊभो भयो राय तिहि देखत । सभालोगसब अचरजलेखत ॥

दंडक । पांवड़ी मुकुटखौर केसर लसत भाल मीनाकृति कुण्डल कपोलन पै छैरहे । कुंदन चरन तन सुन्दर मनोज जनु बीणा करलीन्हें पोला पावनमें ठैरहे॥लकुटी रंगीन औ प्रबीन ओढ़े पीतपट कमलवत धोती फूलहार छबि दैरहे । चंद्रवत आननबि

लोकि के चकोर वत चौंके से चकेसे लोग माधवै चितैरहे ॥

दो० क्षिप्र बिप्र को देखके सभाउठी महराय।
पैर चारि चालिकै मिल्यो कामसेन नृपआय ॥
करिप्रणाम राजा कह्यो दूरकिये त्रैताप।
त्यों अशीश माधो दई तुव अखंडपरताप ॥
विद्यावान सुजान नर रूपवंत जो बाम।
जहींजायँपावैं तहां बड़आदरइतमाम ॥
नाम बूझ बूझी कुशल कामसेन करि प्रेम।
कहीं विप्र अब तो भई तुव दरशनते क्षेम ॥
सिंहासन आसन दयो मुक्तामाल अनूप।
मान सहित कर पान लै उठिकै दीन्हों भूप ॥
माधो के कंदला के झपटगये जुरि नैन।
निकसि लड़त जिमि शूरमा खड़ी रहै दोउ सैन ॥
सांगीत नाचत त्रिया गावत गीत रसाल।
जाहि चाहि खग माधवा बींध्यो लालचजाल ॥
नख शिख भूषण आभरण कहषोड़श शृंगार।
लघुक्रम कछु सुरताल कहि कहिहों नृत्यउदार ॥

(शिरनखकथन)

छंद चौपाई। बड़वारे कारेसटकारे केशन गूंदीबेनी। मीतलके हीतल शीतलक्यों व्याल बधूदुखदेनी॥ रूपरास बिचकेशपास विचराजत मांगउदारी।मनौ धसीघनश्याममध्यते सरिस सुरसरी धारी॥ नीकी लसी लसी मुखऊपर बंक अलकअलबेली। गई दरारचंद्रकेआननत्योंमुखचाहनबेली॥ नितप्रतिनई कलाकोधरि शशितेर मुखसोंजोरै। समनहोय पूनौलौंसज फिरकुरूरैनलौंफोरै

दंडक। मदन सदन प्राण प्यारीको बदनताको चाहि२ सुधाध रिधीरन धरतुहै। रहत निशिबासर समान अकलंक उर शंक सकलङ्क सोई मानिकैहरतु है॥ बोधा कवि नित प्रति नौतम- कलाको धार मास२योहीं उपहासनुमरतु है। परवाते पूनो लौं

जोर बो करत तैसे पूनो ते कुहू लौं फेर फोरबो करतु है ॥

(भौंहकथन)

क० त्रेतामें साजो एकधनुष भृगुनन्दनजूने सोई लीन्ह्यो रघुनाथ असुरबरयाने में। साजे द्वैधनुष नीके सीता जूके बालकन कीन्हें युद्ध भारी अश्वमेध जरा ठानेमें ॥ बोधाकवि द्वापरमें धनुष धनंजय साजो करणके कारण कठोर सर तानेमें। कलऊमें कीन्हीं महाबीरनकेमारबेको कठिनकमाने तेरीभौंहयेजमानेमें ॥

दो० अतिसुवेस सुखमा सदन श्रवणतिहारे जोइ।
जनमएक रथके लसत चक्र आयँ ये दोइ ॥

(अथ नेत्र)

दंडक। कारे सेतबरन अनियारे भाल शृंगार मारत जुरेते ऐसे समर अधिकारीहैं। रहतसुरंग चाहैं सुरनबहुनायकन नहिं नित्त केलकरबे को हितकारी हैं ॥ बोधा कवि चलत न मारग निबाह नाहिं नर बर पाइ मारे चाहव्यभिचारी हैं। दृगमृग एकरीति सोबखाने वे तो कानन बिहारी येऊकानन बिहारी हैं ॥

दो० लसत बालके भाल में रोरी बिन्द रसाल।
मनो शरद शशिमें बसी बीर बहूटी लाल ॥

छंदमोतीदाम। मुकुरकपोल गोल गदकारे गाँड़ेनपरीन बीनी। जनु शशि ग्रसतराहु रसकारण गरुड़अंगूठीदीनी ॥ लखिनासाको अजबतमासा सुवासघनबन सेवै। बिद्रुमगलित भयेअधरालखिछबि प्रबाल नहिं देवै

(दंतबर्णन)

स० अये हिरणाक्षी तूतौ हिरणकहे हैं स्याह बिद्रुम गलित होत दपर्ण तरकिगो। पन्नग पतालसिंह सेवत कदलि कुंजचकवा बियोगी भयो बालतै भड़किगो ॥ बोधाकबि कोकिला फिरतती बसंतहीको दंतकाट मंत सुवाबनको सड़किगौ। चंदमंदकारी प्यारी मंद मुसक्यान तेरी देखदशनावलिको दाड़िम दरकिगो ॥

दो० कामकंदला केलसत छावत इतौ प्रकाश।
जनुरबि सन्मुख आरसी करकंपित आभाश॥

अथचिबुकबर्णन। तैंतोहेरी हिरणओर हिरणहेरयो हरिओर हरिहेरो बिधिओर गुसा यों बिचारयो है। तीक्षण कटाक्ष याके बिष सों सवाँरेजाने रंचक चितौन में सब रंगकियो कारयो है॥ बोधा कबि जानिकै सरोस हरिजूको बिधि ठौर २ सुधाको निवास यों निहारयो है। चिबुक ना तेरोबीर अमृतकी चांड़बिधे चन्द्रमा के धोखे मुखचन्द्रछेदिडारयो है॥

चौपइयाछंद। ठोढ़ीपके आमकी बानिक तिल अलिछौन बिराजै। अल्पभार लचिजात ग्रीवतबमस्त कबूतरलाजै॥ कनक लतासे बनिक बाहु बिय अँगुरी चम्पकलीसी। कीन्हीं नखन लखत बहुलज्जित नखतनकी अवलीसी॥ हाटक बरन कठिन उन्नत कुचगोल २ गदकारे। कमल बेल गेंद नारंगी चक्रवाक युगवारे॥ बिवकुच बीचसकीनासंधिमें मनमतंग उरझानो। सकैन निकसि मृड़ाल तारतहँ निकसिपारक्यों जानो॥ चम्पक कमल चन्द्रिका झूठी रँगपरवारों सोनो। रतनाकरकी लहर निकट कटि रेखातीननिमानो॥ कनक ईंटसी पीठ डीठयतु कनक पिंड़ीउरलोनी। नाभीवर रोमावलि व्यालीकैमनमच्छमथोनी॥

अथकटिकथन। कमल मृड़ाल हूते दृगन छीन योगी कैसी आशापाइ रूपमानियतु है। सुमन सुगंध कबि अंकन अरथ जैसे गणित को भेद साँचियो बखानियतु है॥ बोधाकबि सूत के प्रवान ब्रह्मज्ञान जैसे चलत हलत यों प्रमानियतु है। दृष्टि में परैना यों अदृष्टि कटितेरी प्यारी ह्वै है तो बिशेष उनमान जानियतुहै॥

चौपइयाछंद। गुरु नितंब उरु गदकारी लखि कदली तरु लाजै। पिंडुरी गुल्फ सुढार सुल्फ अतिचरण अंगुली लाजै॥ लखियतु नखत रूपलखि अवली कनक जड़े जनुहीरा॥ पूरन भौंली खनखन बांकी पेंड़ीललितकहीरा॥

(अथ आभूषण शृंगार)

दंडक। अंगराग भूषण बिबिध मुखबास राग केश पास मंजन यों अंजन सरसकी। अमल सुबास लोललोचन चितौन चारु हँसन लसन पाँवजावक सरसकी॥ गवन कराल बाणी कोकिला प्रवीन अति पूरन सनेह चाह प्यारे के दरसकी। सोरहौ शृंगार साजै सहित बिलासराजै कंदला अखड़े बीच बारह बरसकी॥

दो० चोली सारी घाँघरो तरकस भयसब देखि।
तरकस सत्त मनोजको कामकंदलालेखि॥

अथसुवर्ण भूषण वर्णन। बेनी शीश फूल बीज बेनीया माशिर भौंर बेसर तरौना केशपास अंधियारीसी। कंठी कंठमाला भूषधी वरा बाजूबन्द ककना पटेला चूरी रतन चौकजारीसी॥ चोटी बंद डोरी क्षुद्रघंटिका नई निहार बिछिया अनौटा बांक सुखमाकी बारीसी। राजा कामसैन के अखाड़े कंदलाकोपाय माधो चकचौंधि रह्यो चाहिकै दिवारीसी॥

दो० फूलहार तियहिय परसि चलत बयार सुबेश।
बिरह ज्वाल तन बिप्रके जाहिर होत कलेश॥

अथबाणी बर्णन। तूतिया मुनैया सुआ सारि का कपोत हंस कोकिला मयूर आलि अवली बखानी है। चक्रवाक खंजन पपीहा मैना चांडूल दहिये दरेवा खूब खूमरी बिकानी है॥ बोधा कबि स्वरन तँबूरा हूको ठहरात जल उतरंग मुहचंग वाकुहानीहै। ढोलकी गुमक बीण बाँसुरी सितार वार कंदला तियाकी ऐसी अति मृदुबानी है॥

अथजल्दता बर्णन। भौंर यो भवन के तीरनमें नबनकेती चंगमें छुवनकेती काहूने निहारी है। फिरकिनी फिरनके तीछेरनी गिरनकेती मोरमें थिरनकेती किन्नरी कुमारी है॥ बोधा कबि बाजी यों कमान में सुरनकेती लक्कामें लगन कौन उपमा

बिचारी है। गिरा२ बाज लोट लोटन कबूतरी की कंदला तिया पै एती तरलताई बारी है ॥

(बाते प्रथमकहे हैं अथसोचित)

दो० धाधाधाधिक निक धुकार धिं २ सुरमंडित ।
तंत्रिगिदं कं तं त्रिगिदं त्रगत्रगिडुकरखछंडित ॥
छंगमुहर गजमुहर पुनि लच्छब्रह्मसब ताल ।
तिवरी तांडव भेद संह नचत कंदला बाल ॥
थाथाथा थृगादिक थृकंत थुंगी धुनि थुगिरट ।
फं फं फं फृगादिक फ्रुकंत बोलत संगीनट ॥
इमिषजनेवर बीणाहि मिल झिझिमझुंमसुरकरत ।
कंक्रुगदक्रुगादि ककतंलंलृगातिलालितआनँदबढ़त ॥

दो० रिलसूजै २ बहुत बूझै इतिकमसाल ।
आफ ताब लौं रही उदैकर बाल ॥

इतिश्रीमाधवानलकामकंदलाचरित्रभाषा बिरहीसुभानसम्बादेकामावतिखंडेअखाड़ोबर्णनात्रियोदशस्तरङ्गः१३
इश्कमजाजीनाम ॥ अथप्रसङ्ग ॥

चौदहवां तरंग प्रारम्भः ॥

छं०तो०।क्रगदंत्रगदंत्रगदंत्रगदं कुकथौकुकथौकुकथौथृगदं । घननं घननं घननं घननं धिकतं धिकतं धिकतं तननं ॥ क्रकतं क्रकंत क्रकतं क्रकतं फृगदं फृगदं फृगदं करतं। गृगधं गृगधं गृगधं गृगधं ततथे ततथे ततथे थृगदं ॥

चौ० त्रियनाचतप्रेम उमंगभरी। नहिंबाचत एकवनृत्यकरी ॥
लखि नृत्य अपूरब प्रेम मई । द्विज के हिय लालच बेलिबई ॥

सो० बेलाजल भरि शीश धरिबाला थुंगा नची ।
सहित सभा नरईश वाह २ मांच्यो बचन ॥
द्वितिय नृत्य यहरीति थारी में मुक्ता धरे ।
लटन गुहे करप्रीति गति औ सुर साधै द्रवो ॥

तीजे अद्भुत येह थारी पै बाला नची।
सो २ दुहरी लेह गति न जाय थारी बचै॥
चौथे बटा अनेक फेरत नाचत सुरभरत।
भूमि न आवत एक शिर पर छाये बिमानयुत॥
पंचम अद्भुत और बटा एक कुचपर धस्यो॥
अंग २ सब ठौर करनछुयो करसे फिरै॥
चौंसठ कला प्रबीन बीन २ बालानची॥
तीन लाख देतीन सभा सहित साहब भयो॥
त्रिय को गुण उनमान रीझि सबै राख्यो कछू।
अधिक अपुनपौ जान बिप्रन अधिकारी गुणी॥

छंद मोतीदाम। नचीफिर तंडव मंडव जोर। घनै घनकावत-नेवर घोर॥ तहँनटवा उचरै ततकार। चलै दुहरीतिहरी लहिना-र॥ अदा अँग अंग उमंगत बेश। इतै गुण कौन गिनै बिनशे-श॥ बजै जहँ बीन नबीन सितार। घने मिरदंगन रंग अपार॥ तहां मुहचंगनकी गतिजोर॥ मढ़े खटतालनके कलशोर॥ चली गतिजाय अदा सुर सोइ। कहूं तिलआध असाध न होय॥

दो० करपद दोनों चलाकर कांटो कंठ लगाइ।
मनसुनार तौलत सुघर साज बटहरा नाय॥
चंचरीक चातुर्य्य चित कुचपर बैठो आय।
काटैउर पीड़ा बढ़ै सकै न ताहि उड़ाय॥
अदा जात करके छुये मुख बोलै सुरजाय।
सैंच पवन कुच सोत सों दीन्हों भृंगउड़ाय॥
सभा सहित साहिब तहां तिय की कला लखैन।
रीझ बढ़ी माधवाउर उरमें जीव रखैन॥
दयो त्याग महाराज को माधोनल तिहिबार।
देखत सबदरबार के दयो नटीपरवार॥
तिय जानी यों जानकी जानी बिप्र सुजान।
गिरजापति बाहन यथा सभा आँधरी जान॥

गुणमय गुणमाधवा को पुनिबोली नवलाह।
बिप्र तिहारे गान की मेरेचित्त में चाह॥

(माधवाबचन)

छंद पधारिका। यहराज सभामेरो न काज। हौं गहौं बीनगावन न राज॥ यहकाम होय कसबीनकेर। तबज्वाब दीन कंदला फेर॥ द्वैठौर होतमुक्ता बिशाल। इकउदधि एकगजराज भाल॥ ते लसत शोभराजानग्रींव। इमिबिप्र बिचारौसकल सींव।

(माधवाबचन)

सो० मेरी तान कुरूप रंग अंग सिगरो करै।
उत्तर दीन्हों भूप द्विज मुख प्रेम बखान शुभ॥
गई माधवै भूल सुधि पुहुपावति नगरकी।
पंचम गायो भूल लीन्हीं व्याधि बिसाहि करि॥

छंद तोमर। तबमाधवा लै बीन। सुरताल संयुतकीन॥ जिहिठौर रंचक वान। जिनके परी वह कान। वहचकित भो तिहि ठौर। पगुतौ धस्यो नहिं ओर॥ सिगरी सभा अरु भूप। ह्वैर हे चित्र सरूप॥

छंद दोधक। माधवाने करबीन लियो जब। राजसभा यहहाल भयो तब॥ जो जिहि ठौर रहो तिहि सूरत। सो लखि ये तिहि ठौर बिसूरत॥

दो० प्रथम तान सुनि तियाकी मोह्यो तनमन विप्र।
पुनि फिर द्विज की तान पै तिया चकित भइ क्षिप्र॥

चौ० यदपि हतौराजा फरमायो। माधो तदपिकाम हितगायो॥
गुण के बश गुणवंत बिशेखी। सुनुसुभानयह आँखिन देखी॥

दो० द्विजके चितवर तीय है यहबरती मो योग।
जो कीजै जाते बढ़ै याके हिये वियोग॥

छंद चौपइया। जानो नहिं माधो गायो काधो पवन प्रचंड भयोई। देखत ही हालै बुझीं मसालै अचरज चाहन बोई॥ वहहाल सयानी हिय अकुलानीकरबरबीन सुधारो। दीपक त-

हुँ गायो अतिहि सुहायो बरीं मसालै चारो ॥ माधोयोंदेख्यो अचरज लेख्यो पुनि घन नाद बखानो । पलअंतरनाहीं दशौदिशाहीं उमड़ मेघ घहरानो ॥ तबतियाखिसियानी अतिहि रिसानी सारँग नाद कह्योई । सुर सुनकरताको दिशदश ताको खुलिघनश्याम गयोई ॥

सो० माधोबे परवान रीझोतियकी तानपै ॥
कीनउचितउनमान तरुणी पै जादूतरल ॥

छंदचौ० पुनिकरगहिबीना अचरजकीना बालाबिकल करि डारी । सुरतालनसानो राग भुलानो थर २ कांपी नारी ॥ यह भेदत्रिमानो चितिपतिजानो गुसाचित्तमेंआनी । तीक्षण करभौहैं द्विजकेसोहैं बोल्योकरकसबानी ॥ बीणाकरलीने बदनमलीने अबहीं द्वारेआयो । हौंबिप्रजानके प्रीतिमानके आदर सहित बुलायो ॥ सिंहासनदीन्हों आदर कीन्हों जलज माल पहिराई । यते गरबारों सबै बिचारों कररिकं अधिकाई ॥

दो० चितिपति गतिही दे सकत मेरेआगेदान ।
तू अधिकारी करलई निच्छुककरय्योन्यान ॥
येकहिये लाहिकामजासर्बसदीन्ह्यो त्याग ।
भयो रंकते रंक फिर कौनरीझअनुराग ॥

माधो बचन ॥

अयेराजयारीझकी मोहिंन दीजै भूल ।
चतुर हीनतेरीसभा जैसे मधुबिन फूल ॥
तुमकाहू देखीनहीं याकीकलाकमान ।
हौंसाहसबलके नहीं आड़ीदै गिरमान ॥

सो० चंचरीक चितचोर बैठो तियके कुचनपर ।
काटत कीन्होंजोर ताहिउड़ायो युक्तिकरि ॥
उरकी मेटीपीर सुरऔगतिराखीद्वयो ।

अस्तन सोतसमीर खैंचि उड़ायो भृंगको ॥
दयोनटी परवार त्यागतिहारो दयो सब ।
शीशदयो नहिंडार शंकतिहारीमान के ॥

राजाबचन

दो० गयो तालसुरभंगहो मोहछियोनहिं देख ।
तूयानटिनीपैकरी जादूगरी बिशेख ॥
हैमजलिसकीन्हीं बिघन तू गुणके अभिमान ।
पै अति सरजहुतै गजबगुसाहमारीजान ॥

(माधो बचन)

करिये गुसा विवेककर महाराज उनमान ।
संन्यासी दीजैछुरीयह तौ भली न जान ॥
है पूरबगाथा सुनीसो अबसत्यलखात ।
करककरीके पाउँकी क्योंखरदागे जात ॥
तालगयो कंदलापहँ मोसहहो तसरोस ।
कपिलानाहिंन कूटिये हरहाइनकेदोस ॥
रीझहमारी तानकी आनकान करिराज ॥
सो मिटाय चाहत करोइतराजीको साज ॥

क० कैकै अनेक कला नटवा चाढ़िबांसपैलाखतरातनतोरत । ढोलियायों कहै हौन बदोइतआपुदिवैयनफोरत ॥ बोधातिन्हैं पैकहा कहिये गुणको पहिंचान नहीं हगजोरत । रीझिकी बूझि कछूनकरै फिरैखीझके खोजन कोटकटोरत ॥

सो० वाह २ करजात रीझै पचै सुमेरसी ।
करैघनोउतपात खीजतनासी नापचै ॥
रीझनसबसुखदेय खीझनखाहै खड़गाशिर ।
ऐसे नृपजिन सेहरीझखीझदोऊ बिफल ॥

दो० कौनकरीहैरीझकी अबहौमौनगहौन ।
जौनकरी है तौन अबमोसों युक्ति कहौन ॥
मैंरीझो याके गुणै मेरे येगुणपाहिं ।

मेरे याके चित्तमें बिगो दूसरी नाहिं ॥

सो० विषहर बिषको मूल तजै न जोपायनपरै ।
होतमीन के तूल बाजीगरको रागसुनि ॥
रागरीझ उनमान हिरनकहै हिरनीय सों ।
कहादीजिये दान यहै काम या बधिकको ॥

(हिरणीबचन)

(हरिगीतिकाछन्द) सुनिनाहिं चित्त उमाहिकै अवगाहिगुण करलीजिये । सुखपायरीझ बनाय दोनों देह भिक्षा दीजिये ॥ गुणग्राम बधिक सुजान आशिक पायके सुखपाय है । मृगछाल हाल बिछाय तापर रागसुन्दरगायहै॥ यह समुझिकै मजबूत दोनों देहभिक्षादेत हैं । न समान तिनके प्रानधन मृगऊ यहै गति-लेतहैं ॥ चितहत्त जाको नित्त जामैं सो टरै नहिं अंगते । तन-त्यागहीं हित रागहीं सुरतें कढ़ैपुनिअंगते ॥

दो० देहदान दै बधिक को मर्यो मृगापरबीण ।
मेरी छालापै सदा मीत बजावहु बीण ॥

सो० मृगा रागवृशहोहिं बधिकनसों बिनतीकरैं ।
पुनि तू मारै मोहिं अबकी तान सुनायदे ॥

दंडक । श्रुतिको सुन्यो नगान सुपात्रको दियो न दान शत्रुकी करी न हानि छलबल धायकै । कियो न परायो काम रसना भज्यो न रामरसमें गही न बाम हिय लिपटायकै ॥ विद्याकोकरो न भ्यास मांगनोगयो निरास वेणी पैकरो न बास एकोघरीजाय कै । बोधाने बखान कीन्हीं वृथा गुजरानी याते बानी पछितानी ऐसे डीलनमें आयकै ॥

दो० गुजरकरत हैं सुघर नर नाद बेदसंयोग ।
बहुतकलह भोजन बहुत बहुसोवै शठलोग ॥

(राजाबचन)

हम मूरख सोवे रहैं तुम निश्चय परवीन ।
पर अब मेरे राजमें बिलमौ एकघरीन ॥

माधोबचन

दंडक। हिल मिलजाने तासों मिलके जनावै हेतहितको न जाने ऐसो हितू ना बिसाहिये। होय मगरूर तासों दूनी मगरूरी कीजै लघुहोयचलै तासों लघुता निबाहिये॥ बोधा कबि नीति को निबेरो याहीभांति अहै आपको सरा है ताको आपहू सराहिये। दाताकहा शूर कहा सुन्दर प्रवीन कहा आपको न चाहै ताको आपहू न चाहिये॥

दो० अति सरोष रुखराजको लख्यो कंदलाबाल।
सीख माधवा को दई नीकी यहततकाल॥

स० चाहिकै चित्तमरालनकी निजहाथतै तू जिनबाजउड़ावै।
गंगके नीरकी आशाकरै सरिता जल छोंड़ कहाबनिआवै॥
जो तजनेहै तो तजो हितकै कबि बोधा न बाद बितर्कबढ़ावै।
संपतिसों जो प्रवेशनहीं तो वृथाक्यों दरिद्रसों तोरनशावै॥

दो० तब अशीशनरईशको दई विप्रकरजोर।
हौं भिक्षुक तुमभूप हौ खोटबकससबमोर॥

इतिश्रीमाधवानलकामकंदलाचरित्रभाषाबिरहीसुभानसम्बादेकामावतिखंडअखाड़ोकथनचतुर्दशस्तरङ्गः॥

इश्कमस्ताननाम॥

पन्द्रहवां तरंग प्रारंभः॥

सो० भागबदो फलदेखि बड़े ठौरपहुंचेकहां।
ब्याल शंभुगलपेखि तेसमीरभखिकै जियत॥
बूड़े बूड़ा सहजहै लीन्हों एकै गोत।
कहादोषदरियावको भागआपने होत॥

छपदा। वृथा सृमसृष्टआनितलखिलोक२ पति। रबिशशिशेषसुरे शशंभुजल जालजारति॥ क्षर अक्षर अक्षरा अतीतजौतियसरूपगनि। पल २ प्रेरतकाल जहां लग पंचतत्वभनि॥

सायत अधीन संसारसब दृष्टवानउनमान मति । वह कर्मरेख लिखीसोई सत्य अदिष्टगति ॥

दो० उद्यमसों अरु कर्म्मसों एकै भेदलखात।
सोसुनगरुड़ उलूककी कथालोकबिख्यात ॥

चौ० उत्तरकोतजि आयो दक्षिण । परनामिटो कर्म्मकोलक्षण ॥
हरिगिरिधरको उरधरिलीन्हों । राज समाज बिप्र तजि दीन्हों ॥
तापीछे कंदला प्रवीनी । तासु बिदा राजाने कीनी ॥
सो समीप माधो के आई । अपनी दासी सों फुर माई ॥

दो० ताहि पठायोकंदलाजाकोबिन्दानाम।
तूं कह माधो विप्रसों चलोहमारेधाम ॥

माधोबचन ॥

छं० द्रुबि० सुनकंदलापरवीन। इहिभाल बिधिलिखिदीन ॥ दुखकोटिसुखको नास। तौ लहौं कहासुबास॥ हौं उनकेआधीन। आयो इतैपरवीन ॥ यह क्रूर कर्म्मकराल । इनहीं कियो यह हाल ॥ इतभईप्रापतियेह। तुवदरशपरशसनेह ॥ यद्यपि न प्रापति और। तुवदरशसुखशिरमौर ॥

सो० प्रापतियदपिकुसंग तदपि सुसंगन छोंड़िये।
भयो मराल तन भंग कौआ की संगति करी ॥

दो० उचितनरहबोदेशयहसुचितनरहबो बाल।
लेहिराखको काहितबकोपकैक्षितिपाल ॥

कंदला ॥

झूलना। भयत्याग मोहित लागि कै अनुराग प्रीतिसुचित्त। ममग्रेहमें बढ़िनेहमें सुखदेह देहै मित्त ॥ रतिरंग प्रेमप्रसंग राग उमंग नितप्रति गाइये । यकसेजमौन मजेजिमें रसलेज पुंजबहाइये ॥ तुवपायँ पाव प्रयागसे सेऊंसदाकरिप्रेम। तनुवारने मनुवारने धनवारने इमिनेम । गुणग्रेहके बरणेकहे सुनबचन सहित बिवेक॥ द्विजचल्यो ताके धामको भजिरामको तजिटेक ॥

सो० आई अपने धाम द्विजको लैकै कंदला ।

मनमथ यह निजबाम मिलेआय संयोगते ॥
दरशनहीलौं प्रीत परसनही हियलौंभयो।
शिशुताजानसभीत नृपतिबालबेधी नहीं ॥
माधो पहुंचोआय मजलिसमुजरातीसरे।
आपयोग सुखपाय मारग सितपंचमी तिथि ॥
हवाहवेली बीच सुवरणलखि सुवरणसहित।
मचतसुगंधनकीचचित्रनिहारबिचित्रजित ॥
सुरपुरवारोंबाग फुलवारी परवारने।
वापै अंग तड़ाग मध्य महलमें महल निजु ॥

छं०अरि०। जरित ढुलीचनभूमि जड़ित सब सोहती। तनी रावटी पेसजरी जर जोहती ॥ तहँ प्रयंक को तौरन और बखानिये। नखतनयुतनखेतशमरीचीमानिये ॥

दो० लोकरीति आतिथ्यकरि प्रीतिरीतिवितजाउ।
ले बैठे निजसेजमें दरशावो रतिभाव ॥

सो० माधव मृगपति जानकाम कंदलापदिमिनी।
कीन्हींरति उनमान निशापंचमीपाय तिथि ॥
होतशरद ऋतुमाहिं चारेऊपरकीटइक।
दईकंदला काहिंखै रौरीताफैनकी ॥

छं०सुमु०। बीराबिप्रके करखात। तियके कँपेथर २ गात ॥ ऊग्यो अंग अंग अनंग। समझो कोककायहअंग ॥

दो० स्वेद कंप रोमांचसुर अश्रुपातजं भात।
प्रलय बेवरनभंग सुर तन तोरत अलसात ॥
प्रगट होत पियपरशतें येलक्षण तियअंग।
निरखि कंदला देहते माधव चाह्योरंग ॥

छं०सुमु। तियकी गही पियने बाँह।तबतियकही नाहींनाँह ॥ मोकोंदरदहूहै मित्त। ऐसी आनिये नहिं चित्त। पगके छुवत उलटीबाल। माधोगलगह्योत्योंहाल ॥ ज्यों करतकारणबाम। त्यों२ बढ़त द्विज हियकाम ॥ नाहीं कहत बारम्बार। टूटत जल

जमणिमयहार॥ कुच के छुवत झुकिझहरात। तकिया ओरट-रकतजात॥ कमर ग्रीवपकरीदोय। बालारही दूनरहोय॥ सखिन सों कहै तुमधाय। मोकहं आयलेहु बचाय॥ राखी दुवो जंघन बीच। कुचभुज नैनदैकेथींच॥ माधो गही बाल रिसाय। जंघा भुजाऊपरनाय॥ लागी कंपनथर २ बाम। पियपै चलत कांपे-गाम। उझकत झुकतयोंथहरात। चलदलमातलोयहरात॥

दं०। उझकि चलत झुकिसरकि उसीसेही को तरककरकभौं हैं होत अलबेली की। सरकि २ सारी खरकि २ चूरी मुरकि २ कटिजात यों नबेलीकी॥ बोधाकबिछहर२ मोतीछहरात थहर २ देहकंपत न केलीकी। नीबीके छुवत प्यारी उलथि कलथिजात जैसेपवनलगे लोटजात बेली ज्यों चमेलीकी॥

सो० सुनि प्रबोध होजाय सांचीते राचीअधिक।
झूठी निपटसोहाय बालाकी अरुसुकबिकी॥

छं०भुजंगप्र०। घने घोर घुँघरून के शोरछाये। घटासे चटाके उमड़मैन आये॥ खुलेकेशचारो दिशाश्यामतासी। दियेदेह-दीपत तामें छटासी॥ परैमोतियां जो गिरैबूंद भारी। मची स्वेदकी कीच यों देहसारी। तहां इन्द्र पीनाकसे बाँकभोहैं॥तिन्हीं के परेखौर त्रैरेखसोहैं॥ परैं पायँते औरसे बर्जभारी॥ धरासीतहाँ जोरधड़कैहैनारी। कंपैशैलसे पीनदोऊउरोजं॥ बलीसों चलीहै दुरयो तौ मनोजं। तहांभूरिआ चूड़िआंचारुबोलैं॥ मनोको-किला भेष झिल्ली कलोलैं॥ इतै प्रेम संग्राम बोधा बखानो। मघामास कैसोतमाशो बखानो॥

क० क्यारे जैतवारेकेबरै याकुचदोनों मल्लयुद्धके करैयाकहूं टारे न टरतहैं। सुभट बिकट जुरेजंघैबलवानतै भुजानसों लप-टिनानेकुबिहरत है॥ बोधा कबिभृकुटी कमान नैना बानदार तीक्षणकटाक्षसरशैलसेपरतु हैं। दंपतिसों रतिबिहार बिहरततहां घायल से पायल गरीब बिहरतुहैं॥

दो० छलबल बालमबाल सों लयोमजाकारिकेलि।

नवढ़ा बाल खिलायबोयथाबाज को खेलि ॥
मुसकत हिलकत हियलगी नहिंपियसों बतरात।
निद्रावश चौंकतचकित उझकझझकतसरात ॥
चौ० भोरभयो तमचुर रवकीन्हों।तबउठिमाधव बीणालीन्हों ॥
मांगी बिदा कंदला पाहीं। कर गहि बालकही कै नाहीं ॥
अहोयारचाहिये नहिं ऐसी। अब तुमबात कहतहौजैसी ॥
करीबिहाल इश्कमगमोहीं। अबमैं जानदेहुं नहिंतोहीं ॥
दो० भूलिना ऐसी भाषिये ऐसी कटुक जबान।
रतनाकर सोंमथनकर कहत किते अबजान ॥
चौ० तराआशनइकदिनमाहीं। सुरतजुरयो ता बालापाहीं ॥
भईसुमारमारबशप्यारी। ताहिआयसब सखिन निहारी ॥
दंडक। मारतै सुमारसुकुमारअंग २ जाको नेकुनसमान ऐसी निद्रामाँझमोईसी। अरुणकटाक्षतारे टरतनाहिंटरिरहीं स्वेदकनछाई देहदरदमें मोईसी ॥ बोधाकवि टूटेहारछूटेबारछहरातकज्जलकपोलमें सारीरैनरोईसी। धोईऐसी सूरतबिसूरतसी सेज बीचपड़ी वहबाल देखी छोईसीनिचोईसी ॥

इतिश्रीमाधवानलकामकंदलाचरित्रभाषाविरहीसुभान सम्बादेकामावतिखंडेपंचदशस्तरङ्गः ॥
इश्कमिजाजीनाम

(सोरहवाँतरंग प्रारंभः)

छंदपद्धारिका। तब सखिन आय दीनों जगाय। क्रमसहित तिन्हैं मज्जनकराय ॥ साजे शृँगार बालाप्रवीन। द्विजनित्य नेम करि बीणलीन ॥ इकसेज बैठउमगे उमेद। लागे बतान ते नाद भेद ॥ बूझौ सुकंदला बालमंत। मोहिं नादभेद समझाव कंत ॥ भाजे गौरिनंद करबीणधार। द्विज लग्यो कहननादै बिचार ॥ है पराचीन मतलख्यो जैम। हौंकहत रागको भेदतैम ॥
दो० रागभूप भैरव प्रथम बाला पांच बखान।

लाला तिनके आठऊ कह नौ बिबिध बिधान ॥

चौ॰ प्रथम भैरवीं गावत लोई। ताके परेबिलावल होई ॥
कहिदे साप बहुरिअस लेख। बंगावली पंचतिय देख ॥

दो॰ ललित बिभासा पूरिआ मधुमाधव तिहिठान।
कहिभूपाली अल्हैया सहित सुहेलाजान ॥
दूजे गावत गुणीजन मालकौरतुभराग।
उपजै न ताके सुनेते नरनारी अनुराग ॥
धनाश्री युवश्री कहि जैतश्रीतिनगाथ।
मालरूप दौना श्री तियापांच ठहराय ॥

सो॰ मारुसूर गंधार बखान धाराधर बड़हंसैजान।
गौरिगिरीटोड़ी पुनिगावै रामकली गुन करी बतावै ॥

दो॰ पुनिहिंडोला गावत सुजन तीक्ष्णताकी तान।
सुनतहोत ग्रेहीयती यतीग्रेह रतिवान ॥
चंद्रबिंब मंगलाकहि परमानंद हमीर।
कहि हिंडोल की कामिनी स्यों तैलंगीबीर ॥

चौ॰ शिशिर बसंत अहीरि कही। देखगिरी तितपरलै कही ॥
भरज अरजके मोद बखान। काफी सहित तियापै जान ॥

दो॰ कह तू दीपक रागकी प्रथमगूजरी जोय।
कावेरी पटमंजरी पंचकनाहीं होय ॥

चौ॰ कामोदी कुंतल पुनि गावै। कमल कुसुम कल्यानबतावै
गौर सारंगसोहनी जान। मालासहित आठानिठान ॥

दो॰ श्रीराग के संगकहि गौरी पटरानीय।
करनाटी आशावरी सारंगगोधन तानीय ॥

चौ॰ कुकुंभ गौरगंभीर बिशेख। कुंभसाददा सोरठलेख ॥
कहियतु ईमनपुनि के नीर। येसुत सिरीराग के बीर ॥

दो॰ पुनिनृप मेघ बखानिये बालामेघ मराल।
आसगुनी गुनीगुनफुन फुनीशायथ धूरियधार ॥

चौ॰ पुनिताके सुत आठबखान। केदारो बिहागरोठान ॥

शंकरनट श्यामा पुनिहोय । जलधर सूहोकालिंगसोय ॥

दो॰ रागरागिनी पुत्रयुत लघुमति कह्यो बखानि ।
कलाभारजा नाकही ग्रंथबढ़त अतिजानि ॥
इतै माधवा कंदला लूटतसुख की हाट ।
उतै सुवाबरई सुवन हेरत द्विजकीबाट ॥
सुवाकिधौं कैफीहुवा इश्कतुवाके दीन ।
कुवाँपर्‍यो आयो न द्विज शोचतसुवा प्रवीन ॥
भानुउदै ते अस्तलौं गायो रागसमस्त ।
प्रथमयाम यामिनी जबरहस रच्यो दिनमस्त ॥

छन्दमोतीदाम । लयोतब माधवा ने मृदंग । नची बनितायुत प्रेमउमंग ॥ बजैनिवरा बिवरातिन मांह । कभूसुरएक कभीसत जांय ॥ रह्यो मिरदंग गलेमिलिएक । कढ़ैसुर औगति अच्छरतेक ॥ नचीतिवरी पुनितांडवजोइ । कबित्तन छंदन की तन सोइ ॥ अदा अँग २ उमंगत जोर । उठैद्विज के तनमैन मरोर ॥ दुवोगुण पै अतिरीझत दोय । रहेमिलि लोहो चुम्बक होय ॥

सो॰ अर्द्धरैन गुजरानजब जानी द्विजमाधवा ।
लगि बालाके कान कह्योसुरति कीजै मयन ॥

छन्दद्रुबिला । वहको बिंदाजो बाल । तिहिरची सेज बिशाल पुनि सजे भूषण वेश । पिलसूजवार सुदेश ॥ तितदंपति हिये उठाइ । वहगई झरपलगाय ॥ तब माधवा उनमान । रति करी ताजिकै कान ॥

छन्दभुजंगी । गहीबाल की हालही पीनछाती । भई अंकुनौ कौहिये यों डराती ॥ कहै नाथ पै हाथछाती न धा-रा । हिलू जानहित मान दयाउर बिचारो ॥ निशारंग सफ जगं कीन्हों बिहानो । हियेधर धरासो नहीं थिर धिरानो ॥ हिये लाग सोवो न होवो अधीरं । कहाबीर ऐसी नतोरो शरीरं ॥ गह्यो माधवा कोपि कै लंकझीनो । हकारं नकारं सुरबाल कीनो ॥ दिया मैलडारो उघारो न देहं । छुवोना पिया

मोहिया पाइ येहं ॥ करैताबिया फाबिया पीउ काहीं । रजायों मजा केलि कै ठौर नाहीं ॥ करै कोटसींवा गरीबी बतावै । सुनेते उन्हें माधवा चैन पावै ॥ करैजोर झकझोर उलछार जंवै । लगे वालके चार आंशू उलंघै ॥ हिलकके फिलकके नहीं होत शांती । किलकके पियाचाह भयलाज माती ॥ दचकै मचकै घनै शोर चारो । मही डोल सों रावटी में निहारो ॥ परो प्रेमसंग्राम कोतो बखानै । करै शोर पायल्लघायल्ल मानै ॥

सो० लखि मुक्ता छबि धाम सकल सेज फैले फिरै ।
मनौ चाहि संग्राम पुहुपबृष्टि देवनकरी ॥

दो० तरल तरंगिनि तरुनकी पै यतरति के ठौर ।
सुनत भानसंसार में अमृत झूठो और ॥

दंडक । कहूकह्यो अमृत कबित्तनके निवेदनमें कबिन बतायो प्रेमगान में लसतु है । प्रेम गान अमृत बतायो फनिन्दहू के फनिप बतायो छपाकरमें बसतु है ॥ छपाकरबतायो अमृत साधुन की संगति में साधुन बतायो बेदऋचा दरसतु है । बेदऋचा अमृत बतायो हमैं बुद्धिसेन तरुणी की तरल तरंगन बसतु है ॥ उन्नतउरोजन में दृगनसरोजन में भौंहन के वोजन में मंदमुसक्यान में । रसना दशनहू में कंचुकी कसनहू में अंजन रसनहू में बेनी सुखदान में ॥ बेंदी के मसकबे में नाहीं के कसकबे में रास के ससकबे में रसकी रिसान में । भूले कोऊ अंतही बतावत है बुद्धिसेन अमृत बसतहै बिशेष नबलान में ॥ रसहीन जान्यो जुवा पर सौ जहूरापाइ छाती और नजर के नेजा जो नहीं लये । भये न दिवाने थोड़ी मुरन मुसक्यान हूमें कंचुकी कसन कुच कौर सोंनहीं हये ॥ बोधा कबि बारनबधे न छूटै छूटी लाज कसक कसे नाहीं सीखी सो नहीं नये । नेह प्राण प्यारीकै निहास्यो देह गेह ऐसो तौ इश्क ना जानो तौ मानुष बृथाभये ॥

चौ० रहतकंदला के घरमाहीं । द्वादश दिन बीते तिहिकाहीं ॥ सर्वस सुख सनेह परि पूरण । मनभयो इश्क पंथ परचूरण ॥

खूबी को बरणै कवि येती। मिली बिप्र माधव को जेती॥
धनवो गुन वो रूपनिकाई। मनबांच्छित माधोनल पाई॥
पै यह होनहार हो जैसी। सुखदुख देत जीव को तैसी॥
नृपकी भय माधोनल माने। निश्चैप्रीति न निश्चलजाने॥

दो० जुदी सेज युवती तहां जो द्विज द्रोही कोइ।
हुक्म न माने भूपको तो अनायास दुखहोइ॥
जो कदापि राजा सुनै यह मेरो बिरतंत।
तौ बिशेष मरनै परै मोको कछू न तंत॥
काम सेन रूसो इतै उतगोबिंद भूपाल।
इतहि न मिलसी कंदला उत लीलावति बाल॥

सो० देहीते सबहोय नेह ग्रेह सुखनेह पुनि।
अपने हाथ न कोय यद्यपि नहिं तनआपने॥

झूलना। तबउमांगि माधव कंदला सोंकही चित की चाह। पर देश को दीन्हीं बिदा इहि देशके नरनाह॥ यहखबर मेरी पावहीं तौ सिगर होहिं अकाज। कबहूंन कीजै जानकै जिय जानहा रहलाज॥ जग जियत रहिहौं फेरि ऐहौं माव दी तुवपास। तुव-आश जौलौं स्वास मोतन होन मित्त उदास॥ यहसुनत पिय रीभई प्यारीपरी पियरी गात। हगउठत भरि२ चलत ढरि२ मुख न आवत बात॥ गिरिपरी ढाढै दरदबाढै रही गर लिपटाय। कर धार देखो नारिकाकी नारिका न लखाय॥ तबमाधवा उरशंकिकै भरिअंक लीन्हीं बाल। शरमिंदगी उर आनकीन्हीं रिंदगी ततकाल॥

दो० मेरोमन माणिक बिक्यो प्यारी तुव गुण हाट।
मैं कीन्हीं तोसों हँसी तूकत करी निराट॥

सो० हे दिलवर सुनबात निज जिय की युवती कही।
पिय बिदेश कहँ जात ते पशुजे सुनिकै जियत॥
बोधा धृक वह जीव जो प्रीतम बिछुरत जियत।
बिछुरत देखे पीव ऐसे हगफूटे भले॥

बधिर भले वे कान जे प्रीतम बिछुरतसुनैं ।
बोधा धृक वे प्रान प्राननाथ बिछुरत रहैं ॥
रसना जरि किन जाय जान कहै दिल जानसो ।
गेहलगै किन जाय भाव बिना भाकसीसम ।
नेह करे का जात सबकोऊ सब से करै
अरे कठिन यहबात करिबो और निबाहिबो ॥

(माधोबचन)

दो० मेरेमनकी बात सुन अहे भावदी बाल ।
जो तो सों बिछुरन परै तजों प्राण ततकाल ॥

छन्दसुमुखी । इहिबिधि कामिनी समझाय । लीन्हीं माधवाउर लाय ॥ केशर मंडिउरज बिशाल । लाग्यो करन रसमय ख्याल ॥ दिनके अंतही ते कंत । बितरेकेलि खेलिअनंत । सारी रैनिरसब शहोइ । दोनों रहेनिद्रा भोइ ॥ लागे झपकि तियके नैन । माधो-फिरन बोल्यो बैन ॥ चितमें करीचिन्तायेह । निबहत इश्करावेदेह ॥ देहीगये सर्वसुजाय । फिरनहिं बेदकहत उपाय ॥ मोपरकरै भूपति तेह । कैसे होत अबिचलनेह ॥

दो० करकागद लै लेखनी रुक्कालिखो बनाय ।
करपरधरि कंदलाके लीन्हों बीनउठाय ॥
तियको हियसे लायकै निज जियको समझाय ।
सूरतलिखि दृगनीर भरि लखि२ कहि २ हाय ॥
हिय हिलकत सुसकत सहित साहसनिजउरधारि ।
चाहि २ तियबदनछबि गजरालयोउतारि ॥

सो० चल्यो बिप्रतजि प्रीत करवतदै निजजीवको ।
बिरह पुरातन मीत संगबरोठे ते भयो ॥

चौ० चलि माधोनिज डेरेआयो । सोवत बरई सुवन जगायो ॥
पूरब कथा तासु पैबरणी । अपनी नृपकी तिनकी करणी ॥

छंदपधारिका । गुल जार मित्र सुनेह प्रवीन । मम भाललिख्यो विधि सुक्ख हीन ॥ सुख चाहि जाहि दिशिचलौ मित्र ।

तितदरद सनेह मिलत नित्र ॥ अब हौन रहौं प्रिय नगरयेह। क्षिति पालकरत मोहिं चाहितेह ॥ आऊंबिशेष बीते बसंत। सु-ख करौ भूप पढ़िप्रेम मंत्र ॥

(गुलजार बचन)

दो॰ जो अकाज यह राजतें तोनहिं रोकों तोहिं।
सुनु माधौ जित जाय तूं तितै लेचलै मोहिं ॥

(माधोबचन)

मेरे तेरे मिलन में अंतर कबहूं नाहिं।
तू मेरे जियमें बसत जिय मेरे हिय माहिं ॥

चौ॰ हियेलागि मिललोपियमेरे। अबफिरमिलनहाथ विधिकेरे ॥
खिलवत खुशी दोस्ती लेखे। वे दिन बहर न वह रतदेखे ॥

(बिरही)

स॰ बोधा सुभान हितू सों कहै झिरावाकगार के फेर झिरै ना। फेरना फूली निवारी उतै उननारिनसे फिरिकै अभिरैना ॥ फेरना ऊसी भई अकती कबहूं उहिबागकेफेर फिरैना। खोरन खे-लबो संग सखीनके वे दिन भावदी फेर फिरैना ॥

(गाथा)

यारा मिलन बहारं। बिछुरदनहिं पुनह सनहीं।
बिछुरन दरदअपारं। सहनाति प्रिय बिछुरतैं ॥

चौ॰ माधो कहैं मित्त सों येही। अबजिनचिन्ता करहु सनेही॥
बीतै चैत मास फिरि आऊं। कामसैन भूपतिहि रिझाऊं ॥
तूमति यादबिसारै मेरी। तेरेहितफिरि करिहौंफेरी ॥
याकहि मिले प्रेम भरि दोऊ। सुन सुभान बिछुरै नहिं कोऊ ॥
दृगभरि दीह उसासन लेहीं। मुरकि २ हियसोंहिय देहीं ॥
करि प्रणाम गुलजार पधार्‌यो। दै असीस माधवा सिधार्‌यो ॥

दो॰ पौष पंचमी कृष्ण पच्छ भजराधे घनश्याम।
त्यागपुरी कामावती माधो चल्यो बिराम ॥
जगी कंदला रबिउदै लगी निहारनसेज।

निकटन देख्यो मित्रको बाढ़ी बिरहमजेज ॥

छंदद्रुबिला । अतिबढ़ी बिरह मजेज । प्रीतमन देख्योसेज॥ उठिचली अति अतुराय । आलिहि जगायो जाय ॥ सुन कोविंदा दिलजानि । दुख जातनाहिं बखानि ॥ निशि जग्यो निद्रा भोइ । हौंरहीरंचक सोइ ॥ उठिगयो माधव मित्त । अबथिरनहीं मोचित्त ॥ यह आय कैसीबात । काहू लख्यो नहिं जात ॥ अब तजौं पलमें प्रान । कैमिलै माधौ आन ॥ तब कोबिन्दास खीधाय । तेहि सेजदेखीजाय ॥ तहँनहीं मित्रप्रवीण । नहिंब सनभूषण वीण ॥ इकचिट्ठी तिहियलपाय । कोविन्दालई उठाय ॥ वहबाँचि भई अचेत । बिगरे गुनै सब नेत ॥ कियो माधवा यहहाल । कैसे जिये अब यहबाल ॥ छलि कै गयोवह छैल । अब हम पाइये किहि गैल ॥ जो नहीं आवत बिप्र । तोमरतबाला छिप्र॥यहशोच मनमें कीन्ह । फिरि टेरि बनि ते लीन्ह ॥ तिहि सेज पै पौढ़ाय । बड़ी बेर लौ समझाय ॥ सुनिकंदलातु प्रवीन । जिन करै चित्तमलीन ॥ हिय धीरधर सुनबात । बिछुरै नमरिमरिजात ॥ मिलिकै जो बिछुरन होय । बिछुरो मिलै सब कोय ॥ यह चिट्ठी माधव केरि । बनिताहि लीन्हीं फेरि ॥

दो० चिट्ठी माधव बिप्र की छिप्र बाँचि कै बाल ।
प्रगट सुनायो सखिनको द्विजके हियको हाल ॥

(चिट्ठी उदाहरण)

सोवत मैं तोकहँ तज्यों हे दिलवर दिल जान ।
सो न चूक मेरी कछू भीत भूपकी मान ॥
हौं अपनो तन राखिकै डगरयो प्रीति बिगोय ।
जो जीवत अबकी मिलौ तो सनेह थिर होय ॥
बरष एक लौं परखिये हे कंदला सुजान ।
हत्या मेरे हनेकी जो तू तजि है प्रान ॥
कोटि २ तीरथ करौ योग यज्ञ जप दान ।
शीश ईश परवारिकै मिलौ मित्र को आन ॥

छंद भुजंगी। चिट्ठी बांचिके भूमि सों लाय शीशं। कही माधवा २ बारबीशं ॥ हनै हाथ छाती समाती न श्वाशं। रहे पिंडमें प्राण होके निराशं ॥ कढ्यो काढ़िनै क्यों मढ्यो दुःख मोही। हितू साथ क्यों नाकढ़े प्राणद्रोही ॥ भई बज्रकी क्यों फटैनाहिं छाती। अजौं माधवा प्रेम अनुराग माती ॥ अहेपापिनी नींदिया मोहिं भोई। भई सौतिया मोतिया काहि सोई ॥ बिरह सिंधुमें बूड़्यो गोत खाई। घरीएकलौं फेर श्वासा न आई ॥

छंदमोतीदाम। गिरी मुर्च्छा लहिकेजबबाल। फिरीं अँखियाँ पुतरी ततकाल ॥ करैं सखियां सिगरी मिलिशोर। फिरैं घर आंगन दौरतपौर ॥ लखैं पुनि नारिय २ आय। कहैं नहिं रंचक चेत लखाय ॥ कहूंयह बेदन भेद बिचार। सेजपर निकट न देखो यार ॥ हकीमन हौनकही निरधार। मिलै जबलौं नहिं भावनमूर ॥ नजाय बिथा तबलौं तजि दूर। करी द्विज माधवने-भलि प्रीति। बड़ेबटपारन तें घटरीति ॥

दो॰ माधौनल को नाम सुनि जगी कंदलानार।
गई फेर गिरिसेज पै लख्यो न माधौ यार ॥

छंदत्रोटक। माधौ कहि बालगिरी जबहीं। काभयो सखिया न कही तबहीं ॥ याको उपचार कहा करिये। याके संगहीमिलि सिगरी मरिये ॥

चौ॰ तबनारिन यों उपचारठयो। अपने२ करवीण लयो ॥ कहिमाधवा २ गानकियो। तबहीं उठि कामिनि ज्वाबदियो ॥ अबकित माधव प्रीतमपाऊं। केहिमिलि बिरह दवागि बुझाऊं ॥ कहै कोबिन्दा सुन सुकुमारी। कसिकै प्राण राखि इहि बारी ॥ तेरे हित माधौ इत एहै। मुये कहां माधौ को पैहै ॥ यहसुनि फिरबोली सुकुमारी। मोको कियो माधवा कारी ॥

सो॰ नैयानेह चढ़ाय झेली इश्कपयोधि में।
मांझधार छुटकाय गयो सनेही माधवा ॥

दो॰ कहै कोबिन्दा सुन सखी अब जिनहोउ उदास।

हौं माधौको लायहौं बारएक तुवपास ॥

इतिश्रीमाधवानलकामकंदलाचरित्रभाषाबिरहीसुभानसम्बादे
कामाबतिखंडेसोलहवांतरङ्गः १६ ॥
इश्ककपोस्तनाम अथ उज्जैनखंडे ॥

सत्रहवांतरङ्ग प्रारंभः ॥

दो० पुरी त्यागि कामावती काम कंदलाबाल ।
पश्चिम दिशिमाधो चल्यो बिरहज्वलित बेहाल ॥
तोतासों माधोकही जोतू मेरायार ।
सोसातौ अंदर रह्यो हौं बन करत बिहार ॥
कामनृपतिकी त्रासतें कामनृपति बेराम ।
कामनृपति के त्रास तजि काम कंदला बाम ॥

छंदपधारिका । सुनहे प्रवीन प्रीतमसुजान । मम हृदयभयो दुखको निधान ॥ दिशिजेहि चल्यो सुख चित्त चाय । तितदर द सनेही मिलतआय ॥ यों भयो बीन औगुनउपाय । जित जांव तहां लागत बलाय ॥ जोतजौं बीण तौ मरौंआज । करछुवत होत जगमें अकाज ॥ मनुजदेह बसिभूमि ऐन । सुख सुन्यो श्रवण देख्योंन नैन ॥ विधि लिख्यो कहांमेरे लिलाट । सबजन्मरिंग्यो नितनईबाट ॥ दश चारपढ़ी बिद्याप्रवीन । तेभई बीण अवगुण मलीन ॥ अब सुख सनेह सूझत न मित्र । हौ अंत काल इक्षित निबित्र ॥ गिरि चढ़ौंगिरौं बूड़ौं पयोधि । मरजावँ मित्रके लाग शोधि ॥ ज्योंइश्क त्यागि जीवहुँसुजान । तो दुहूं भांति जगमें गलान ॥

दो० निमिष इश्करामूजपर वारौं सुरति सुराज ।
इश्क बीचाशिर नादयो जगसो जियो अकाज ॥

स० चांदनी सेजज़रीकी जरी तकिया अरु गेंडुआ दोखिरिसानी । रातीहरीपियरी लगीझालरें केसरधरी बिरीनाहिं खानी ॥

बोधाइतै सुखपैनरमै उतकारो सावँरो रूपसिहाती ॥ यारकेसाथ पयार बिछायके डीमनमें नितखेलनजाती ॥

बरवा। पियके साथ घबराहट चढ़तीरोइ। जारसाथ जद होवे बड़सुख होय ॥

स० कंपतगात बतातसकातहै सावँरी खोरिनवौ अँधियारी। पातहू केखरके छरके घरके उरलाइ रही सुकुमारी ॥ कीच के बीच रचै रस रीत मनो युगजात चुक्यो तिहि वारी। योंजगकै लिकरै जग में नरधन्य वहै धनिहै वह नारी ॥

सो० जियैबर्ष दशपांच रहै सहितमन भावती।
नचैबिरहरस नाच बहुत जियै किहि काजते ॥
जो बिशेषजग माहिं एक बेर मरने परै।
तो हित तजिये नाहिं इश्क सहित मरि बोभलो ॥

चौ० इहिबिधिनिजजियकोसमभावै। माधोचल्योपंथमेंआवै ॥
सुमिरि घरीक कंदला प्यारी। घरि इकलीलावति सुकुमारी ॥
कहो प्रबीन करौं अब कैसी। इश्क फँदी मनप्रकृति अनैसी ॥
प्रिय बिछुरे सब ठौर अनैसा। जैसा घर छिवलेतर तैसा ॥
अब मैं जाय कहौं किहि सेती। को सहाय करिहै मो येती ॥
बीती हेम शिशिर ऋतु दोई। बिरह बेदना घटत न कोई ॥
अब बसंत ऋतु आवत तैसे। सन्निपात बिरहिनि को जैसे ॥
कौन उपाय जियत जगरैहौं। कैसे फिर कामावति ऐहौं ॥

दो० सुन२माधो केबचन गुनि२ सुवा प्रबीण।
कह्यो बिप्र उज्जैन चल राजा परम प्रबीण ॥

छंदसुमुखी। बिक्रम सेन नृपति उज्जैन। परदुख देख सकत नहिं नैन ॥ जाके राज बेद बखान। गोद्विजदीनको सन्मान ॥ आगम निगम नित्त बिबेक। चितधर तजत नाहीं टेक ॥ रीझै करत दारिद दूर। खीजै तौ उपारै मूर ॥ छलबल बुद्धित्यागस मस्त। को जग करत तासों हस्त ॥ बलकर बचै ना पुनिसोय। यद्यपि भानुको सुत होय ॥

दो० हौंहूं जो देख्यो नहीं करसब जगत निबाह।
गुणी माधवा बिप्र सो बिक्रम सों नर नाह ॥
कबहुँक हरहूके मिले रहै कर्म गुणपीर।
पै न रहै बिक्रम मिलेदुख को आश शरीर ॥
चौ० जगमें द्विज द्रोही हो कोई। बचै न तासह हरिकिनहोई ॥
बचै अदृष्टिदृष्टि नहिंआवै। कासों भिरैन देखनपावै ॥
दै २ दीरघ दान अचेते। करै अनिच्छबिप्रजग जेते ॥
इच्छा बिन परद्रोह न होई। भूखै पाय करत सबकोई ॥
दो० जाराजाके राजमें द्विज चोरी करखात।
ताके पुरिखाकोटिलौं चलेनरकको जात ॥
बाइसचूकैं बिप्रकीमाफ कहत संसार।
नृपति बिक्रमादित्यके द्विजकी माफहजार ॥
चौ० तुम गुणवंत भूपबरदायक। बिक्रम तोकहँ होय सहायक॥
निष्कलंकबिक्रम छितिधारी। तेरो दरदगरदकरिडारी ॥
सो० सुनि प्रवीण के बैन माधव मनमोहितभयो।
चलन कह्यो उज्जैन आशद्रुम बिक्रम उतै ॥
दो० भजत राधिकामाधवै चल्यो माधवा जाय।
चकित भयो दिश चारते चेत चपेटो आय ॥
दंडक। मारण मंत्र पढ़ै भ्रमिराजन आवतहैं बिरहीनके पाते। कूक उठी कोयलीकलरव ये मनौं ऋतुराज के बाणससातै॥ बोधा नये २ मंत्रनये लखि चैत चमूकी ध्वजा फहरातै। भूलेहुलास बिलास सबै तबफूले पलासलखे चहुंघातै ॥ बांधे हैं सुभट अमलनके माथे मौर भ्रमर समूह मिलि मारूराग गायोरे। कोकिला नकीब नये पत्रन तें पताक तंबू चन्द्रिका निहारि क्षिति मंडल में छायोरे॥ बोधा कबि पवन दमामो दीहवहरात सुमन सुगंधसोई सुयश बगरायोरे। बिरहीसमाज बधिबेकेकाज लाज त्यागि साज ऋतु राज रतिराज पठवायोरे ॥
चौ० यह आफत बसंत ऋतु तैसी। भांति २ मोहिंभई अनैसी॥

चरबट बिरहपयोधिबहावै । को जग हितू तीरमें ल्यावै ॥

दो० चैत अष्टमी कृष्णपख द्विज पहुंचो उज्जैन ।
शहर रम्य नृपधर्म लखि भयो आय चित चैन ॥
बिक्रम शकबंधी जहां सातद्वीप पति धीर ।
निश्चय मान्यो माधवा जान्यो लाग्योतीर ॥
डरतएक अपराधको हरतभूमि को भार ।
हारयो एक अदृष्टिसों जीत्यो सब संसार ॥

छंदद्रुमिला। लखिमाधवाउज्जैन । तित नृपति बिक्रमसेन ॥ शतकोश सबपुरबास । तिहि मध्यनृपति अवास ॥ सुरबधू ऐसी बाम । नर लखत लज्जित काम ॥ लखि महलसबके येह। जनु आयँ सुरपति गेह ॥ धन धर्म्म पूरण लोइ। दुखदोष लहत नकोइ ॥ हरिभजन दान पुरान । रतरंगही गुजरान ॥

छंददोधक । बागतड़ागन की अधिकाई । हेम हवेलिन सुन्दर ताई ॥ देखत रम्यपुरी चहुंधा अति । भूलिगई द्विजको बिरहागति ॥

दंडक । आठहू दिशान दरवाजे अष्टराजैं खाईं कोटऔंकँगूरन की कोसरखतहै। महल २ प्रति बागऔ तड़ाग चौक चौबिस बजारदेखे लंकहरषत है ॥ राजतसुरशेश नरेशकबिबोधा तहां बिक्रमसमर्थ जाहि मीचहरषतहै। जाहीओर जाही खोर चलिये उज्जैन बीचताही ओर सरस बहारबरषतहैं ॥

दो० चूरामणि पंडित तहां खटदरसनकोदास ।
क्षुधित भयो द्विज माधवा गयो तिन्हीं के पास ॥

कुंडलिया। व्यापति जासु शरीरमें भूखभूतिनी आय। रूप शीलबल बुद्धिहित ताक्षणसबै नशाय ॥ तात्क्षणसबै नशाय ज्ञानगुण गौरवहरहीं। पुनिकंदर्प बिनाशपानबीरा अतिकरहीं ॥ सुत सोदर पितुमाय नारिसों नेहउथापति । जब जाके तनमाहिं भूखभूतिनि होव्यापति ॥

एलाछंद। सुनि माधौके बैन बिप्रआदर अति कीन्हों । नम

स्कार करि जोर उच्च आसन पुनिदीन्हों ॥ भोजन रच्यो सुवेश कह्यो निज नारिन पाहीं । पुनि लैभीतर भवन गयो माधो द्विज काहीं ॥

छंदसंयुत । द्विज माधो को सनमानि कै । पगधोयो निजपा नितै ॥ षट ब्यंजन जेवनार के । परसे कंचन थार में ॥

चौ॰ भोजनकर द्विजबीरा लीन्हों । नमस्कार चूरामणिकीन्हों ॥
दै अशीश माधौ द्विजचल्यो । मदनमस्त जाके हियमिल्यो ॥

छं॰ तोम॰ । द्विजपूछ्योशुककाहिं । टिकिये कहांपुरमाहिं ॥
तब योंकह्यो परवीन । नृपबाग चाह नवीन ॥

दो॰ नृपअवासके अग्रसी बागअशोकनवीन ।
निकटतड़ागमहेशमठ तहाँअयनद्विजकीन ॥

चौ॰ बटबौलट माधवानिहार्‌यो । मृगछाला तिहिठांपर डार्‌यो ॥
मदनदीप द्विजके हियजाग्यो । कहनबारताशुकपैलाग्यो ॥

दो॰ बिधि बिनऊं करजोरिकै मोहिंदेहिद्वैइंठ ।
कैमृगनयनी बगलमें कै मृगछालापीठ ॥

चौ॰ निज जियकी माधोनलकहै । मेरे जिय चिन्तायहरहै ॥
हौं छलकर आयो प्रियपाहीं । जियैकंदला कैधौंनाहीं ॥
ऋतुबसंत अंत तक आई । सुधिन मीत बनिताकी पाई ॥
मेरे चित्त प्रतीतहै येही । बिछुरे मित्र न जियै सनेही ॥

दो॰ बोधाकबि नर देहधरि प्रीति करै जनिकोय ।
जो कदापि बिछुरै प्रिया मरै कि रोगीहोय ॥

चौ॰ जगमें जियतनसुन्यो बियोगी । जियैकदापि होयतौ रोगी ॥
करै योग उनमादी होई । याते प्रीति करो जनि कोई ॥
मैं किमि खबर मित्रकी पाऊं । असको जिहिधावन दौराऊं ॥
कहै प्रवीन बिदाकरमेरी । मैंसुधिल्याऊं बालाकेरी ॥
माधो कहै तोहिं पठवाऊं । मोकिहिमिलैपुनि बिरहबिहाऊं ॥
दूरदेशते गगन उड़ाहीं । मगमें कहींबाजधरिखाहीं

दो॰ तैं मेरेहितलागि मरै मैं तेरेहितपाय ।

मेरे तेरे मेर पुनि दोबनितामरजायँ॥
कहै सुवासुनमाधवा होनीहतीनजाय।
हरि गिरधरके हियबसै तऊकालधारिखाय॥
चौ॰ जोपै बिधनायहै बनाई। तोनामिटै किये चतुराई॥
पठवो मोहिं मैं खबरिलैआऊं। तेरे दिलकी साजमिटाऊं॥
दो॰ दिलदुख लिखिकरशुकगरेदई पत्रिकाबांध।
करिप्रणाम माधवाको चल्योकीरमगुनांघ॥
चौ॰ दिनबिलमोइकंततरुमाहीं। चल्योनिशाकामावतिकाहीं॥
दिवसचार मारगसो धायो। क्षेम क्षेम कामावतिआयो॥

इतिश्रीमाधवानलकामकंदलाचरित्रभाषाबिरहीसुभानस-
म्बादेउज्जैनखंडेनाम सप्तदशमोतरङ्गः १७॥
इश्कधकानाम॥ अथप्रगेश॥

अठारहवां तरंग प्रारम्भः॥

दो॰ भानुउदय अस्नानकरि कामकंदला बाम।
फुलवारी बैठीलखी भजतमाधवानाम॥
दरवादरखतडारपर बैठो सुवाप्रवीन।
कथीमाधवा विप्रकी कथाविरहरस लीन॥
गाथा। होकंदला परवीनं। तुव बियोग ममदुखलीनं॥
छिना छिना छिन दीनं। बुद्धिरटतमाधवा योगी॥ त्वंबियोग
दिलजानं। हियहनंत मकरद्धिजद्रोही॥ कुतहसुजाइपुकारं।
नाजानतयहदुखकोई॥ इत्थंसुन शुकबानी। चक्रितबाल
चाहत चहुंपासं॥ किहि यहगाथाबखानं। अहंमित्र माधवा
बियोगी॥
सो॰ माधोनल गुनगाथ को जाने पेख्यो कहाँ।
कितअस्थित अबिनाथ कौनादिशानगरीकवन॥
प्रवीन दंडक। छोड़्यो अन्नपान ब्रह्मज्ञान यों नध्योहै जाको
कामनाइजो इष्टअबिराधना। सोवतजागत सपनेहूमें चिन्ता

मित्रहीकी करतकलोलै मिटैरंचक न साधवा ॥ बोधाकबि नगर उज्जैनचैनचाहैं टिक्योभूकेदिवाले लागीहगनसमाधवा। कंदला केदरदादिलदारमें घूम २ योगीभयो डोलताबियोगी मित्रमाधवा ॥

चौ० सुनिशुकबचन बालउठिधाई । चलिदरवादरखततरआई ॥
अहो परबते पियके धावन । मेरेपास उतरि किन आवन ॥

दो० उड़िबालाके बांहपर बैठो सुवाप्रवीन ।
माधोनलकेदरदको रुक्कातताकोदीन ॥

छंदबिलाप । सुनिकंदल मृगनैनि । हौंआगयो उज्जैनि ॥ आनंदतनमनमित्त। तुवफिकर व्यापतिचित्त ॥ हौंकाकरौंहेबाल। बशनाहिं कर्म्मकराल ॥ हौंकरतकारजजोय। थिरनेहजातेहोय॥ वहहोनहारसमर्थ । हो तात तो न अनर्थ ॥ निहचै यहममचित्त । अबमिलहुंतोकहंमित्त ॥ तूचिन्तानकरियोचित्त । सुखसहित रहियो मित्त ॥ जगजियतरहिहौ जोय । तौ फेर मिलबो होय ॥

चौ० शुककीकुशल कुशलपियकेरी। बूझीबालसहसह्वैबेरी ॥
पांचदिवसबीते मगमाहीं । भोजन अबलौं कीन्हों नाहीं ॥
कनककटोरा चीरपियायो। हगनअंग शुकको बैठायो ॥
सखिबुलाय किस्सासमझाई । जैसीकुछ प्रवीननेगाई ॥

दो० चिठीबांच बूझीकुशल शुकको दूधपिवाय ।
लगीउरहनोदेनपुनि द्विजके कृतकोगाय ॥
सोवतमोको छोड़ि केगयोछैलछलकीर ।
हौंराख्यो निजकौलपै अबतक प्राणशरीर ॥
हितकीन्हों सुखचाहिके सोनहिं आयोकाम ।
हमको वह बारी भई माया मिले न राम ॥

चौ० कहैसुवासुनु स्वामिनिमेरी । दुखअपार देख्योंइहिबेरी ॥
अबजोमिलनहोय सुनुप्यारी । बढ़ै परस्पर सुखअधिकारी ॥
बेगबिदाकरि मोरगुसांइन । हौं जानतमाधवा सुभाइन ॥
पल २ बिरह बूड़ि द्विजआवै। करै प्रलाप कौनसमझावै ॥
कहै कंदला सुनुशुकबात । तूल्यायो पियकी कुशलात ॥

तूमोहिं मिल्यो धनंतर जैसे। अबमैं जानदेहुं कहि कैसे॥

दो० तोहिंपायमैं प्रानसो पायो सुवासुजान।
अबयाअपनी जबाँसे कबहुंकहौं ना जान॥
कहै सुवासुनुकंदला जिन रोकै मोकाहिं।
मैंलेआऊँ बिप्रको यामें संश यनाहिं॥

चौ० चिट्ठीलिखन लगीपियकाहीं। करकंपतसुधि आवतनाहीं॥
कसिकरलिखी मित्रको पाती। दीहस्वासतन में नसमाती॥

सो० तुवगुणमानिकचाहि बूडी इश्कपयोधिमें।
करते गयो हिराय धन रह्यो धारागई॥

स० सांकरलौ बरुनी कसिकै अंशुआनभईतसबीर कराखै। डोरेरहै बनसे सुरङ्ग तहां कफनी पल टारिकैछावै॥ बोधा निबुद्धि हौं मौनरहै मगमाधवा साधवा को अभिलाखै। त्यागिके भोग संयोग सबैरहीं योगिनीहोय बियोगिनी आंखै॥

सो० मनध्यावत है तोहिं दृग लागे तुवबाटमें।
मदन दहतहै मोहिं तनपचि लाग्योखाटमें॥

बरवा। परिगइ प्रीति भँवरमें जांजर नाव। इहि बिरियाँ मोहिं केवट पार लगाव॥ यहदिल की दिलगिरी लखतु न आन। कै दिलजानै आपनो की दिलवर दिलजान॥ बिरहबारिबाढ़ी नदिया चली तुराय। मोरो नवो जीवन बिरवाउखरि न जाय॥

चौ० पाती लिख कंदला प्रवीनी। बांधि गरे शुकके वह दीनी॥
बहुतक खबरि जबानीगाई। करि प्रणाम शुक चल्यो उड़ाई॥

दो० दिनाचार मारग रिंग्यो बीचन टिक्यो प्रवीन।
पंचमादिन माधवा को आय दंडवत कीन॥
शुक को आवो देखि कै शुक सों बूझ्यो बिप्र।
क्षेम छेम कंदला की खबरि सुनावो छिप्र॥

छंद मोतीदाम। कथ्यो शुक माधौ सों तब येह। रही अतिजी रन हो तिय देह॥ हरी पियरी सियरी द्वै जान। बिना जियकी पल माहिं बखान॥ करै उपचार बिचार अनेक। लगै नहिंराग

हु योगहु एक ॥ हकीमन की न चलै मन साह । लखै तिय देह अपूरब दाह ॥

सो० माधौनल तुवनाम दीपक रागसमान तिन ।
जगत दिया लौ बाम इहि सँयोग जीवतरहत ॥

चौ० सुनकेविप्रबिरह रसमोयो । विधिकी बुद्धि मंदपर रोयो ॥
जो महेश बिधि यही बिचारी । नये नेह बिछुरै सुकुमारी ॥
तौ कतनाद बेद मोहिं दीन्हा । वृषभ समान मूढ़कन कीन्हा ॥
मूरखनरनन व्यापै यारी । खर शूकर लौं रति अधिकारी ॥

सो० बिछुरे दरद न होत खरशूकर कूकरनको ।
हंस मयूरकपोत सुघरनरन बिछुरनकठिन ॥
मोसम अधम न आन प्राण प्रिया बिछुरे जियत ।
हियो बज्र भयो न्यान बिरहघाव बिहरतनहीं ॥
पढ़ि चिट्ठी यह हेत भयो माधवा बिप्रको ।
यथा चोर को चेत भूलजात पनहीं मिलै ॥
भरिआये दोउ नैन गहे आइ ठौका लग्यो ।
उत्तर देत बनैन पैरवार बूड़तयथा ॥

दो० कहै सुवा माधवा से और कहौं मैं काह ।
तुवहीतल शीतल करै यह बिक्रम नरनाह ॥
नृपति भोर अस्नान करि नित आवत शिवधाम ।
तब तैं राजा को मिलै होय सिद्ध सबकाम ॥

चौ० यहसुनविप्रशंभुमठआयो । करिदंडवतचरणशिरनायो ॥
पुनि कवित्तशिवको असकीन्हों । हौंप्रभुतुव शरणागतलीन्हों ॥

दंडक । कोऊन सहाय कलिकाल में दुखी को आय कासों क हौंजायभारी बिरदकलेश को । देखे राजराय दया हीन सबठौर जाय गिनती कहांलौंआय देशहू बिदेशको ॥ बोधा कबिध्याय२ धाय २ परपाय भरमगवांय कीन्हों करम अंदेशको । काहूके न जैहौं जैहौं आदर न पैहौं याते चरणगहिरहौं मैं तो शरण महेशको ॥

चौ० शंकरसोंबिनतीयह कीन्हीं।पुनिकरखरी माधवालीन्हीं ॥
जाते असरहोय नृपपाहीं । दोहा लिख्यो सिंधु मठमाहीं ॥
दो० धनगुण बिद्या रूपके हेती लोग अनेक ।
जोगरीब पर हित करै तेनहिं लाहियतुएक ॥
चौ० दोहालिखिशिव मठमें माधो।निजअस्थानेआयोबाधो ॥
दारिमाफल प्रवीन को ल्यायो । शिव मठको बिरतंत सुनायो ॥
दो० नृप बिक्रम अस्नान करि भोर गयो शिवपास ।
लखि दोहा मठमें लिख्यो बांचत भयो उदास ॥
चौ० राजा मनमें चिन्ता करै । अर्थ न दोहाको अनुसरै ॥
है कारण या दोहा माहीं । पै हित जान परत है नाहीं ॥
सो० दरद भरे नर ईश दोहाको पल द्वै लिख्यो ।
काज पराये शीश देत एक बिक्रम सुन्यो ॥
चौ० मनमें गुणत भूपघरआयो। कारणनाकाहुये सुनायो ॥
चिन्तारही।चित्तमेंलागी । हियेमांझकरुणाअतिजागी ॥
दो० अन्य दिवस मठशंभु पै ज्वाबमाधवापाय ।
फिरगाथा निजदरदको मठपैलिख्यो बनाय ॥
गाथा। कूतांकिं अंग पुकारं। जौनराम अवधेशपुकारं ॥
बिछुरंदरदअपारं । सहजानंतिमाधवा बिरही ॥
कुंडलिया । बिरहीजनकी पीरको अबजगजानैकौन । अव-
धनाथजानतहतेतिनसोसाधोमौन ॥ तिनसो साधोमौन जिन्हैं
बिछुरीतीसीता। अबकहिये कितजायकठिन बिछुरनकोगीता ॥
बहुत भूत किहि हेतसुनत निजुदुख नहिं थिरही । या कलिमें
करतार करै काहूजिन बिरही ॥
दो० अन्य दिवस महराज यह मठमें गाथादेखि ।
अपने बलकी बारता मठमें लिखी बिशेखि ॥
गाज परैताराज में सुखताको जरिजाय ।
बिरहीदुख टारेबिना अन्नपान जो खाय ॥
चौ० पूजाकर नृपडेरआयो। सचिवसमाज सबैबुलवायो ॥

तिनसों कही आपनीजीकी । पूरबकथा तासु बिरहीकी ॥

छन्दपद्धरिका । इकबिरह दुखीनृपनग्र माह ॥ आयोअचानजान्यो सनाह ॥ इहिबेगतासु कीजैतलास । है बिरहबेदनाभई जास ॥ दुखहरों करौंताको सुचैन । तबराज करौं फिरकै उजैन ॥ हौं अन्न पान करिहौं न सोय । जबलौंन बियोगी सुखीहोय ॥

दो० ढोल दिवायो शहरमें घर २ करोतलास ।
कोबिरहीनर कहां है लै आवो मो पास ॥

छन्दभुजंगप्रयात । हुकुमराय को पाय मंत्रीहँकारे। सहसएक कीन्हेंजमा ढोलवारे ॥ बजेढोल सारीपुरी शोर छायो।बियोगीको नाहींकहूं शोधपायो ॥

चौ० पुरबासी सबही उठिधाये । किहि कारण ये ढोलपिटाये॥
तिनसों कहै जानो तुम ऐसी । किसाएक हमसुनी अनैसी ॥
बिरही एक नग्रमें आयो । ताको चिह्न नृपति कछुपायो ॥
राजाकरी प्रतिज्ञा एही । जौ लौं सुखी न होय सनेही ॥
करना छुवौं पान अरुपानी । अन्नखान की कौन कहानी ॥
ल्यावै खोज बियोगी कोई । तापर कृपाराज की होई ॥

दो० यौंसुनि गुनि निजचित्त में बारबधूवररूप ।
बिरहीको ल्यावन कह्यो धीर धरहुतवभूप ॥

छन्दतोटक । बिरहीको खोजन बालचली । बरकेसरि अंगन अंगमली ॥ शशि आनन कानन नैनछिये । लखि हाटक कुंभ उरोज हिये ॥ मदमत्त मतंग यथागवनी । प्रौढ़ासबकोक कलारवनी ॥ कर बीन लिये मगमें डगरी । लहिमोह करै सबरीनगरी ॥

चौ० पुनि तिहिबाला भैरों गायो । ताको सुरमाधौने पायो॥
अपने दिलमें यहै बिचारी । यह है कोई बियोगिनि नारी ॥
प्रिय बिछुरे मनको समझावत । गौरीसमय भैरवीगावत ॥
ताके निकट माधवा आयो । तौलगबाला पूरवीगायो ॥

छन्दचौपैया । बीणाडार पुकारयार को पुनिबह रोवन लागी।

अस्तुति ताकीअकथ कथाकी लखीबिप्र अनुरागी॥ कंदलाजा नके प्रीतमानके एबार आय निहारयो। यहबाल सयानी बड़ी निधानी कहि या दोस्तपुकारयो॥ सुनि माधवयोगी बिरह बि-योगी गिरयो शूलधरिऐसे। कंदलै ध्यायके झमाखायके शर लागे मृगजैसे॥ लखिविप्र हालको भयो बालको निश्चयमन में सोई। बिरही पहिंचान्यो निश्चयमान्यो दूजे और न होई॥

दो॰ अहे कंदला २ कही माधवा टेरि।
यौंसुनबालाकी बिथा हरी बिप्रतनहेरि॥

चौ॰ उठितिहिबालबांहगाहिलीन्हों। निश्चयताहिबियोगीचीन्हों॥
हिये लगाय अंकभरि भेंटी। चाहै बिथा बिप्रकी मेटी॥
कहै बिदग्धा सुनु प्रिय मेरे। सब उजैन हेरी हिततेरे॥
अब निजुकारण मोहिंसुनावो। जाते तुम निश्चय सुखपावो॥

दो॰ तासोंपुनिमाधोकह्यो अपनेजीकोनेह।
समझिबिदग्धाबालने उत्तरदीन्होंयेह॥

चौ॰ तुमपरवीन पंडितसुजान। भूलेरतिवेश्या सोंठान॥
लोकहँसी परलोक नशाई। याते तुमको नैन निकाई॥
तबमाधो ज्वाब असदीन्हा। जिनने नहीं इश्कमग लीन्हा॥
तिनको लगी बात वहफीकी। जानै कौन पराये जीकी॥

बरवै। घरी न घर ठहराती खीझत नाह। बंबुरातर मनलागि कटीली छांह॥

दो॰ सुनसुभानता बाल पै पुराचीन सबहाल।
भांति २ आशिकन के यथा कहे ततकाल॥

छंद तोटक। वृत्तान्त सबै सुनि बाललयो। पुनिमाधवको यह ज्वाबदयो॥ द्विज धन्य तुहीजगमें जन है। गति एक अनन्य लग्योमन है॥

दो॰ नागिन वहै थल एक लागि दूजे रहे बटैन।
कीच बीच जैसे गुरा खिंच के फिर उचटैन॥

चौ॰ चालिमाधौ बिक्रम नृपपास। पूरणहोय तुम्हारीआस॥

एक दिवस रजनी पुनिगई । नृपघर नहीं मुखारी भई ॥
दो० कहैबिप्रसुन बिदग्धाहौंन लहौं तुवसाथ ।
अमिलसंग लखिकेहंसे निद्रायुतनरनाथ ॥
चौ० रविकेउदय बिदग्धानारी । महाराजको आयजुहारी ॥
बटकी छांह बाटिकामाहीं । कर्‍यो ठीक मैं बिरही काहीं ॥
माधोनामबिप्र अति सुन्दर । बयकिशोरज्यों लसतपुरंदर ॥
यहसुनराजा रथपहुंचायो । तापै चढ़िमाधो नलआयो ॥

इतिश्रीमाधवानलकामकंदलाचरित्रभाषाबिरहीसुभानसम्बादे उज्जैनखंडे अष्टादशमोतरङ्गः १८ ॥
इश्कदोटूकनाम ॥ यथाप्रसङ्ग ॥

उनईसवां तरंगप्रारम्भः ॥

छंदसुमुखी । माधोआयो नृपपास । राजतरूपमदन परकास ॥ प्रेरितबिरहदुर्बलदेह ॥ मूरतिवंत लसतसनेह । राजतकेश मुकुट सुढार ॥ कंद्रपदेहनिज अवतार ॥ केसरखौरलकुटीहाथ ।ओढ़ेपीत पटरतिनाथ ॥ कुंदनबरण अरुणकटाक्ष । भरेसनेह ॥ धोतीकमल पत्ररसाल ।पाउँन पांवड़ी लहि लाल ॥ गजरा दुवोहाथन माहिं । गल में मालिका बहुआहिं ॥ नृपदरबार पहुंच्यो आय। क्षितिपतिउठो दर्शनपाय ॥
दो॰ माधोनल को देखिकै उठो तुरत अवनीश ।
महाराजको देखिकै माधोदई अशीश ॥

(आशीर्वाद)

स० मूलन संगध्रुती जबलौं दरियाउ में जबलौं बारिभरा है । रामको नाम महीतल में जबलौं जगहोत बिरंचिकराहै ॥ जौलौं सुरेश गनेश दिनेश सुमेरध्रुवा जबलौं अचराहै । तौलग राज करै महराज जू जौलग शेशके शीशधरा है ॥
दो० पढ़ि कबित्त तंदुलधरे महाराज के शीश ।
पुनिमाधो ऐसी कहीछेम युगतअवनीश ॥

चौ० कहीनृपति माधोद्विजपाहीं। तुम्हरी छेमछेमहमकाहीं॥
सुखयुत ब्रह्मबंश है जौलौं। मेरोराज भूमितक तौलौं॥

छं०द्रु०। द्विजमाधवा तिहिंबार। नृपबचन सुनतउदार॥ दृगडभंकि आयोबारि। नृपरह्यो ताहि निहारि॥ पुनि कह्योद्विज परयेह। किहि हेत कंपित देह॥ अंशुआचलैं भरि नैन। हमहेतु सोसमभैन॥

दो० पुराचीन मेरेहितूसो बिछुरे तोहिं देखि।
याते मेरेदृगनमें पानी भर्‍यो बिशेखि॥

कवित्त। जन्मसंघाती चारयारसरदार मोतेबिछुरेरिसाइ मिला भेंटहोत तनमें। एकैसुतरातएकै दूरखड़े थहरात एकै हौंन देखे जातगये कौनबनमें॥ बोधाकबिचलउज्जैन नगरीको मेरोदारि दसनेही सोहिरायगयोबनमें। रोगुगयो डेराते बियोगगयो मारते योग जानहारभयो सँयोगु आयो मनमें॥

छं०मो०। जिमींपरलै अबतीरठठाइ। धरोतिहिपै थरिया अब आइ॥ चढ़्यो तिहिऊपर देवीपांउ। लहै दुहरी तिहरी भरयाउ॥ बटाकरएक फिरावतजात। तहांदुहरी लहिकै थहरात॥ कंपै नहिंपांवधरै नहिंधीर। टरैनतहांटठियाल बीर॥

दो० कलाएक अद्भुतकरी माधोनलगुनवान।
धायोकाचे सूतपर डोरी एकप्रमान॥
मैलेबटा अकासको इततै दुहरीलेइ।
दांतदाब अध बीचहू पगथारीपरदेइ॥
मनेकरी महाराज तब फुरखरहु धरलीन्ह।
निजआसन बैठारि कै दानलच्छइक दीन्ह॥
माधोनलकी ओरलखि शोच सहित नरनाह।
बीरादै पूंछनलग्यो नामग्राम चितचाह॥

माधोसंयुत। द्विजमाधवा ममनामहै। पुहुपावती ममधामहै। तहँ भूप गोबिन्दचन्दजू। लहिसोमबंशअनंदजू॥ कहिये गढ़ावह

देशकों। सुनियेनतहां कलेशकों॥ ममबेद वृत्तिबखानिये। नर-
नाह पूजितजानिये॥

(राजाबचन)

तो०छं०। द्विजक्यों तज्यो वह देश। युतधर्म्मनीकनरेश॥
तबमाधवाकहि येह। ममकर्म्म कूरसनेह॥

दं०। सुदिनकेसाथीहोत हाथीहथियारयारतातमात सोदरनली
नहिं काकही। सुदिनके साथी राजाराउखानसुलतान मानया
वितानतब पालककीलहीं॥ बोधाकबि सुदिन सभापति भये
तौ आपत्ति अनयास सुखप्रापत कहीं नहीं। बदनसपूती औ
कपूती यों तादिन अहेअदिन परे नीर नदिनमें रहैनहीं॥ सी
तासी कुमारी रामचन्द्रसे छितीशभुजबीशदशशीश तिनआ-
फतै घनीसहीं। डोमघरपानीभर्‍यो राजाहरिचन्द्र बली बलिरा-
यकी कहानी बेदमें कहीं॥ बोधाकबि पंचबीर पांडवापराई पौर
द्रौपदी सभामें दूशाशनखड़ेगहीं। वादिन सपूती औ कपूती
तादिनहै अदिन परेतेनीर नदिन रहैनहीं॥

दो० यौंसुनि गुनि निज चित्तमें पुनिबूझीनरयेह।
कहागरज चितचाहकर गवन कियोयहदेश॥
सुनि सुभान माधोकह्यो नृपपै सब बिरदंत।
पुहुपावति कामावती दुखीभयो तिहि तंत॥
सुनि सुभानराजाकह्यो सुनमाधौगुणवान।
कामकंदला नटीसों प्रीति करी काजान॥

चौ० माधौकह्यो सुनोनरनायक। चितकीलगीहोतसबलायक॥
रूपकुरूप प्रवीन अयानो। वहै सरस जासों मनमानो॥

(राजाबचन)

प्रथमबिप्र पुनिबेदबखानत। कथापुराण नाद बिधिजानत॥
हरिहरभजन तुम्हारे लायक। बंश अठारह के तुमनायक॥
मगरसाख सिगरी जगजानी। कसलायकयह प्रीति बखानी॥

(माधोवचन)

है वहसत्य आपजो बरणी। मोसों सुनो इश्ककी करणी॥
पीरपराई लखत न कोई। जाके लगी जानतहै सोई॥

कुंडलिया। घुनको जो घिउ प्याइये तो तुरतहिं मरजाय। वाको वही मिठासहै सूखी लकरि चबाय॥ सूखीलकरि चबाय चकोरन बूझौयेही। तुमक्यों अंगरा भखत सुधाधर कस्योसनेही॥ कमलनसों यह बूझौ दत का दिनकर उनको। घिव प्याये मरिजाय लकरिया भावत घुनको॥ शक बंधी बिक्रम सुनो भूल जात धन धाम। लागगई तबलोककी लीक न आवत काम॥ लीकन आवतकाम लाज गृह काज न सूझै। जगभयोयों उपहास जाति पांतिहि को बूझै॥ बोधा कबि गुण ज्ञान ध्यान भूलै सनबंधी। लगै इश्ककी चोट सुनो बिक्रमशकबंधी॥ त्यागत तन मृगराज राग सुन दीपक संग पतंग। मछरी जल बिछुरतमरै यही प्रीतिकोअंग॥ यहीप्रीतिको अंगस्वाति चातक घन बरही। चुंबकलोहा मिलै फेर न्यारो को करही॥ बोधा कवि द्दग लगै लोक अचरजसो लागत। हारिल सों बूझौ यह लकरिया काहेन त्यागत॥

दो॰ कीन्हीं प्रीति कुरंगसों भरत भूप तपछंड।
मृगाभये नर देह तजि प्रेम प्रकृति अस मंड॥

दंडक। सफरी कुरङ्ग लोहा चुम्बक पतङ्ग भृंगी हारिल पपीहा दिया बरही बिकानेहैं। कमल कुमोद कोक भमरी घुनौ ताकीरा कमलन मायो कस्तूरी अंगजाने हैं॥ पन्नग चकोर चूना हरदी परेवा मेघ चञ्चरीक चंदनऔ चंदा चितआने हैं। क्षीरनीर सूती हंस चित्रके सुवालो देखि प्रेम रत्नाकरके बुद्दाय बखाने हैं॥

सो॰ यों माधौके बैन सुनि बोल्यो बिक्रम नृपति।
तेरे लायक हैन माधौ प्रीति नटीन की॥
पूरब पुण्य सनेह मनुज भयो यहकालमें।

पुनि द्विजके घरदेह नादबेद सो दुज्जयुत ॥
चौ० मनुज जन्म पावत नहिं कोई। मनुज भयोतो बिप्रनहोई॥
होहि बिप्रतो नादन जानै। बेद जाननहिं नादबखानै॥
जो कदापि पुनि रागहिपावै। तो अस रूप न कोऊपावै॥
तो कहँ बिधिने सबही दीन्हीं। पूरबबड़ी तपस्याकीन्हीं॥
सो० निगम कही यहरीति चित बित दीजै पात्रको।
करि बेश्यारत प्रीति ऐसे बदन न खोइये॥
दंडक। जाके सतसंग पाय चलत निर्बानऐसी नैया भवसिंधुमें न दूसरी लखात है। ताही नरदेह सों सनेह तू करतनाहिं श्यामा श्याम ध्याइबेकी येही अवखातहै॥ बोधा कबि फेरयाको पायबो कठिन बड़ी कठिन यों याही थोरेकपटी रिसात है॥ ऐसी प्राणप्यारी इहिबारी तू मेरे कहे राखत बनै तो राखजात है पैजातहै॥

(माधौबचन)

चौ० व्यभिचारी व्यभिचारी चाहत। ज्वारी २ प्रीति निबाहत॥
रसिकनरनकेमन ब्रजनायक। बसत सहितगोपिन सुखदायक॥
रस वंत ब्रह्म निगम मति गावत। ताकहँ योग यज्ञकोपावत॥
सोरासहस नायका गावै। योगी जड़मति सो क्यों पावै॥
छप्पय। मच्छरूप बीभत्स कच्छ वत्सलरस जानी। भयेस्वरूप बराह रुद्रनरसिंह बखानी॥ बामन अद्भुत रूप बीर भृगुनंद ताहि गनि। करुणा मय रघुनाथ कृष्ण शृंगार देव भनि॥ निर्बंध बोध बोधा सुकबि लहि कलंक परहासरिषु। सहित इष्ट गावत निगम दसरसमय रसवंतपुरुष॥
सो० नादबेद रतिरंग सुन्दरता अनभव बिभव।
येलखि जिन के अंग तिनहींमें ब्रजराज नित॥
दो० मगन रहत रतिरंगमें गावत रस शृंगार।
ऐसकही ब्रजराजने सोई मेरो यार॥
चौ० मैं अपने जियमहै बिचारी। सतबैकुंठकंदलानारी॥

जब देखों निज प्रीतम काहीं। मुक्त होनमें संशयनाहीं॥
दो॰ आपहि होके स्वारथी मोहिं चलैलैराम।
तो न जाउँ वा लोकको बिना कंदला बाम॥
बिनयारी का लै करौं सुरपुरहूकोबास।
मित्रसहित मरिबोभलो कीन्हें नरक निवास॥
चौ॰ तबनृपकेमंत्रिन मतकीन्हा। ज्वाबएक माधौकोदीन्हा॥
ऐसी न सराहिये यारी। चाहौ लियो पराईनारी॥
परदारा अपनीकरजानत। ताहीसोंतुम इश्कबखानत॥
बरबसकोऊ परधनचाहै। बिनादियेकैसे वहपाहै॥

(माधव)

दो॰ ल्यावतचोर चुरायकेदियो भिखारीलेत।
बरियाई हाकिमकहैं आनमिलेसोहेत॥
वामेरीनिजु नायकामैं वाकोनिजुनाह।
कछुदिनजानीआपनी नृपपै भयोगुनाह॥

(राजावचन)

दो॰ पांचलाख उज्जैनकीबस्ती कोपरमान।
कल्पलतासी कामिनी केती करौं बखान॥
छंदसुमुखी। द्विजतुमलखो सबउज्जैनि। घर २ सोहती मृग-नैनि॥ बिटियाबधू बालाकोइ। कौनौजाति सुन्दरहोइ॥ जामें चुभेतेरो चित्त। सोमैंदेहुंतो कहँमित्त॥ माधौकही नाहिंन राज। दूजीबामसों कहकाज॥ मेरे मित्तके समकोइ। तीनों लोकमें नहिंहोइ॥ यहसुनसचिव सबपरवीन। उत्तर माधवाकोदीन॥
दो॰ हुकुमपाय महराजको धीरज क्यों धरियेन।
जोहोनीसोहोयगी अबपीछे फिरियेन॥
स॰। निशिबासरनींद औ भूखनहीं जबतेहियमें मेरेआनबसी। मिलतेनबनै जगकीभयते बरहूनरहै हियकीहुलसी॥ कबिबोधा सुनेहैंसुजान हितू उरअंतर प्रेमकी गांसगसी। तिनकोकलकैसे परैनिरदईजिनकी हैकुयागर आँखफँसी॥ बातनहीं समुझावै सै

वहपीरहमारी नपावतकोई। सोकाकोकरै मानसिखापनको जियजाहीको आपने हाथनहोई॥ बोधाकदाचित जानेवहै यहमोहियमें जिन बेदनबोई। चावकचोट कटाक्षनकी तनजाके लगी मनजानतसोई॥ बोधासुभान हिलूसोंकही यह दिलंदरकीको सहीकरमानत। तामृगनयनीकी चारुचितौनि चुभीचितमें चितसोपहचानत॥ तासों बिछोह दईनेकरयो तो कहो अबकैसेमैं धीरजआनत। जानतहैं सबहीसमझाय पै भावतीके गुणको नहिंजानत॥

(राजाबचन)

छन्दतोमर। सुनिमाधवा प्रतिबैन। फिरकह्यो बिक्रमसैन॥ ममसहल भीतरजाय। जितनायका समुदाय॥ सबकोकिला परवीन। नयेयौबना रसलीन॥ बनिताबधूतकमें मित्त। जिनमें चुभैतेरोचित्त॥ सो देउँ तोकहं आज। अरु ग्वालियरको राज॥ निजटेकतजिकैबिप्र। यहकान कीजैछिप्र॥

(माधवा)

दंडक। हेरहिरनाछीहारो चारहूदिशामेंभारी जिनकेकटाक्षन सोंपाहन शिला फटै। तेऊताचुभैना बोधाचक्रकुचकोरनकेजोरन हितू कै कोऊमुख सों कहारटै॥ सुन हे सुभान हियोहारात सरसताबियोग बज्रघाउनसो रंचकनहींफटै। खूबीकेसमाज ठौर २ देखआयोयार पै नाया दिलदारको दरदकहूंघटै॥

दो० कहैनृपतिसुनु माधवा जिन भूलैबेकाज।
निज कुटेकको त्यागकै करोग्वालियरराज॥

(माधौबचन)

चौ० कहाराज करियेलैस्वामी। जोनघटै दिलकीबेरामी॥
मेरोराज्य कंदलानारी। तापैसबै रजायसुवारी॥
जौलौंहौं जीवतजगमाहीं। तौलौंभजौं कंदलाकाहीं॥
जियतैजियों मरैमरिजाऊं। जन्म २ दिलबरकोध्याऊं॥
स्वरगहितूतो स्वर्गपधारों। नरकहितूतो नरकसिधारों॥

जपतपकरौं उसीके कारन। जौलगधरिहौं देहहजारन॥

दो० शंकर बिष कूरमधराबाड़वउदधिनिहार।
अंगीकृत बोधा सुजन तजनबडुसहाबिचार॥

(राजाबचन)

दो० सुनुमाधौ करतूतिमें कमीकरौं में नाहिं।
तारे मांगो स्वर्गके तौ मैं पाऊं काहिं॥

(माधवाबचन)

दो० महाराज द्वै भांति के बचनकहत संसार।
ते न्यारे २ कहौं सत्य असत्य बिचार॥

(सत्य बचन)

स०। भान उदय उदयाचल ओरते पूरबको पुनिपांव धरैना। त्यों शिरनेतसती धरके धरके फिरबेकहँ चित्त धरैना॥ ज्योंगज दंतसुभायकह्यो कदलीतरु दूसरिबेर फरैना। त्योंही जबान बड़े नरकी मुखसों निकसैवह फेरिफिरैना॥

(असत्य बचन)

दंडक। धूमधाम चामदाम ग्रामबाजीकैसेआम फागुकैसेबाव रामनकोकलेवाहै। भानमतीसती जैसे सपनेकी रतीजैसे संन्या सीपतीजैसे पावकोपरेवाहै॥ बोधाकबि कपटकी प्रीति भीतरैनका कीबे दहतजैसे सूमनकी सेवाहै॥

दो० दूजोदिन बीतोनहीं बीचबसी नाहिंरात।
शंकरमठकी बारताअबहीं बिसरीजात॥

(राजाबचन)

कहैनृपति सुनुमाधवा यों है बचनबिवेक।
लखिअपनी सामर्थ्यलौं बड़ेनिबाहतटेक॥
कामकंदलानटीपर कामसेनकोप्यार।
सोकहुकैसे पाइये बिनाकिये हथियार॥
मांगे वे देहैं नहीं लरिबो उचित न होय।
कहौ बिप्र कैसे बनै ये अबध्य लखिदोय॥

कुंडलिया। बाचालौं श्वासा भली सुनुबिक्रम नरनाथ। भई भली कै होय पुनि बाचा श्वासा साथ॥ बाचाश्वासा साथ के कबिनएकन नीकी। श्वासा कबहुंक जायटेक छूटैनहिं जीकी॥ श्वासासार शरीरबचनलौ क्षितिपतिराचा। कहा जियेको स्वादजायतादिन गिरिबाचा॥

दो० सुन २ माधौके बचन भयो क्षितिपति उरतेहु।
फौजदार सों यों कही क्यों न नगाड़ा देहु॥

इतिश्रीमाधवानलकामकन्दलाचरित्रभाषाबिरहीसुभान
सम्बादेउज्जैनखण्डेउनईसमोतरंगः १९॥
लोहचुम्बकनामइश्क अथप्रसंग॥

बीसमोतरंगप्रारंभः॥

भु०। बजेखाखरा योंबनीघोरकीन्हीं।मतेदिग्गजन जोरचिक्कार दीन्हीं। नगाड़े यथा मेघमालाधुकारैं। तिन्हैं चाहढाढ़ी शिखंडी पुकारैं॥ बजेतूरही भूंगही भेरिगाजैं। मनोगाज चिल्लीहजारान राजैं॥ बजैंसाहनाईं घनेढोलजंगी।गजैंशाहके चाहमानो मतंगी॥ बजैंगुड़गुड़ी ढक्कबीनाभनाके। यथा बाटिका भूरिभृंगी भनाके॥ बजे नारसिंही चढ्यो जोर चित्ता। पढ़ैं रावराना हजारों कबित्ता॥

छन्दसुमुखी। छत्रीसजे छत्तिसकौम। यमपैजेजनावैं जौम॥ धसकत धराकंपत शेश। रह्यो धूरिपूरिदिनेश॥ जकतशंकमा नादिगीश। करकति दिग्गजों की खीश॥ उछलत सिंधुबारिप्रचण्ड। थर २ कँपतभारतखण्ड॥

छन्ददोधक। बिक्रमकेदलकी बहुताई। सोकिमि जायकबित्त नगाई। जानत हैं जगसो छत्रधारी। दीपतसातहु दीपनिहारी॥ खोरिनखोरिखड़ीं असवारी। भूरिगरदनहिंजात सम्हारी। शैलबरच्छिन सों पुर बंध्यो। योंदलदीरघ बिक्रमठंध्यो॥

दो० चैतपक्ष शुक्ल रोहिणी प्रथमयाम शनिबार।

पाय सुभग तिथिपंचमी भयोनृपति असवार॥

छंदमोतीदाम। चल्यो दलदीरघ बिक्रमसाज। उठैश्चड़ि मत्तमतंगगराज। रैरैरणमारबढ़ा हियजोर। कबित्तन मंडितभाटनशोर कपैजिमि भूमिचलै दलपात। लखैदिशिचार ध्वजाफहरात॥ रिंग्योसिगरे दिनतापुरमांझ। भईपुरबाहिर आवतसांझ॥

दो॰ दिनअथयो डेरापरे क्षितिपति सौंहोंदीन।
माधौनल बिनतीकरी भोजनकरौ प्रवीन॥

राजाबचन

सो॰ जौलौं द्विज हित भयोन तौलौं भोजननाकरौं।
सत्याहारै कौन थोड़े दिनके जियनको॥
मास एकको काज कहै नृपतिसों माधवा।
कैसे जीहौ राज तौलगपानी पानबिन॥
समझायोबहु भांति सबहीने महराजको।
तबधरिनिज उरशांति फलाहार क्षितिपतिकर्यो॥

छंदमोतीदाम। जग्यो नृप चाहि उदय रबिकेर। कह्यो तब कूध नकीबन टेर॥ बजैं घनसे अतिदीह निशान। खड़ोदलयो जन आठ प्रमान॥ सकैत भूमि धरकतशेश। कर्कत शूरडाढ़क लेश॥ बरकत भूरि भई असमान। परैलखि नाहिं दुरयो कतभान निशान लयो लखि लालियसाज। चल्यो धरि देह मनो ऋतु राज॥ रह्यो दिनमेंवहरैनि प्रमान। हर्षतभयेचकही चकवान॥

दंडक। साजि चल्यो विक्रम समर्थ दलदीह दिग्गज तिनके दंतन दरेसे दीजियतुहैं। पारवार वारके फुहारेसे बढ़त देखि तंकितादिगीशन के हियसीजियतुहैं॥ बोधाकबि सारी बसुधा मेंअँधियारी चाहि कोकनद कोटिन बियोगी जियतुहैं। एकमाधवा को दरद हरबे को चक्रवाकन को नाहक संतापलीजियतु हैं॥

स॰ बोलतझुंड नकीबनके सुन सो कुइलीन की कूकसुहाई। कैयो हजार रबाबबजैं जनुकुंजित भृंगनकी प्रभुताई॥ बिक्रम

की चतुरंग चमू लखिये दिशिचारि ध्वजा अरुणाई । धायोबस-
न्त सदेहमनो सबभूमि पलाश के पुंजनछाई ॥

दो० चमूसबै चतुरंगसो बिदाकरी नरनाथ ।
आप चलो कामावती सौसाँवतलै साथ ॥

माधौबचन

चौ० मेरेचित प्रतीति है ऐसी । मधुरित बिरही नरनअनैसी ॥
कैसे जियत कंदलानारी । नवयौबन बाला सुकुमारी ॥

सो० मारन धायोमोहिं नृप बसंत अति गुसाकरि ।
अगरदेख्यो तोहिं मुरक्यो फेरनिराश ह्वै ॥

राजाबचन

दो० जो मैं निजकानन सुनौमुई कंदलानारि ।
तो यमपतिको बांधि के देउँ उदधि में डारि ॥

चौ०बचन बिलासकरत नर नायक।सहितबिप्र रथपैसुखदायक॥
बीत्योपक्ष एकमग माहीं । आयो नृप कामावति काहीं ॥
कोसआठ पुरबाकी जबहीं । कह्योबिप्र राजासों तबहीं ॥
देखो नृपकामावति आई । योजन पांच बसत समुदाई ॥
कनक कलशबहु भांति बिराजैं । ते मंदिरनरेश के राजैं ॥
यह जो अटाघटा सम जोहै । सोऊ हर मंदिर दृग जोहै ॥
जो यह उदित भान समदेखी । रतनक्षत्र क्षितिपतिकालेखी ॥
नीचे महल होयनटसारा । तिहि नीचेलागत दरबारा ॥
पूरबदिशा अटा इक जोहत । ललित चँदेवातापर सोहत ॥
तिहि अवास वह बसत कुमारी । अबप्रभु दक्षिणओर बिहारी ॥
कनक कलशगुम्मट अति भारी । अवधनाथ मंदिरधनुधारी ॥
कंजारन तालसुख दायक । रवनबाग तिहि तटनरनायक ॥
कोश एकबाकी पुर जबहीं । डेरा कीन्हों बिक्रम तबहीं ॥

दो० मदनावति के बाग में डेराकरयो नरेश ।
आपचल्यो कामावती किये बैदको भेश ॥

चौ० बैदभेष महाराज बनायो । सत्वर चलि कामावति आयो

दक्षिण दरवाजे नृपपैठा। देखातहांजगाती बैठा ॥
गठरी लखी भूपको लीन्हे। पकरि बांह तिन ठाढ़े कीन्हे ॥
तब नृप कह्यो बणिक हमनाहीं। नहीं लोन याहि गठरी माहीं ॥
हम हकीम बर बैद्य सयाने। औषध भांति२ की जाने ॥
पुरिया एक लाख तिहि माहीं। नृपरस कह्यो जगाती काहीं ॥
दो० चलिनृप आयो शहर में कामकंदला द्वार।
सत बैद्यनतें सरस अति कीन्हीं तहां पुकार ॥
सुनत कंदला की जनी बैद्यै आई लैन।
गइ लिवाय निज महल में जहां बसत मृग नैन ॥
चौ० चलहकीममहलनमेंआयो। दरशनता बनिताकोपायो ॥
उत्तम उच्च बैठका दीना। नृपतापर बैठो आसीना ॥
देखत नृपति कंदला काहीं। भयो चकित ताही क्षण माहीं ॥
कसना माधौ इहि बश होई। ऐसी तिया और नहिं कोई ॥
कहै हकीम हाथ मोहिं दीजै। नारी लखि उपाय सोइ कीजै ॥
दो० नारी की नाड़ी लखी कपट सहित महराज।
पुनि तासों लाग्यो कहन रोग समाज इलाज ॥
छंदमोतीदाम। घरीकिन माहिं हरी है जात। परी पियरीप लमाहिं लखात ॥ घरी सियरी अतिदीरघ श्वास। नहीं तियके करमें बिरवास ॥ नहीं कफपित्त सुबात बखान। नहीं अश्लेष हिये असजान॥ नहीं तनरक्त बिकार लखाय। नहींतियके तन प्रेतबलाय ॥ लगी नहिं डीठन मूठसँयोग। परैलखि नाहिं अ-पूरबरोग ॥ नहीं यह बेदन बेदन देख। कही लुकमान हकीम बिशेख ॥
दो० पित्त दाह को प्रथमहीं पित्त पापरो ऐन।
दूजे निबुआ तीसरे दाख कही सुख दैन ॥
शशि बदनी के बदन सों रहिये बदनलगाय।
तिके बिके पितके पल में देव ठँढाय ॥
दो० पहकर मली सोंठि पुनि मिरच कटाई आनि।

याकाढ़े ते होत है कफ के ज्वर की हानि ॥
इसे कौक ठौका करै अकुटीलौंग मिलाय।
दिन द्वै गोलीखाय तो कफखांसी हटि जाय॥
अधकच जीरेलीजिये आधे भूंजे लेय।
मलै सरसुवां अंगसों बातज्वर तजि देय॥
मधुपीपर सेवे सदा नित संयमसों खाय।
मास एक में तासुको बिषमज्वर नशिजाय॥
कहीअजीरण रोग को अजवायन अरुलौन।
निरगुंडी गटान बात को कहीबकायन तौन॥
सन्निपात पर यों कह्यो काढ़्यो सुंठी आदि।
कै चिन्तामणि रस करै सन्निपात कहँ बादि॥
कह्यो धना पाचक भलो संग्रहणी परजोर।
अतीसार पर रस करै आनँद भैरों तोर॥

चौ० रक्त बिकारी गौंच लगावै। प्रेत काज पंद्रहा भरावै॥
बहुनायक तें गरमीहोई। चोपचिनी नाशक तेहिसोई॥

दो० बहुत रोग औषध बहुत नाड़ी गुण समुदाय।
प्रथम कह्यो है बैदको चलै सगुन शुभपाय॥

छंदसुमुखी। अद्भुतरोग तिय के अंग। जाको समुझपरत नारंग॥ सहस इकलखे रोगी सोय। ऐसो रोगिया नहिंकोय॥ यासों बूझिये यह बात। तेरकौन ठौर पिरात॥ ताको होतकैसी पीर। दिलकी कहो सोधरि धीर॥

कंदलावचन

स० काहुसों कहा कहिबोसुनिबो कवि बोधा कहेते कहागुण पावन। जोई है सोई है नीकी बदी मुखसे निकसे उपहास बढ़ावन॥ याही ते काहू जनैये न बीर लहै हितकी पै कहै नहिं दावन। जीरण जामा की पीर हकीम जी जानत हैं हमके मन भावन॥

चौ० तबहकीमबोल्योमृदुबानी। प्रज्ञा पीर अबहौं पहिंचानी॥

बिरह रोग जाके हिय जानो। जीवत मुयो ताहि पहिंचानो ॥
तियकी सखिन अर्जयहकीन्हीं। है यह पीरसत्य तुमचीन्हीं ॥
अब इलाज याको कछु कीजै। प्राण दान सर्बस किनदीजै ॥

बैदबचन

दंडक। सिखी को जाख्यो जियैसिंहको बिदारयो जियै बरछी-को मारयो जियै वाको भेद पाइये। गरलको खायो जियै नीर-को बहायो जियै औषधी पिवाइये ॥ सांपहू को काटो जियै य-महू को डाटो जियै मौतहू को बोधा जियै यतनबताइये। वैद्य-होविधाता जो उपाय करै बोधा कबि नैनन को मारयो कहो कै-से कै जिवाइये ॥

सो॰ सुनि हकीम के बैन फिर बूझी तिय कोबिंदा।
क्यों पावै चित चैन बिरह भुवंगम के डसे ॥

वैद्यबचन

छंद सुमुखी। बिरहीन जीवै कोइ। जीवै अजर रोगी होइ ॥
कै पुनि करै योग बिशेख। कै उन्माद पूरण देख ॥ चित में रही येही मित्त। हाअब कहां पाऊं मित्त ॥ कबहुंकजियै रोगीजीव। जीवहि पावही निज पीव ॥

सो॰ जिहितन बिरहबलाय सो प्रानीकैसे जियें।
जीवै प्रीतम पाय यों उपाय या रोग को ॥

सखीबचन

चौ॰ अहोवैद्ययात्रियकोभावन। छलबलसोंसमरथजिमिबावन।
वैश किशोर बिप्रअति सुन्दर। लाहिराजसु जनु आय पुरंदर ॥
गुणी मांझ अस गुणी न कोई। आगे भयो न अब फिरहोई ॥
गुण बशकाम सैनकहँ कीन्हा। द्विजको देश निकारा दीन्हा ॥
अति बिहाल बाला भइ तबहीं। देख्यो द्विजैजातमग जबहीं ॥
काम कंदला प्रीतम काहीं। राख्यो एकपच्छ घरमाहीं ॥
द्विज अपने मनमें यहजाने। मोपर भूप गुसा अति ठाने ॥
सोवत ताजि सो गयो सनेही। देश उजैन सुन्यो अबतेही ॥

बरषअवध कीन्हीं द्विजद्रोही। अबको आन मिलावै वोही॥
दो० नयाकिशोर बीणा लिये केसर मुकुटतन गौर।
कामकंदला बालको माधौनल चित चोर॥
सो० रति पति धरिनर देह किधौंआय तियको छल्यो।
कहां पाइये तेह बैरी पूरबजन्मको॥
चौ० सुनत बचन नृपयहै बिचारी। धन्यमाधवा धनियहनारी॥
अस सनेह कस होय न लोनो। समदायक लायक ये दोनो॥
चाहै नृपति प्रतिज्ञा लीन्हा। तिहि मारैका उद्यम कीन्हा॥
कह्यो सत्य वह माधवकाहीं। देख्यो मैं उजैनि पुरमाहीं॥
बीण लिये बाउरी रखावै। केसर खौरि सो भाल बनावै॥
लकुटरँगीन पीतपट धोती। पगनपांउड़ी कानन मोती॥
मुक्तमाल सेली गल देखी। फूलहार अरु त्रगुण बिशेखी॥
ढंगजश दोनों कर माहीं। दोनों हुवो भांति के आहीं॥
अति दुर्बल तन बिरहसतायो। कछुक अजारऔर तिहिपायो॥
अबवह बिप्रजियतहै नाहीं। त्याग्योतन उजैन पुरमाहीं॥
दो० वैद्यबचन हिय अति कठिन लागे कुलिश समान॥
हाय मित्र माधवा कहि तजे कंदला प्रान।
निज कुबुद्धि कर धनुष गहि शरसी जबांचलाय।
हारिणी सी बनिता हनी बिक्रम बीण बजाय॥
दो०सारङ्ग। मरी निहार कंदला हरी २ नरेश कीन्ह।
गयो नशाय चौकचाय हौंबिसाह पाप लीन्ह॥
लगी सो कौन बुद्धि मोहिंवोहि ज्वाब देब कौन।
हरीन पीर हौंकरी भई न लोक माहिं जौन॥
सो० मुई लखी जब बाम हाहाकार पुकारके।
सखियां गिरींतमाम कहि बिरंचि का निर्मई।
होनहार को ख्याल यम भयो यतन हकीमको
उठ्यो ढालतकाल कहो ओट दीजै कहा॥
तोटकछंद। हाहाकहि शोरसखीनकरयो। कछुपल एकन-

धीर धरचो ॥ राजा इकबातकही तबहीं। जीहै यहबाल लखौं-अब हीं ॥
चौ० कहै वैद्यसबलखियन पाहीं। तुमजिनशोच करौमनमाहीं ॥
हौं इकअजब इलाज बनाऊं। मुयो सातबासर को ज्याऊं ॥
जौलौं न फिर आऊं इहि पासा। तौ लौं तजौं न तियकीआसा ॥
परख्यो चार पहरमों काहीं। हत्या मोहिं जियै जो नाहीं ॥
दो० क्षिति पति निजु डेरेचल्यो चितमें करत गलानि।
यशकरतनअपयशलग्योधनिकलियुगबलवान ॥

इतिश्रीमाधवानलकामकंदलाचरित्रभाषाबिरहीसुभानसम्बादे
उज्जैनखंडेबीसमोतरंगः २० ॥
इश्ककुजनाम। अथयुद्ध खंडे ॥

इकईसमोतरंगप्रारम्भः

छंदपद्धारिका। नृपहत्यो करत चित्तमें गलानि। अति धन्य धीश कलियुग्ग मानि ॥ हौंकहौंका हाल सिफत तोर। पलमें पलटी तू बुद्धिमोर ॥ हौंसुयश बाद यह कामकीन्ह। तुमअयश अन्यासै लायदीन्ह ॥ इमि मरीकंदला बालयेह। उतमरहि बिप्र याके सनेह ॥ हौंजावँ कहां यह सुयशलाद। अबभयो मोरज-गजियत बाद ॥ जो जियतरहौं नहिं मरौंअब। तोसुयश सपूती बृथासब ॥ प्रणघटैजगत उपहास होय। इगजियतरह्यो जोसु-यशलोय ॥ अबमरन मोर उत्तम विशेख। जगमें उपाय नहिं-आनदेख ॥

दो० अगम अंक ये भाल के यतनबृथा हैं मित्त।
होनी प्रथमै जातहै पाछे दौरत चित्त ॥
धन्य२ बिधि बुद्धि तुव करी आनकी आन।
करनवार करमें रही तेरी करी प्रमान ॥
पैना करत बिचार के है ना नीकी साध।
जल प्यावत प्यासो मरै अन प्यावत अपराध ॥

दंडक। जलथलज कीन्हें सुमन कटी डारशाशि में कलंक बं कवार सरसाती हैं। योबन वतिन धौं लताहीके सुपासनमें नारिका निपुंसनके सुन्दर लखातीहैं॥ बोधा कबि सुजन बियोगी रोगी महाराज पंडित निधन धनवंत मतिमाती हैं। वारिनिधे-बारछार गूढ़थलकीन्हेंबार यातेबाजीबिधिकी साखीचलीजातीहैं॥

चौ० परयोशोचसागरनरनायक। अब जगजीवननमोरेलायक॥ शोचत निजडेरा को आयो। हँसि माधौको पास बुलायो॥ चाहैतासु प्रतिज्ञा लीन्हीं। तुरत खबरिबनिता की दीन्हीं॥ जीवत या कामावति माहीं। माधौकाम कन्दलानाहीं॥

दो० मरीनारि यह श्रवण सुनि माधौ तनतजिदीन्ह।
हाय कंदला २ कह कंदला प्रवीन॥
शंखनाद देवनकियो छाये ब्योमबिमान।
इततन त्याग्यो माधवा उतकंदला सुजान॥
शिव बिरंचि हरि निगमनित शोधतजाकी बाट।
ता अखंड निजधाम के खुलेअनयासकपाट॥

छंदतोटक। माधौतन त्यागकियो जबहीं। राजाअति चकित भयोतबहीं॥ हौंनाहक दो जिय घातकियो। भारीअपराधबिसाह लियो॥ मरिबो सलाह दूजी न बात। जगजियत सुयशसबसुन सात॥ तब कह्यो नृपति मंत्रिन बुलाय। पर रच्योचिता चन्दन मँगाय॥ हौंजरहुं बिप्रके साथ आज। तुम करौ सबैउज्जैनराज॥ तब कहैंमंत्री नायक प्रवीन। किहिहेत बिप्रतनत्याग दीन॥ तब कहैं नृपति सुनिये सुजान।हौंकिये दुहुंनके प्रानहान॥ उतजाय कह्यो कंदलापाहँ।तुवमित्त मर्‍यो उज्जैनमाहँ॥ यहबचनसुनत तनतज्योनार। कहिहाय मित्र माधौउचार॥ मैं अतिजरूर द्विज पास आय। सबकही कथा तिहि अग्रगाय॥ तियमरी सुनत माधौप्रवीन। कहिहाय मित्र तन त्यागदीन॥ हौंअमर करन आयो बिशेख। अब अमरभयो मुखमोर देख॥ मुखमोर ध्याह देखो न कोय। इहिकाल चिताबनि त्यारहोय॥ इमिसुनत बचन नृप

के बियोग । तब सचिव कह्यो बिगस्यो सँयोग ॥ द्विजमस्यो नृपमरिहैं बिशेख । नहिंतजत टेकक्षितिपाल देख ॥ कोदेय मस्यो ब्राह्मण जिवाय । किहि भांति जियतजग रहैराय ॥

दो० रूसेकोई मनाइये सर्वसुकहिये देन ।
मुवानर्जीवै साहिबा योबनगयो फिरैन ॥

चौ० माधोमस्यो कंदला नारी । इनकी यहीनिमित्तबिचारी॥
हमरेमन प्रतीति असहोई । मरेसाथ मरजात न कोई ॥
कहैं नृपतिसुन सचिवसयाने । मोरसुयश क्षिति मंडलजाने ॥
सोसुन गयो बिप्रमो पासा । करनिज मित्र मिलनकी आसा॥
द्विजके जिय प्रतीति असहोई । बिक्रम करी सँयोगी मोही ॥
मरी कंदला माधौदोई । यह प्रकाश लोकनमें होई ॥
मैं अबमुरकि उजैने जाऊं । कहौ सुयशजग में कसपाऊं ॥
सुयश सहित मरबोभलसोई । अयश न जियतजगतजग कोई॥

दो० सुरनराख पाल्यो न प्रण करौं जीवको घात ।
एते पै बिक्रम जियै अचरज कैसीबात ॥
सुन २ बिक्रम के बचन बोल्योसचिव सुजान ।
सुयश काज संसार में काहे तजौ न प्रान ॥

स० अवगुण शोककरै न कहा इक सोभेजहांये तहां सबरेहैं। दीनदयालगमें जिनजे तिनके तनपातक पुंजभरे हैं ॥ मूरख पुरुषहीनवहै ते सदादुख दारिद सिंधुपरे हैं । सत्यसो चित्तगयो जिनको जबते लखिये तबहीं वै सरे हैं ॥

दो० निधन न कहिये पंडितन मूरख धनियनमान ।
जियत न कहिये अपयशी यशीमुयेजन जान ॥

मंत्रीबचन

छप्प०। धनरवि सहिबिपति दामदैबाम बचाइय । बासत्याग तजिदेश देशतजि घरहितआइय ॥ घसिराखै ये प्रान प्रानतें सब कलु होवै । धन प्यारापरिवार देश दुर्जन कह खोवै ॥ तजिये न

श्रान बोधासुकबि राजनीति मत साखिये। सुयश एककी काच लौसर्वस तजत न राखिये॥

राजाबचन

दो॰ धन बिछुरै धन फिरमिलै तन बिछुरैतन त्याग।
बिछुरा जोई ना मिलै सुयशपने को यार॥

चौ॰ मंत्रीकहैं नृपति सोंयेही। हौनिश्चय तुमदीन सनेही॥
अपनी मौत मरोद्विज माधौ। होनहार को करियेकाधौ॥
यामें अयश न तुमको होई। कालहिं जीत सक्यो नहिंकोई॥
मरिको गयो मरेके साथ। तब बोल्यो बिक्रमनरनाथ॥

दो॰ श्रमर होव संसार में तो मरगयो अकाज।
एकबेर मरनेपरै तो मरिबो शुभश्राज॥

दंडक। निमिष में बरषमें चौकड़ी मन्वन्तरमें कल्प प्रलयमेंज ब श्रावैगी जिसीगली। संधिपाय सबको चबाय लेहैबोधाकवि वौपारन संहारनवही छली॥ तीनों लोक तीनोंगुण पांचो तत्व सृष्टिवान काहु को न छोड़ है अदृष्टिसबते बली। त्रिगुणी बचैन और जिउकी कहानी कौन देवी की मारी तो पुजेरी की कहाचली॥

दो॰ एकबेरमरने परै बोधा यह संसार।
तौ जैसे दशदिन जिये तैसे बर्षहजार॥

चौ॰जोमैं इनके साथ न मरिहौं।तो अबराज कितेदिन करिहौं॥
यों कहि भूप उठोकरि त्यारी। पगिया मेल भूमि पर डारी॥

छंदमोतीदाम। भयो दलमें अति दीरघ शोर। सुन्यो नृपबिक्रम को हठिघोर॥ रहीन रंचककेहू संभार। चल्यो नृपकालहु से करि रार॥ धरौधन नायक कारिन चोभ। लख्यो नृपबिक्रम कोसत सोभ॥ लगे नर ढावन चन्दन काठ। कियो नृपकाज चिता कर ठाठ॥ सुगंधतहां त्रिबिधा कर लाय। चिता धरदेहु सुगंधसनाय॥बिमानन छायरह्यो असमान। सती लखि बिक्रम२

वान॥ दयेघृतसों बर कुंडभराय। धरोनृपमाधौ कोतनल्याय॥
करेस्नान त्रिबेंनियंनीर। दयेद्विजदेवन दानगँभीर॥

दो॰ इतनेक्षणमें बिप्रइकबयकिशोर बुधिमान।
शिरफिकार अस्नानकरि चढ़चोचितापरआन॥

चौ॰ ताहिदेखि नर बूझतऐसी। चिताचढ़ततुम सोगतिकैसी॥
माधौहेत मरीवहनारी। माधौतियके हेतबिचारी॥
सुयशहेत राजातनत्यागत। मरनतुम्हार अचंभवलागत॥
तबतिनबिप्रकही तिनसेती। मेरीसुनो बारताजेती॥

सो॰ प्रातबिप्र मुखदेख भूमिपावप्रभु नेधास्यो।
सोईदृष्टि प्रतिलेख उठ्योमोर मुखदेखनृप॥
कुलसिकाज यहकाज महाराज बिक्रमकियो।
पूरणभयो अकाज मोरेमुखको दोषयह॥
लरीं...ये कछुबात प्रकटभये संसारसब।
रेउठि आजप्रभात कौनदुष्टको मुखलह्यो॥
मोंआननसम आनआनन धृकनहिं आनको।
जाकेदेखेहान भईनृपतिको प्रानकी॥

चौ॰ अबयहमुख लायेबनियावै। फिरनाकाहू हानिदिखावै॥
तबजवाब क्षितिपतिहीदीन्हों। बृथाशोचद्विजवर तुमकीन्हों॥

दो॰ वेदथके बिधिहारिथके शंकरथकेबिशेख।
महाअपूरन कालगति तिनहुंपरी नहिंदेख॥
कालपुरुषने ख्यालयह फेरिरच्यो तिहिकाल।
चिताबैठत महराजके आयगयोबैताल॥
दूतीकेपरपंचते हत्योनिका ख्योताहि।
प्राननते प्यारो अधिक हितू भूपकोआय॥
पूरबताको शेशसुत बरदीन्हों यहऐन।
जितसुरेश पहुंचैतितै देहि चित्तकोचैन॥
प्रानजात नरनाथके सोबर आयोकाम।
हनूमान बैतालज्यों द्विजनृप लक्ष्मणराम॥

चौ० आयवीर बिक्रमसोंबूझी। यहकछुलीला मोहिंनसूझी ॥
सुनिकिहि कारणतनतावतस्वामी। भईकहातुमको बदनामी ॥
तबनृपसब वृत्तान्तसुनायो। सुनबैताल बहुतदुखपायो ॥
जोमैंआय न काजसँवारो। तोयेबृथा मरेतेचारो ॥
करगहिनृपको ठाढ़ोकीन्हों। याबिधिताहि सिखापनदीन्हों॥
धन्य२बिक्रम नरनायक। तुमसबकरी आपनेलायक ॥
अबनिजुडेराको पगधास्यो। पूर्णभयोब्रत भूप तिहास्यो ॥
इतैऔरनर रहैनकोई। उठि माधौनल ठाढ़ोहोई ॥
भांति २ बैतालासिखायो। तबचलिबिक्रम डेरेआयो॥
बैठइकंत बीरबैताला। आकर्षेउ फणपतिकोलाला ॥
सोततकाल आयगयोऐसे। गजकेकाज गरुड़ध्वज जैसे ॥
कहौकौनकारण मोहिंध्यायो। तबबैताल प्रसङ्गसुनायो ॥
सुनिसबकथा शेशसुतलीन्हीं। बड़ीसिफारिश नृपकीकीन्हीं ॥
उभयबूंदअमृत तिनदीन्हा। पिंगलीगौन भौनकहँदीन्हा ॥
माधौनिकटबीर चलिआयो। अमीबुन्दताके मुखनायो॥
सुधाप्रवेश कंठभयोजबहीं। कहयादोस्तउठो द्विजतबहीं ॥
द्विजकोलै बैतालासिधायो। निकटउज्जैन पतीकेआयो ॥
क्षितिपतिमिल्यो बिप्रकोऐसे। अवधनाथकैकइ सुतजैसे ॥
रघुबरज्यों हनुमतयशगायो। त्योंक्षितीश बैतालहिंध्यायो ॥
माधौनलैवहै जकलागी। कहांकंदलापरम सभागी ॥
ताकोउत्तर बिक्रमदीन्हों। मैंतातेरो परचोलीन्हों ॥
आशिकएक तुहीजगमाहीं। त्याग्योतन तिनुकाकीनाईं ॥
हौंजीवत छांड़ीवहनारी। मिथ्यातोसों मुईउचारी ॥
अमीबुंदक्षितिपतितबलीन्हों। गवनदेशकामावति कीन्हों ॥
पहुँच्योकाम कंदलापास। देखतबढ़ी सखिनकीआस ॥
अमीबुन्दताके मुखडास्यो। उठिबालाकहि मित्रपुकास्यो ॥
तबनृपकही कंदलासेती। मेरीएक किसासुनयेती ॥
तेरेकाज माधवानिरही। बन २ फिरोप्रलापनकरही ॥

कहूंनदरदघटत जबजान्यो। मरबेकोउपाय तिहिठान्यो॥
सुवाप्रबीन माधवा पास। तिहि यह दईबिप्रको आस॥
कहीप्रबीन माधवा सेती। तेरी बिप्र बिपति कहकेती॥
नृप बिक्रम शकबंधी जानो। नग्रउजैन तासुको थानो॥
गजके काज गरुड़ध्वज जैसे। सो परपीर हरन को ऐसे॥
ताको चलनिज दरद सुनावो। पारबिरह बारिधि को पावो॥

दो॰ दीनबंधु बिक्रम नृपति पर पीरा सुन कान।
सुखी करै कै तासु सँग तुरतहि करै पयान॥

चौ॰ यह बिरतंत बिप्र सुनिपायो। तब चलिकै उज्जैने आयो॥
अपनो दरद दिलंदर केरा। शिव मठ माहँ लिख्यो तिहिबेरा॥
हौंबांच्यों कारण पहिंचाना। तिहि क्षण यहै महा हठ ठाना॥
अन्नपान मैं जबहीं करिहौं। बिरही नलको दुख जबहरिहौं॥
दूती खोज बिप्र को लाई। मोसों आय मिलाप कराई॥
मैंबड़ आदर द्विजको कीन्हा। आसन निज सिंहासन दीन्हा॥
पुनिबोल्योंद्विजसोंअतिबानी। कहिद्विज अपनी पीर कहानी॥
तेरो दरद हरौं मैं अबहीं। अन्न पान पाऊं मैं तबहीं॥
यह सुन माधो दरद बखानो। तब मैं सुन उपाय यह ठानो॥
बुलवाई हजार द्वै नारी। नवयौबन सुन्दर सुकुमारी॥
पुनि माधौ सों यह फरमाई। ढूंढ़लेव बाला मनभाई॥
गढ़ ग्वालियर रजायसु लीजै। एक कंदला को तज दीजै॥
माधौ नल एकहु नहिं माने। मोसों तर्क अनेक बखाने॥
तब मैं तुरत खांखरा दीन्हो। गवन देश कामावति कीन्हो॥

दो॰ पुष्पवती के बाग में डेरा कीन्हों आय।
हौं आयों तेरे भवन बैद सुभेष बनाय॥

परखेकाज तोसों छलकीन्हों। तैं तन ताही क्षण तज दीन्हों॥
तुवमाधौ को खबरिसुनाई। मर्‍यो बिप्र कछु बार न लाई॥
अयश होत जान्यो जग माहीं। हौंहूं मरन लग्यो तिहि ठाहीं॥
चिता चढ़त बैताल सिधायो। तिहि माधौ को आन जिवायो॥

द्वितिय बूंद अमृत मैं लीन्हा। सोलै तेरे मुख महँ दीन्हा॥
अब तू मतचिन्ता मनराखै। बिक्रम झूंठ बचन नहिं भाखै॥
दो॰ चढ़धायो उज्जैनते माधोद्विजके काज।
काल पकड़ ने खेतमें काम सैन महराज॥

इतिश्रीमाधवानलकामकंदलाचरित्रभाषाबिरहीसुभान
सम्बादेयुद्धखंडेमाधौनलकामकंदलामूर्च्छितजागनो
नामइकईसमोतरङ्गः २१॥
इश्कपनाहाम॥

बाईसवाँतरगप्रारंम्भः

दो॰ काम कंदला बालपै नृपति प्रतिज्ञा पाय।
रसमय बोल्यो बचनकछु बाहँ तासु गलनाय॥
छंददुबिला। तब कह्यो बनिता येह। सुननृपति धर्म सनेह॥
द्विज बंशके तुम दास। यहलोक२प्रकास॥ हौंबिप्र बाल प्रबी
न। तुमकौनयह रस लीन॥ राजान की यह रीति। द्विज बंश
पालन प्रीति॥

छंदचौपहिया। जौनेहजार भई पुरहूत के कंचन देहबिहारगई
है। अंजनी कुंवारे जनो सुतको सिगरे जगसो उपहासभई है॥
बोधा पुराणन हूं सुनिये हमतो बरणी नाहिंबात नई है। बिप्रब-
धूके सनेह लखो अजहूं लों छपा कर मांझ छई है॥
चौ॰ तब्नृपकह्योकंदलापाहीं। तुमद्विजपतनी होतीकाहीं॥
गणिका दूजै नृपकी दासी। पुराय जोखता सबकी आसी॥
दान देय सोई पति प्यारो। यहै पतिब्रत कहिये थारो॥
कहै कंदला सुन नर नायक। या ना तेरे कहबे लायक॥
हौंतन धरनर और न जानो। एकमाधवा बिप्र बखानो॥
नृपघर रही एकपखवारा। दरशन लौ स्वारथै बिचारा॥
इच्छा वर माधौनलकीन्हा। देहदान दूजेनहिं दीन्हा
दिवसएक राजामो पासा। आयो केलि करनकी आसा॥

दो० करमेरी छातीधखो अग्निपस्यो जनुजाय।
महाराज तबहीं रह्यो ज्यों ठग मूरीखाय॥
चौ० कहैबाल बिक्रमनृप सेती। मेरीलेहु प्रतिज्ञा येती॥
मेरोजीव विप्रकी देही। या देही में बिप्रसनेही॥
अँगरा बालहाथ परलीन्हों। परच्यो यहराजा को दीन्हों॥
निजुडेरे जैये नरनाथ। देखिये जाय बिप्रकोहाथ॥
यहसुन भूपतिडेरे आयो। माधौ नलको पास बुलायो॥
दहिने कर त्रिय अँगरालीन्हों। बायोंहाथ बिप्रको चीन्हों॥
दो० जान्यो हाथमें माधवा नृपति लख्यो निजनैन।
सिफतइश्क दिरयावकी मुखते कहतबैनन॥
चौ० यहपरसंग बिप्रपर गायो। सुन नृप सचिव समाज बुलायो
हुकुम पाय मंत्रीसब आये। तिनके नृप ये बचन सुनाये॥
कामसेन क्षितिपति परजैये। कारण मेरो उन्हें सुनैये॥
होरण मंडित होतबिहाने। देहैं त्रिया कि युद्धहि ठाने॥
दो० नृपशासन सुन सचिव सब कीन्हप्रणामबनाय।
कामसैन नृपपै चले बिप्रपचौरी पाय॥
छ०प०। तहँ अमरसिंह पंडित प्रवीन। कबिकालिदास रस नौमलीन॥ शंकर सुभान सिंधुर सुजान। बर रुचिर बुद्धितिन की बखान॥ कबिकोकधनन्तरबैद्य और। बैताल सचिव शिर गिनत मोर॥ नृपकामसैन के द्वारजाय। पठयो प्रणाम राजहि-जनाय॥ उज्जैन रायके सचिव जान। लीन्हें बुलाय नृपहेतु मान॥ हियसों लगाय भेटेसुप्रेम। नरनाह सहित सबबूझ छेम॥
दो० उचित २ सन्मानकर उचित २ बैठार।
सिंहासन बैठ्यो नृपति कामसैन तिहिबार॥
स० चौरन भौर दरैचहुंओर तै खोलतकेशर नीरफुहारे। मं-डित छत्र सिंहासनपैभुइ लोकमनो रविदेवपधारे॥ सूरसमाज लसैं सुरसेकल कोकिल गानकरैं गुणवारे। काममहीपकी दीप तऊपर एकसहस्र सतंक्रतवारे॥

चौ०कामसैन बूझी यहचाह । क्षेम युक्त बिक्रमनरनाह ॥
क्षेमकथा बैतालसुनाई । तबनरेश ने यों फरमाई ॥
कारण कहौ कहांतुम आये । कहाबचन नृपकह पठवाये ॥
तब इहिओर बीरबैताला । कहनलग्यो माधोको हाला ॥

दो० मित्रकंदलाबामको विप्रमाधवा नाम ।
गयोत्रास महराजको देशछोड़ अरुग्राम ॥
भयो फिरादी सो गयो महाराजके पास ।
नृपको कौलकरायकै कह्यो आपनो त्रास ॥
करी प्रतिज्ञा रायने सुनत विप्रके बैन ।
बिरहीको दुखटारकै राजकरौंउज्जैन ॥
पश्चिमकामावतीके पर्यो आयनरनाह ।
हमैं पठायो आपपै कहपठई यहचाह ॥
देहि कंदलाबालको कैबांधौकिरवान ।
बचनसुनत कोपितभयो कामसैन भुवमान ।
ज्यों सप्रेमनवलाहलखि कामीउरअकुलात ।
त्योंहीं नृपप्रज्वलितभयो सुनत जामकीबात ॥

छन्द प० । यहबचन सुनतही जर्योभूप । बैठोसकोपह्वैकालरूप॥ द्विजदरदपायउज्जैनराय । नृपकामसैनपर चढ्योधाय ॥ अतिगर्व बढ्यो बिक्रमाबिशेख । क्षत्रीनआनक्षितिमाँहलेख ॥ पठयेब सीठअतिहीं उताल । तुमचलोलेन कंदलाबाल ॥ लाज्योननेकु योहींबतात । इतनहीं दूसरो अन्नखात ॥ हौंदेहुं कंदलाबालतब्ब । जबब्रह्मसृष्टि मिटजायसब्ब ॥ तबकह्यो बीरबैतालयेह । किहिहेत करतनरनाहतेह ॥ द्विजहेतदीजिये प्रानदान । यहराजनीतिसमझौसुजान ॥ तबकह्यो फेरि पुनिकामसैन । तुमचलेलरनकी दानलैन॥तुमविप्रबंशपालकभुवाल । है कितीबात कंदलाबाल॥

राजावचन

चौ० जोपैदानलेन नृपआये । तोकिहि हेतबसीठपठाये ॥
दलबललै उज्जैनकोजावै । बिप्रभेषधरिकै फिरआवै ॥

द्वैकरजोर अर्जयहकीजै। द्विजकोकाम कंदलादीजै ॥
यहउपाय करकेनृपआवैं। तबहींकाम कंदलापावैं ॥
दो० कहैबीरबैताल तब मोहिं न आनलखाय।
कोसमर्थ संसारनृप बिक्रम जापैजाय ॥

छप्पय। दसराजा चंदेल बीस चौहानतीसभर। छत्तिसगूजर गोंड़गोरसुरकी छप्पनघर ॥ पैंसठनृपराठौर साठतैलंग फिरंगी। पीपरकुरमतुरक असी हाड़ा सफजंगी ॥ सिरनेतबबेले बैसपुनगाहिरवारपठि हारसत। समरत्थबिक्रमादित्यकेइतै भूपचौकीरहत॥

छंदसुमुखी। कौनरनाह औरसमरत्थ। बिक्रमजाहि जोड़ैहत्थ॥ जाकोधाकुप्रबल प्रचंड। थर २ कँपत भारतखंड ॥ असको भूमिपाल निहार। करगहि खड्गमडंहिरारि ॥ हौंनाहिंलखहुं क्षत्री कोय। जोबिक्रमकेसनमुख होय ॥

कामसैनबचन

छप्पय। अहेबीरबैतालवृथा जिनगालबजावै। जबहौं गहौंकृपान कौनमोसनमुखआवै ॥ सोवेदोऊ दीनरहत जूतीकरलीन्हें। जिनकृपान करधरी बांधबैरिन तिनदीन्हें। ममहट्टभट्टजाहिरजगत झूठीबातनभाषाहिय। करौं बैर उबरै तद्यपि सो यद्यपि सेरन सिवरख्या हिय ॥

बैतालबचन

थर २ कँपै पहाड़ उदधि उछलै अकाश कहँ। रबिरजसो पुरजाय द्वैसमैरैनहोहितहँ ॥ असदहोहिंमदमत्त गर्भगोविन तिय डारैं। झिरना झरै पषाण सिंहशंकित चिकारैं ॥ छूटजाहितगबैताल भनिकोक्षत्री सन्सुखरहहिं ॥ सुनकामसैन नरनाहतू जादिनखड्ग बिक्रमगहहिं ॥

राजाबचन

अहेभट्टमत नट्टहट्टबोलत कसबाणी। सट्टघट्टसब करौंबट्टबिक्रम रजधानी ॥ कुट्टकुटक पुनिलट्ट क्षत्रसिंहासनल्याऊं। पुनिउज्जैन निरशंकएकक्षत्रिपतिकहाऊं ॥ जाहिरनतोहिं मेरी गुसा

भूलगर्ब जिनरख्यहिय। ममकामसैन मुखचुप रहयेतीबद किमिभाषाहिय॥

बैतालवचन

चौ० बारायोजनके बिस्तार। परचोलाख बाइस असवार॥
एक २ क्षत्रीरणधीरा। योजनभरफटकारततीरा॥
हाथीसात बेधसोजाई। कौनओटकर बचिहौराई॥
बिक्रमकोदल जीतैकोई। शिवबिरंचि हरहूकिनहोई॥
रसमेंदेहु कंदलाबाला। बेरसनाकरिये क्षितिपाला॥
बेरसभये होयनहिंनीकी। राजजायअरु आफतजीकी॥

राजाबचन

चौ० पर्बतउड़ै पंखजोलाई। तरवरचहै धराधरखाई॥
पश्चिमबहै गंगकोनीर। कामसैनहट तजैनबीर॥

(बैतालबचन)

चौ० अचलचलै चलरहैंथिराय। पर्बतपरै उदधिमेंजाय॥
कँपैसुमेरु धरैनहिंधीर। बिक्रमजब फटकारैतीर॥
उमानाथ आसनसेचलैं। धरासहित धाराधरहलैं॥
दृगदंती करिहैंचिक्कार। जबबिक्रमकरि हैं हथियार॥

राजाबचन

छप्पय। अहेबीर बैताल भट्टझूंठी जनभाखै। जबहौंगहौं कृपानकौनभट धीरजराखै॥ बन २ केतुम होहु फिरौहथियारदुकावत। मांगिनकौ औखादकहांतू गालबजावत॥ लखिबीनतोह रणकेजुरैदूत कहाबड़उच्चरै। उठिजायबेग शठप्राणलै बिनाकाजजिनहठकरै॥

दो० डरतलोक उपहासको भिक्षुक हततनकोय।
अहेदूत उठजाय किन प्राणहान जिनहोय॥

बैतालबचन

छप्पय। जादिनमरै बैतालतादिन गौरीसतछंडहिं। जादिन मरैबैताल रुधिरधारा सबझंपहिं॥ मरजाहिं भूपभूमिपर जिते

क्षत्रिहीन पहुमीकरहुं । सुनकामसैन नरनाहतू जादिनखड्ग-हौंकरगहहुं ॥

(राजाबचन)

दो० अहेभट्टमति सट्टतू बोलतक्यों न बिचार ।
कहैपकरि दरबारमें देहुपै करनडार ॥

(बैतालबचन)

छप्पय। को पर्वत कर धरै कौन सुम्मेरु हिलावै । को पयोधनक जाय को केहरिचढ़धावै ॥ कौन हलाहल खाय कौन अहिपूं-छमरोरहि । कौनपवन करधरहि काल सन्मुख को जीतहि ॥ को चढ़ैजाय धौरागिरहि कोपकरै यमजाल कहँ। स्वर्ग निसेनीदेह की कोपकरै बैतालकहँ ॥

(राजाबचन)

छप्पय। अहेबीर बैताल प्रथम तू आयभिखारी। पुन आयो ह्वैदूत कहा तेरी अधिकारी ॥ पंचन मारत कोय नीतियह भांति बखा-नत। हतौ न तोहिंतिहि हेत मोहिंनिर्बल तू जानत॥ उठिजाव बेगि निजराज पै यहै ज्वाब मम दीजिये। सफजंग भोरहौं करहुं आप त्यारी कीजिये ॥

दो० करिप्रणाम महराज को चल्यो बीरबैताल ।
इतै बिक्रमादित्य पै सबै बखान्यो हाल ॥

इतिश्रीमाधवानलकामकंदलाचरित्रभाषाबिरहीसुभान सम्बादेयुद्धखंडेकामसैनबाचबिलासेनाम बाईसमो तरंगः २२ इश्कनौतबनाम ॥

तेइसवांतरंगप्रारंभः

सो० प्रात उठोगल गाज कामसैन नरनाहउत ।
इतबिक्रम महराज भये नगाड़े दुहूंदल ॥

छन्दरूपमाल । उतकाम सैन प्रचंडइत बिक्रमदित्य सम-रत्थ । रबिके उदयसंग्रामको धर्योकृपानी हत्थ ॥ अति दीह

दिग्गज बीहलै करियोनकारन शोर। रणशूरमा हरषन लगे सुनखांखरोंकी घोर॥

दो॰ निकस्यो कामावती सें कामसैन नरनाथ।
हैदरपैदर गजरथी एक कोटि लै साथ॥

झूलना। सफजंग को ठाढ़ो भयो सजिकामसैननरेश। दस कोसकख्यो धरिकिरि रच्योखेत सुवेश॥ दिशिचार को मुहरालग्योधने बरकनदाज। पुनिचार पंगत अश्वकी सजिबीचमें महराज॥ तिन मध्यगजरथ ऊपरै धरिरतन छत्रबिशाल। नरनाथ तितठाढ़ोभयो जड़िचारहू दिशिहाल॥ पहुंचै न तीरकमान जिहि अस्थान कौनऊंबान। सरदार को तितराखिये यह राजनीति प्रमान॥ हरबल्ल मैढ़ामल्ल लै करतुरीतीसहजार। कढ़िखेत में ठाढ़ोभयो सिरनेतिधर तिहिबार॥ उसओर बिक्रमादित्य कोरंजोर सिंहपमार। उठिधाययों गलगाज कैं सत सातलै असवार॥ जुरगये आतिहि रिसाय के भभियाय के दलदोय। वह कौन मैढ़ामल्ल गेरे आय सन्मुख होय॥ सुन बचन योंरनजोर को यों कह्यो मैढ़ामल्ल। हम चोरनाहिंन ताकि मोतनघाव पहिलै घल्ल॥

त्रोटकछन्द। रनजोरकह्यो तुमचोरनहीं। रनचोरनको निकसे हमहीं॥ तुमघालहु घावसम्हार अबै। पुनिहोहु बिनाशिरशैलसबै॥ तब यों पुनि मैढ़ामल्लकह्यो॥ कुलफबड़ी तुम काहिरह्यो। तुमघालो घाव गइनकरो। पुनितौ अमरापुर कोपधरो॥

छन्दद्रुबिला। इकधूरिया मरहट्ट। बलवानलीन्हेंठट्ट। रनजोरऊपर आय। तिहिहनी शक्तीधाय॥ वह आड़ियो रंजोर। ब्यापो न रंचकतोर॥ उन फेरलीन्ह कमान। तिहिहनै बाइसबान॥ ते सबै बानबचाय। उठयोपमार रिसाय॥ उलछारखग्ग कराल। कियो धूरियाको काल॥

छन्दमोतीदाम। इतैछण बावनबीर प्रचंड। कह्यो रनजोरइते रनमंड। हन्योतिहि के शिरखग्गपमार। गयो बचिनेकु भयोनहिं

बार॥भयोअतिकोपितबावनबीर॥लग्योबर्षाबर्षावनतीर॥बलीबल भद्रप्रचंड चँदेल। हन्योतबहीं तिहिकेशिरशैल॥गिरयोभुवबावन कर अतिशोर। जुरयो रनमें तब भम्मनजोर॥ अरेबलभद्र लखै किनमोहिं। बिनाहाथियार हनौंशठतोहिं॥ जुरयो बलभद्र इतैख- न आय। हन्योतिहि भम्मनखंजर घाय॥ गिरयो बलभद्रलख्यो बिरसिंह। जुरयोरनमें भटभोर उलंघ॥ अरेसुन भंमन बावन पूत। भये तुम खींचिय बंशमपूत॥ हत्योबलभद्रबलीममबीरहनौंअब तो कहँबावन बीर॥ इतैखन छूरनसिंह बघेल। हन्योबिरसिंहबली कहँशेल। बच्योबिरसिंह रह्यउठिसोय। गयेजुरछूरन २ दोय॥ इतै बलवान बघेलेबीर। उतैलखि भाट महारणधीर॥ लरैदोइ छूरन के घमसान। गये तिनके इकसाथहि प्रान॥ इतै बिरसिंह बली पर आय। जुरयो शिरनेतबिहंडन राय॥ हन्योतिहि के बिर- सिंहचँदेल। गयोलहि प्रान तीक्षणशैल॥ लरयो बिरसिंहख- रोरनमाहँ। किये बिन प्रान हजारन काहँ॥ जुरयोतिहि सो- रनभम्मन आय। हनैदुइबीर हजारन घाय॥ गिरेभुवएकहि साथहिदोय। रहीभुइँ शोणित आमिषमोय॥ बलीनृप बिक्रम कोभटधीर। जुरयोरन गौरसपूतहमीर॥

छप्पय। इतैबीर हम्मीर उतै भावामल गूजर। लरैबीर संग्रामकरैं दोनोंदलऊजर॥झुक२उवाहत खग्ग मुंड बरषत वर्षाइम।भभकति शोणितकुंडरुंडसफरीगूलरजिम॥किलकत भूतबैतालभनिकेटबीर सोरहसहस। उड़िगयोमुंड हम्मीको रुंडजुरयो पुनिरनरहस॥ चलाहिंपरिघितरवार कई हज्जार शैलशर। गिरत रुंडपररुंड मुंड परमुंडलगीझर॥सुगलयबिनसुंडचावबिनतरलतुरंगम॥बिनबाहन असवाररुधिरधाराभय संगम॥ हांकित मध्यहम्मीर जबभूतकिते सुरपतिचकित।सबकटंकुट्टहट्टियो न फिरकानसैनदलकहँकहत॥

छंदसुमुखी। कटकअपर कीन्हधर जब। जुरयोमैढ़ामल्लबल तब॥ लियेशूरसमरत्थ सत्थह। गहिय शूलकृपानहत्थह॥इतहि बीर हम्मीर हंकित। हूंक सुनत पुरहूतकंपित॥ धराधर २ धर

धरखतधर२। भूमिशैल दिगीशथर २॥ बजत तरपड़मुंडभट २। शूलखड्ग कृपानखट २॥ घड़ाघरधर कंतढल्लन। झरत शोणित बुंदझल्लन॥ परेशोणित कुंडरुंडहिं। भकाभक भभकंत सुंडह॥ सरासर सरसेत सरवर। कूररवकूंकत करवर॥ कटत शूरसावंत फक २। कँपत कायर कूरधक २॥ जड़ाजड़जड़कंत दंतन। घनाघनरव घोरघंटन॥ लसतशैल कृपानझल२। ताकिशोणित सकल जलथल॥ सिंधुवार प्रचंड उछलत। सहित मेहमुनी शमलकत॥ गिरिय भावा मल्ल भारी। यमानाच्यो शंकरदइतारी॥ सहित दससावंथकुट्ठिय। बीर गौर हम्मीहट्ठव॥

दो॰ सहसतीस कुट्ठिव कटक खड्ग म्यानयुतकीन्ह।
तज्यो बीर हम्मीर तनपिंड प्रानकहँदीन्ह॥
मैढ़ा मल्ल समरथ इत उतरन जोर पमार।
खड़े खेत हथियार युतरबि अथयो तिहिबार॥

छंदझूलना। तबकह्यो मैढ़ा मल्ल सुन रंजोरसिंह पमार। रबिगयो अपने धामको अब तुही क्यों नपधार॥रबि उदय फिर रणमंडवी नहिं छोंडवीयहखेत। है श्वास जौलौं देहमें तौलौं न छोड़ोंनेत॥ यहकौलकरि दोनों पधारै गयो निज २ ऐन। बिरदंत सबरौ पाइयो महरा ज कंद्रिपसैन॥ रबिके उदय रनको सज्यो हरवल्ल मैढ़ामल्ल। इकलक्ष तरल तुरङ्गलै शतसात मत्तमतल्ल॥

दो॰ तनभाई पच्चीसलै आयो उतरन जोर।
हैजाके बलजोर को दोनों दलमें शोर॥

इतिश्रीमाधवानलकामकंदलाचरित्रभाषाबिरहीसुभान सवातरंगप्रारंभः सम्बादे युद्धखंडे २३॥

सो॰ मैढ़ामल्लबलवाम कह्यौ बीररण जोरसों।
तूमति खोवै प्रान बिनुदल बलनिजगर्भबासि॥
कह्यो बीर रंजोर मोरतोर शारियत यही।
बाने डारि छोर जो हारैताको नृपति॥

चौ० जुवायुद्ध दोनों ठहरायो । छत्रसिंह सन बाजू लायो ॥
बूझ दुवौ नृपनसों लीन्हों । यही पटौ दोनों लिख दीन्हों ॥
मैढ़ा मल्ल युद्ध जोहारी । छत्र सिंहासन देवे नारी ॥
जोरंजोर युद्ध में हारै । दैय छत्र उज्जैन पधारै ॥

दो० दुहू ओर अति शोर भोरन हांको रनजोर ।
सारधार बर्षा भई गजनकी कदई घोर ॥

छंदमोतीदाम । जुरयो रणमेरंजोर झकोर । गयोभटबीरहजारनफोर॥इतैसुरकी लखिहो गरराय । हजारनजानतयुद्धउपाय ॥ अहे रंजोर पमार समर्थ । इतै पल एक करै कित हत्थ ॥ अड़ोतिहि सों रंजोरपमार । चल्योदुहुंओरघन्यो हथियार ॥ बली नृप बिक्रमको प्रतिहार । कह्यो रन पूरन मल्ल खंगार ॥ महाबलवान हुसेनपठान । हन्यो सुरकी उरतीक्षन बान ॥ गिरयो रणड़ोंगररायनिहार । जुरयो सुरकी घनसिंहपमार॥इतैलखि गौड़बली अनरुद्ध । लिये करखग्ग कियो बड़युद्ध ॥ गिरयो धनसिंह घनैभटऔर । मरेसतसत्तर एकहिठौर ॥ महाबरगौंडबलीपरआय । जुरयो रनबारिय उद्धमराय ॥ कह्योवह ओरहुसैनपठान । गही तबबीरम देव कृपान । बड़ीपड़ सरभरी लखिसोय । भयोरनतो कहँआड़न कोय ॥ असीसत समर्थ शूरसंहार । करीतिहिसोपुन बारियरार ॥ गयो कटबारिय २ जोर । चल्यो तबबीरमके अति कोह ॥ चल्यो हथियार जित मैढ़ामल्ल । गयोतहँबीरमकेअति गल्ल ॥ तुरी उछार चढ्यो गज धाय । लयेमुख बीच हजारन छाय॥ हन्योगज औनृपकेर खवास । गिरे सतचालिस औतिह पास॥मरयो तबबीरम देवसमर्थ । रहेअटकेहौदासेहत्थ ॥

सो० चढ्यो आन गजराज मैढ़ामल्ल समर्थतब ।
उतय मारग लगाज कहयो भेड़ भजिजाय किन
मैढ़ा हंसीबढ़ाइ खाजी खूबपमारकी ।
सोरन रौरेकाहिके तो जोरपमारमें ॥

दो० भलीकही रंजोरतूयाजाने सबकोय ।

ग्रीषम अंतपमारकी भाजीसाजी होय ॥
त्रोटकछन्द। तबयोरनजोर पमारकही। अबहींयहजान परीस-
बही ॥ तुवदोजकमाहँ पमारपरे । कितोकहँफारि शिकारकरै ॥

दो० वहमैंढ़ा जिनजानतू रांधखात सबगावँ।
मैंवहमैंढ़ा मल्लहौंपेट फारिकढ़िजावँ ॥
होतनसदृश पमारको एकजनै कोसाग।
एकभेंड़में होतहैं आधे दलकोभाग ॥
मैंढ़ाकी ठोकरलगै बर पीपरथहरात।
केतिकबात पमारतू उखरखुरीसों जात ॥
सुनि२ मैंढ़ामल्लके वचन गर्बगंभीर।
रणगाजी बाजीचढ़्यो कर्णपमार सुधीर ॥

छंदपद्धरिका। गहिखड्गखेत दाबोपमार। भयवृष्टसृष्ट परसार
धार ॥ चौहानबीर मंगलउदंड। नृपकाम सैनदलमेंप्रचंड॥ अ-
तिकोप करनपर जुरयोआप। तिहिहन्यो बीरअनुरुद्धराय ॥ बच
गयोफेर चौहानबीर। अनुरुद्धगौड़ उरहन्योतीर ॥ जूझ्योप्रचंड
वहगौड़तब्ब। रंजोरगह्यो करखड्गजब्ब ॥ वहओरबीर मल्लस-
मर्त्थ। रंजोरसिंह सोकीन्हहत्थ ॥ कटिगयोबीर चौहानधोय। त-
बजुरयोदुंद अतिक्रोधहोय ॥ अतिसबलजान चौहानबीर। इहि
ओरकर्न पमारधीर॥ तेलड़ेप्रथम कमानबान । पुनिशैलशक्ति
गहिकेकृपान ॥ दोनोंसमर्थ साँवतप्रचंड। जिनमल्लयुद्ध कीन्हों
उदंड॥पुनिकरकटार गहियुद्धकीन्ह। इकेरदुहौत नत्यागदीन्ह॥
दलकट्योसबबाइस हजार। तबफेरखेत हांक्योपमार ॥

चौ० इतहिबीररंजोर प्रचारयो। उतहिमल्ल मैंढ़ाललकारयो ॥
खलभलमयो दुहूंदलभारी। किलककीन्ह पशुपतिनेतारी ॥

छंदमोतीदाम। सरासरशैल घनेसरसंत । झराझरशोणित
बूंदपरंत॥ खड़ाखड़होतखड़ंगनजोर। घड़ाघड़ढालढलाकिनशोर॥
भटाभटमुंड बजैरनबीच। मचीसनियामिष शोनितकीच ॥ न-
चैरणभूमि पिशाचियजोर। पिये घट शोणित खप्परफोर ॥

दो॰ जूझ्योमेढ़ामल्लतब कामसैन सुधिपाय।
नृपतिबिक्रमादित्यपरमंत्रीदयेपठाय ॥
चौ॰ चलिके दूतरायपैआयो। कामसैनको हुकुमकरायो ॥
महाराज बिक्रमसुनलीजे। अबमिलापकी त्यारीकीजे ॥
कामसैन मिलबे कहँआयो। तजबिरुद्ध प्रभुहेतपठायो ॥
यहसुन बिक्रमत्यारी कीन्हीं। ज्वाबसुदेस दूतकोदीन्हीं ॥
चलिकेदूत रायपैआयो। बिक्रमकेर संदेशसुनायो ॥
सुनतहिंकामसैन नरनाहा। मिलनचल्यो करिकेचितचाहा ॥
दो॰ कामसैनआयो तुरत नृपबिक्रमकेपास।
करिमिलाप ब्योहारसब बैठेसहित हुलास ॥
चौ॰ पुनिनृपकामसैन याकही। हमजो तेगरायपैगही ॥
सोनरेश अनुचितनहिंमानो। राजनीति मतयहीबखानो ॥
क्षत्रीधर्म्म प्रथम करलीजे। पीछेहेत सुहृदताकीजे ॥
तबबिक्रम बोल्योअसबानी। महाराजतुम नीतिनिधानी ॥
हमतोलघु सेवकहैंतेरे। कामसैन सुनसाहिबमेरे ॥
मैंद्विजहेतपास तुवआयो। तुमअपने जियभेदबढ़ायो ॥
मैंनेकह्योयाच्यो नृपतोहीं। तैंदुर्ज्जनकरि मान्योमोहीं ॥
तबनृपकामसैन याकही। दूतनभेद बढ़ायोसही ॥
दो॰ कामसैननृपपै कही नृपबिक्रम यहबात।
सुखकरैं बेतालअति भाटनकी औलाद ॥
कहनावत सांचीभई पुरा चीनयहईठ।
सजना २ दुरमिलेझूठे परेबसीठ ॥

इतिश्रीकामकंदलामाधवानलभाषाचरित्रबिरहीसुभान
सम्बादेशृंगारखंडचौबीसवाँतरंगः २४ ॥

पच्चीसवाँतरंगप्रारम्भः ॥

चौ॰ कामसैन माधवैबुलायो। बिरही राजसभामेंआयो ॥
मिल्योसप्रेम नृपतिद्विजकाहीं। भुसारअंकभर राखीनाहीं ॥

नीकेभूपकही द्विजमाधौ । नृपतिकहैं तुवदरशनसाधौ ॥
राजाउभय प्रेमयुतदेखे । माधोभाग्य सुफलकरिलेखे ॥
दो० काम सैन करजोर कर बिनती कीन्ही येह ।
कामावति चलि येनृपति बिक्रम तजि के तेह ॥
चौ० कामसैन बिक्रम नरनायक । माधौ औमंत्री जोलायक ॥
चले सबै कामावति काहीं । बैठेतीन एक रथ माहीं ॥
घरी भीर कामावति आये । अवधनाथ के दरशन पाये ॥
पूजा प्रभुकी बिक्रम कीन्ही । सहसगऊ व्रिप्रन कहँ दीन्ही ॥
पुनि नृपरवन बाग में आयो । हवा देख बहुतइ सुख पायो ॥
पुरवासी सब देखन आये । तिन दरशन बिक्रम के पाये ॥
जो चलि निकटरायके आवै । नमित करत बीरा ते पावै ॥
पुनि महीप महलन पगधारा । प्रथमहिं महल मयूर निहारा ॥
पुनि दरबार भूमि नृपआयो । कामसैन तब बिनय सुनायो ॥
सिंहासन दोऊ नृप ऐसे । राजत दोऊ पुरंदर जैसे ॥
छंद पद्धरिका । नृपमहल देख अतिही सुवेश । दिलमस्त भयो बिक्रम नरेश ॥ अति चित्र सहित राजै दिवाल । पुनिगिलम चांदनी लखि बिशाल ॥ तबकही नृपति सुन कामसैन । सुन महाराज पालक उजैन ॥ इहिमहल रहत कंदला बाल । अतिरूपवंत गुणमय रसाल ॥ तुवहुक्मपावँ बुलवायलेवँ । उहि वेग माधवै सौंप देवँ ॥ सबभीड़भाड़ नृपटारदीन्ह । पुनि बालकंदलहि टेर लीन्ह ॥ जब भेद सुन्योकंदला येह । तब अंग २ उमग्यो सनेह ॥ दृग फरकि उठेबायेंबिशेख । पुनबांव लंकफरक्यो सुदेख ॥ यहसरस सुक्ख जाने न कोय । हिय लखित कुलाहल ताहिहोय ॥ उतफरकियो माधवा अंग । दुहुंओरप्रेम सरस्यो अनंग ॥ तबसखिन कह्यो कंदलापाहिं । करलोशृंगार सब अंग माहिं ॥ तिय कहत कहा साजों शृंगार । पिय मिलन माहँ ह्वैहै अबार ॥ उठिचलीबाल माधवापास । उमग्यो अनंदअति हिय हुलास ॥ पुरहूत आदि साहिबी सब्ब । तृणमान कंदला लखी

सब्ब ॥ दृगदेख कंदलाबिप्र काहिं। भयो अति हुलास हियतासु माहिं ॥ दुहुंओर दुहुँन बिस्तारबाँह। दरबार बीचसकुचेनकाँह ॥

दो॰ द्वै डोरीके बीचतें दोनों बाहँ पसार।
मिलन हेत दोनों लही ज्यों बिरही निधिपार ॥

चौ॰ मिलेसप्रेम हिये लगदोई। यहसुख जानत बिरलौ कोई ॥
माधौ दृगननीर भरआयो। तिय हिलकन को शोर मचायो ॥
सखिन आय न्यारेतिहि कीने। दुर्बल अंगबिरहके छीने ॥
द्विजके चरणन बाला लागी। मेरु समान प्रीति उरजागी ॥
दोनों चल राजाढिग आये। निजुकरुणाके बचन सुनाये ॥
अंजलि जोरदुहुँन ने लीन्ही। कामसैन की अस्तुति कीन्ही ॥

छंद गीतिका। चिरंजीवो कामसैन भुवाल गो द्विजपाल भुवभरतारही। चिरंजीव बंकादीन निवाज राजसमाज श्रुत मग धारही ॥ चिरंजीवो काम पुरीश सब नरईश करुणा कंदजू। तुवरक्षक रहै गिरीश गिरिजा जानकी रघुनन्दजू ॥ चिरंजीवहु बिक्रम सैन नगर उज्जैन छत्र बिराजही। चिरंजीवहु परदुःखहरन कलिकरतार करन समाजही ॥ चिरंजीवहु करुणा करन तू सकबंधछितिमंडल करै। जगअचल कीरति बिदित अवध भुवालके सम बिस्तरै ॥

दो॰ जो बिक्रम माता सुखी जो जगतुम होतेन।
तोया कलिमें प्रीति कर जीवतहम दोतेन ॥

सो॰ बूड़त बिरहपयोध नौका नृपबिक्रमभयो।
दो जियराखे शोध धन्य २ उज्जैन पति ॥

चौ॰ दुवोनृपतिने योंमतकीन्हों। द्विजको राजबनारसदीन्हों॥
हयगय शिविकारथ समुदाई। हाटक रजित हवेली पाई ॥
अखैतीज माधो सितहोई। बिरही भये संयोगी दोई ॥
आज्ञा दुहूंनृपन की पाई। निजघर कामकंदला आई ॥

दो॰ नृपति बिक्रमादित्य को कामसैन महराज।
भांति २ आतिथि करी मिजमानी को साज ॥

चौ॰ मासएक बिक्रमनरनायक। अन्नपान कीन्होंनहिं भायक॥
कीन्हें सुखी बियोगीदोई। ऐसो हठ पारत नहिं कोई॥
बिरही सुख संदेह मिटायो। तब बिक्रम नृपभोजन पायो॥
जो जैसी करणी नृप करही। सोई पगुसिंहासन धरही॥
इत कंदला माधवा बिरही। बूझति कुशल क्षेम युत थिरही॥
वसन पटम्बर भूषण नाना। बिप्रन दयो कंदला दाना॥
बारिजवाहिर सखियन दीन्हों। मिलनअनंद कंदला कीन्हों॥
शुकप्रवीण की अस्तुति कीन्ही। बिपति सँघाती पियकोचीन्ही॥

छंदत्रोटक। लखिजान भुजान परे बिलसै। जनकंदूपदोइ तुणीर कसै॥ समलाज मनोज सुबाल हिये। बिहँसै पट अंचल ओट दिये॥ पिय नाहियँ २ यों कहती। मनमाह उमाह घनो गहती॥ मुसक्याय कभू मुख हाय कहै। तब माधव हिये सुख छायरहै॥ कुच चार बिचार कहा लहिये। मदनहलकेकलशा कहिये॥ कटि छीन प्रवीन उतंग करै। उमग्यो तन स्वेद प्रवाह टरै॥ कुचसंध सकीरन के उचकै। मनहूं उहि पारनजायसकै॥ हिरनाक्षन जोर कटाक्षकरै। मुखहट्ट लखैं मनुचावधरै॥ पीरीतनज्यों बिरहा सरसी। अनुराग ललाम बड़ी नरसी॥ बिछुरी अलकैं चहुंघा लहिये। जनुराहु ससेट शशी कहिये॥ छहरैमुक्ता लहरैहियरै। तियनाक सकोर कहै पियरै॥ चितचाय लपायलघोर करै। मदनहल घायल से चिहरै॥

दो॰ कनककुलिश से चारुकुच गहे मरोरत कंत।
मनहुं लंकको शीश गहि हिलरावत हनुमंत॥
दोनों जांघ भुजानपर करमें पीन उरोज।
अचरजपियमुखइंदुलखिबिहँसतकंजसरोज॥
मतौ २ ठहराय के रदछँद कियो कपोल।
अकबकायपियपरकह्योरसअनखोहैंबोल॥

चौ॰ अतिअनखोहैंलोचन कीन्हे। चरनखैंच कंधनते लीन्हे॥
चरन उठाय अतिहि अनखाई। पिय को सोंह अनेक दिवाई॥

उझकत झुझकत कहीनहिं मानत। बरबट मान तमाशोठानत॥
छुटी जात नहिं बसन सम्हारत। टुटीप्रीति मुखते उचारत॥
कटिभुग गहि तियको द्विजखैंचहि। भूषणबसन कामनीमैंचहि॥
गाय उठी अति रूठी बाला। ज्यों माधोनल दौदि खुसाला॥
कहीन बाल बालम की मानी। चली रूस अतिही खिसियानी॥
तब द्विज माधो बीणा लीना। चल्यो रिसाय हिये रसभीना॥
जय श्रीराम विप्र उच्चारी। कृपाकरत रहिये सुन प्यारी॥
सुनके बाल मंद मुसुक्यानी। डगरचल्यो माधो द्विज ज्ञानी॥
झपटबाल बहियां गहि लीन्ही। बूझीकितको यात्रा कीन्ही॥
अब यह गुसामाफ करदीजै। चलिये बहुरि अमायस कीजै॥
माधो अतिहि रूस मनकीन्हा। तब तिहि बाल अंक भरलीन्हा॥
लपटत झुकत सेजपर आये। दहुँन २ को नयन चुराये॥
कामकंदला अति पछितानी। भूलै मान प्रकृति मैंठानी॥
मनमिलाय पुनि बिरहन लागे। प्रेम प्रवाह दुओ हियजागे॥
तिहि अवसर गुलजारतमोली। कहि पठई माधो सों बोली॥
पायो राज कंदला नारी। कहहु याद को करै हमारी॥
जबसुतके घर आवत नारी। बिष समान सूझत महतारी॥
यार लोग किहि लेखे माहीं। माधो अनुचित कीन्हो नाहीं॥
सुनके माधो अति सकुचाना। आयो मिलन मित्र अस्थाना॥
सकुचत मिल्यो अतिहि सुखपाई। अपनी सबबारता सुनाई॥
मित्र सहित निज घरको आयो। यहै प्रसंग कंदला पायो॥
मिल्यो प्रबीन तमोलीकाहीं। बूझो दुनो कुशल दुइपाहीं॥

दो० कामकंदला माधवा बरईसुवा प्रबीन।
मिले क्षेमयुत सुखबढ्यो छिन २ अतिरस लीन॥

इतिश्रीमाधवानलकामकंदलाचरित्रभाषाबिरहीसुभानसम्बादे
श्रृंगारखंडेपच्चीसवांतरंगः॥

छब्बीसवांतरंगप्रारम्भः॥

(अथलीलावतीकीबारहमासी)

दो० माधोनल कामावती काम कंदला गेह।
लीलावतिबिरहिनिइतैब्याकुलतासुसनेह॥
जेठमास पुहुपावती तजीमाधवामित्त।
तादिनते लीलावती धीरज धर्योनचित्त॥
सुखितहोत संयोग में निसरभसौरभचंद।
बाग तड़ाग सुराकसब विरहिनको दुखदंद॥

(ज्येष्ठ)

प्रमानकाछन्द। नसेठआजबड़ी जेठनकरीरी। पुकारैसखीधाय हाहामरीरी॥बड़ीज्वालयज्ञ जरीजातदेही। बुझैना।बिना बिप्रमाधौ सनेही॥ चढ़ीचौखटा नौखटालौ निहारै। दिशाचारहेरैके हापुकारै॥कहूंधूरियाधूरिया लोगगावैं। जरैपैमनो भीड़लोनलगावैं॥ मरैकोकिला याकरैशोरमाई। हनैंप्राणपापी पपीहाकसाई॥ जरैचंद्रिकाचंद्र पापीधरैरी। बिनामाधवा प्राणमेरहरैरी॥ निशासांवरीप्रेतकी जोयजैसी। जरैयोगिनीजामगी जोतऐसी॥ करैप्रेम संग्राम योजाननीके। चढ़ीचौखटाजे त्रियासाथपीके॥ कहौंटेरकापैनकोऊसुनैरी। बिनाजानवा पीरकोधोगुनैरी॥ अहेमाधवा २ योंपुकारै। बिनामाधवा साधवाको सम्हारै॥

चौ० सुनसुमान लीलावतिनारी। बिरहदवाग जरतसुकुमारी॥
ग्रीषमतपन भोरअतिहोई। पियबिछुरै सहायनहिंकोई॥
मूर्च्छितपड़ीसेज परकामिनि। बिषसोंबासर यमसीयामिनिं॥
बूड़तउछलत दिवस बितावत। विरहसिंधुको पारनपावत॥

सो० माधोमेरीपीर यह जगकोइ जानतनहीं।
जानतनहीं शरीर रजामजावाकिफइन्हैं॥

स० हियआनकेयो जियजानतही जबलौनहिं आनको जाहिरहै। मनमेंगुनआवै कहैनबनै निशिवासर तावत ताहिरहै॥

कबिबोधान आनके जानबेकोयहप्रेमको पंथजवाहिरहै। दिल-
माहिंरसोजो मिलोबिछुरोवा किसातैवह दिलमाहिंरहै॥

दो० बिरहीमन चौगानलै इश्कमहल्लाझेल।
अपने शिरको बढ़ाकर मनभावैतोखेल॥

प्रमानकाछंद। बिहालबालयोंभई। सनेहया दगादई॥कुरी
तिकोकहैखरी। नसेठजेठहूकरी॥ नकाननेकुमानहीं। अलीन
हीनजानहीं॥ करीकहाभईकहा। बिरंचिनिर्दईमहा॥ बियोग
नित्तसो कियो। अपारदुःखहीदयो॥ कठोर कोकिलारै।
पपीहरा हियेहरै॥ प्रचंडपवन ज्यों चलै। लतादिवृक्षत्योंहलै॥

दंडक। सुनहे सुभान दीनमानकी निकाई अबलीजे कहा
ग्रीषम कीतपन तनुताइये। फेर द्विज माधोको संदेशहूनपायो
भारीनौरनवारे नौतेनंदसरसाइये॥ बोधाकबि संगकी सहेली
कहैं बार२ पूजाकी जेवर की बियोग बिसराइये। पूजिये कहारी
जोपैवरघर नाहीं तौकहौ कैसे बरसात हममनाइये॥

बरवै। गावहुरी तुमगावहु तुमहीं चैन। हमहुन सुखबिनमि-
तवै तरसत नैन॥

चौ० सुनसुमुखीसुखभयो बढानी॥बिनमाधोसबजगदुखदानी॥
भली निबाही जेठजिठाई। सो करनी कहि जात न गाई॥
अबतो वर्षा ऋतु नियरानी। चाहत हमहिं दई अब जानी॥
फिरना मिलीमाधवा काहीं। रहीयहै आशा मनमाहीं॥

सो० सुनसुभान यहरीति मिलबिछुरै हियप्रीतमहिं।
सुनहियहोत सभीत ज्यों त्रिशंकु नृपकी कथा॥

चौ० ज्यों २ जेठमासऋतुआई। जीवतरही प्रीतमहिंछाई॥
सजलघटादिशि पूरबदेख। कालसरूप बियोगनलेख॥
सुनसुभान लीलावतिनारी। यामाधो २ ररकारी॥
सुमुखिय ध्यायगई गिरऐसे। बेधियबधिक कुरंगिनिजैसे॥

स० कारीघटादिशि दक्षिण देखिभयोरी हिन्नूहियरो जरिकारो।
ताहीघरी कहिहायवहै गिरगैभ्रूपै लहिप्रेमतमारो॥केतेनआयल-

गायथकेकबिबोधा हकीमनको उपचारो । पैनाधरै वहधीर अ-रीपैनावह मिलैपीरको जाननहारो ॥

चौ० सखीआयतबनारि निहारी । तजतप्राणनहिंआनबिचारी ॥
भलि यह प्रीति माधवा कीन्ही । यमके हाथबीच तियदीन्ही ॥
माधव नाम सुनतसुकुमारी । उठिपुनि पूरब दिशानिहारी ॥
कीन्ह प्रलाप घटा लखिसोई । सुधि बुधि नाहिंन देई कोई ॥

(आषाढ़)

छंद भुजंगी । महाकालकैधों महाकाल कूटै । महाकालिका के कैधों केश छूटै । कैधोंधूमधारा प्रलयकाल वारी ॥ कैधों राहुरूपकैधों रैनकारी॥महा मत्तमानोमृहींकी हलावै। चढ़ी चंचला ज्वाल माला फिरावै ॥ र रै मोरवाशोरवा भूमि छाई। करै तोरवा पवन तीनों कसाई ॥ महाघोरवा मेघकी कोसम्हारै । चढ़्यो नाकनाके सत्यो बारुभारै ॥ करै कोकिलायों कलापा । नहेली । बिनामाधवा मोहिं जानो अकेली ॥ कहौं कौनपै को सुनै पीर माई । बुरी आय आषाढ़ने लायलाई ॥ घटामध्यपापी बकापांत जोरे । मनो मैनके बानबिरही न छोरे ॥ अरे नग्रबासी परेबैरमेरे ॥ सुगावैं हिंडोरा सबैदेत टेरे ॥ अरीप्रीतिकीरीति हौंतोन जानी । भईरी हफासेठ कैसीकहानी ॥

स० । नइप्रीतिमें प्रीतम तो बिछुरो बनैकाहूनपीर सुनावतरी । बिरही चकचौंधिरही बनिताबेअषाढ़ी घटालखि आवतरी ॥ सुन भूली सुभान सबैसुरवा धुरवानको धावन धावतरी । हफासेठ लौ वायेफिरे मुखको बनै रोबतहि अबनाहिं गावतईरी ॥

बरवै । रोवत बनैन गावत सहैशरीर । इहि अषाढ़ मोहिंबाढ़ी अटपट पीर ॥

छंदभुजंगी । अरीआय आषाढ़नेगाढ़पारी।मरीरीमरी माधवा मोहिं मारी ॥ अरी चांदनी सेजलै दूरडारो । इतैआय कासकींसज्यास म्हारो ॥ तजौं प्राण हत्या पपीहै चढ़ाऊं । किधौं पापलै मोरवा शीशनाऊं ॥ किधौं दोष आषाढ़ के शीशडारों । किधौं

मित्रके शीशसों शीशमारों॥ वृथाप्रेम के सिंधु में मोहिंडारी। गयोत्याग ऐसी करी है चकारी ॥ खरीसौतसी पारैन कारी। सबैलायबे योगवे माधवारी॥

सो० बीत्यो मास असाढ़ सावन तनतावन लग्यो।
बिरहिन केहियगाढ़ मनभावन दावन बिना॥

चौ० सावनसखीलग्योतनतावन। क्योंजीवै बिरहीमनभावन॥
सजलघटा चहुंदिशिते धावत। मनहुं मतंग जंग कहँआवत॥
ररत मयूरचंचला छहरै। बिन भावन बिरही हियलहरै॥
घहर घटा गर्जन जनि छहरति। विहरत गिरिबिरहीतरलूटति॥
पीउ २ चात करटलागी। बिरही हिये लगावत आगी॥
बिन माधोहौं कलनहिंपाऊं। मित्र बिमुखकिहि शरणमनाऊं॥

(मेघ)

सो० मेघयिमघ धूमहौं बिरहिन तालिब इल्म।
महिरम बेमालूम बिरहकिताब पढ़ावसी॥

(श्रावण)

छंदमोतीदाम। सखी सुन सावन आवन कीन्ह। भईबिन भावन हौं अतिदीन॥ खरी यह कोकिल कूकत बीर। लगैबिन भावनमोंहि यतीर॥ चपैचपला छहरैघनमाहँ। चलैचमकाय बियोगिन काहँ॥ महाघन घोरतफोरतकान। रे रेमुरवानहरेमम प्रान॥ मनै धुरवाछहरै भुवआय। मनौबिरही बधजाल उपाय॥ बढ़ी सरिता हरतासब भूमि। दशौ दिशि मेघरहे तिमभूम॥ चलैतहँतीक्षण बेगबयार। लगैबिरही हियज्यों कठफार॥ लगे वर्षाबर्षा वनमेह। खड़े चुचुवात बियोगिन गेह॥

सो० मेरीचेदनबीर हरिवैभौसा वृध्वैद्ध।
जरसुकै माधोधीर देहगये देही रहै॥

स०। ऋतुपावस श्याम घटाउनई लखिके पनधीर धिरातु नहीं। धुनदादुरमो रपपीरन कीलखि कैत्तण चित्ताथिरात नहीं॥ जबते मनभावनतेबिछुरी तबते१८हिय दाह सिरातनहीं।हमको-

नसे पीर कहैं दिलकी दिलदारतो कोई दिखातनहीं ॥

बरवै । यह दिलमें दिलगीरी लखतुन आन । कैदिल जाने आपनो कौदिल जान ॥

छंदत्रोटक । सजि सावन दावनगीर चढ्यो । नभघोरकठोर निशान मढ्यो ॥ बकपंगतश्वेतध्वजाफहरै । तिनकोलखिकै बिरही थहरै ॥ घनघोरत मेगलमत्त मते । बिरहीजन प्राण नकाज दते ॥ रणमंडनहै धुजा चपला । तिनको लखिकै थहरै नवला ॥ रणशूरमयूर घनै चिहरैं । घुरवाझुकसाउथसे बिहरैं ॥ रणठाढ़ियचातकचारुधरै । यह भेष कबित्तनचित्तहरै ॥ जुगनूगनि जामगि ज्योति जगै । रनघोर कठोर सो तोपदगै ॥ त्रिबिधातहँपवन तरङ्ग चलै । बिरहीनहियो द्रुम जोर हलै ॥ सुरपति कमान बिमान छई । घनवानन की बर्षासुठई ॥ सरसेवर बुंदपरे धरनी । सरिता उमड़ी तजिकेतरनी ॥ जल में जलबुंद कपोल परै । त्रदसा जनुफूलन वृष्टिकरै ॥ जुरइन्दु बधूमग में डगरै । बिरही जनु शोणित बुंदपरै ॥ सुमुखी यहरीति नवनिभई । सुखदायकते दुखदंतदई ॥ बिनभावन कौन सहाय करै । सगरे निद्राहट मोधरै ॥

दो० समयपाय बिरहीनको भेषटरूटी देत ।
सरिताके तटबैठके मजलस मुजरालेत ॥

दंडक । ररतमयूर मानो चातक चढ़ावै चोप घटा घहरात तैसीचपल छटाछई । तैसी रैन कारी बारिबुंद झरलाई भेषि झिल्लिन की तान रुचि बाढ़त बही नई ॥ साजो चित्रसारी नई प्रीतम पियारी गावैं मचायो हिंडोरा कोरी प्रीतमें मई । बरषा बहारतरुणाईकोतमाशो मोहिंसावनकीरैन मनभावनदगादई ॥

चौ० माधोमोहिंमहादुखदीन्हा । वर्षासमय बियोगिन कीन्हा ॥
सजहिं श्रृंगार अभूषण नारी । करहिं गान ते पियहिपियारी ॥
गलबाहीं डालै हगराती । नवल नारि जोबन मद माती ॥
दंपतिमिलै हिंडोरा झूलहिं । मोहिंबिरहकी शूलन सूलहिं ॥

सो० सखीदुसह यह पीर मेरेहिय खटकत रहत।
त्यागन देह शरीर इहि दुख बिरही माधवा॥
(भादों)

त्रोटकछंद। झकझोरत पवन प्रचंड चलै। बिरही द्रुममूलस-मेत हलै॥ घहरैघन घोर घटा छहरै। नवपल्लवलोबनिता थहरै॥ निशि बासर भेद कछू न रह्यो। चकहा चकहीनबियोग दयो॥ बिरहीगनसो बिरहीय जरै। जुगनूगन जोर धरै सुपरै॥

छंदभुजंगी। मघा मेघमातंगसे जोर छाये। महा घोर संसार मेंजोर छाये॥ महामेघ मालानके घोर भारी। कहूंसिंह चि-कारथहरात नारी॥ कहूं बज्जकोघोर पब्बीचिहारैं। कहूंमोर वा शोर कै मोहिं मारैं॥ घनैभारदीमेष झिल्ली कलोलैं। कहूंचंचला-न के चित्त डोलैं॥ कहूं तान हिंडोर कीजोइ गावैं। हियेलाग पीके घनैरंग छावैं॥ सखीतेस बैबै र मेरेपरेरी। नहीं होत शां-ती हिये ते करेरी॥

सो० पाली हती मयूर आली हौं चित चाहि कै।
सौतभई अब कूर बिरह बिवश पावस निशा॥

दंडक। आहेजाम पवन प्रचंड झकोरत तैसीमेह झरनाकी मैंडी सरिता तलान की। तैसी ये कलापी मारुकर खाकला-पैतैसी झिल्लिनकी झोरकारीरजनीकलानकी॥ बिरहीरही बखानै तैसी बिरह हिय में बाढ़ी बिरहमजेज पंचवान के झलानकी। प्रीतम सुजान प्यारी कैसे केस मारैभारी घनघहरान छहरान चपलानकी॥

सो० रे रेस्वातिक कूर अवधबाल जानत जगत।
भावन हमरो दूर सूने मतसकता करै॥

स० प्यारो हमारो प्रवासी भयो तबसे सहिये बिरहानल तापन। येतेपैपावसकी जानिशा हियरो हरैसुन केकीकलापन॥ चातक याते करौं बिनती कबि काम क्षमौ अपनी जा अलापन। तैंअ-पने पियको सुमिरै मरै हमतेरीजुबान के दापन॥

दो० मान्योकेकी कुहुककै बिरही हो निरशंक ।
चातक अवसर आपने तूमत सहै कलंक ॥
चौ० प्रथमनिदाघतपनितनतायो ।बृन्योताहिअषाढ़पुनिलायो ॥
ताहीपैसावन रिस कीन्ही । फिरतिहि खौफभादवै दीन्ही ॥
अधम भूपभादौं गतसोई । बड़ अंधेर रैनि दिन होई ॥
दिनके राज सूर नहिं देखी । नहिं द्विजराज प्रसंग बिशेखी ॥
बरषतबहुत नेम नहिं कोई । सरिता सरवर नदिया सोई ॥
चलत पंथ नीत नित खोटी । रानीजिनके बीर बहोटी ॥
पानिप गलित२ थलऐसो । सुरभी दान शूद्रको जैसो ॥
सबथल पायपंक सरसानी । बेदबिवाद मलिनतिय पानी ॥
सजतन दूर कोकिला कीन्ही । बिषहर भषीपातुरी चीन्ही ॥
विदुवा कहत मैड़ कन काहीं । पढ़तबेद निशिदिन जल माहीं॥
अमलकमल फूल रह्यो न कोई । जिनको बिदुकराज छयैहोई ॥
उड़ै लोयजुगनू लखिऐसे । चाहै कूरकूर नृप जैसे ॥

दो० गौंच जोंक अहि केंचुआ कान खजूरे भेख ।
बिच्छिनकोल पतंग डस भगदर बढ़हिं अलेख ॥

सो० भादौं पटतर भूपहोय जो प्रजाअभागते ।
यमसम सरलस्वरूप अचल पंथतमरैनि दिन ॥

दंडक । सजल सरूप परमारथ सनेहीवार बेगि बलवान आयो गगन चढ़धायके । हौंतो परपीरक बिशेष तोहिं जान्यो बार वृष्टि कै छाया म्हारी तपन बुझाय है ॥ उत्तर सुनाऊं आयो उत्तर दिशाते जोपै कौन देश कौन गावँ बस्ती बताई है । मौनमत होय येरेमेघा हमारे वीर मोपै सांचीकहु बालम बिदेशी कब आय है ॥

सो० बिरहबाउरी बाल तोहिंखबर कछु सम असम ।
इन मेघनके गाल गला होत करता बचै ॥
चौ० पैकुछ दोष तोहिं यहनाहीं । बिरही बिकलबाउरे आहीं ॥

मेघन दूत सुनो मैं कोई। सावधान बिरही किन होई॥

इतिश्रीमाधवानलकामकंदलाचरित्रभाषाबिरहीसुभानसम्बादे शृंगारखंडेछब्बीसवांतरङ्गः २६॥

इश्क बराम नाम॥

सत्ताईसवां तरंगप्रारम्भः॥

(कुँवार)

सो० उघृत आशिवन भूप प्रमुदितकोविद कोकनह।
जल थल नीत अनूप बंछित सुरनर नाग जिहि॥

छंद पद्धारिका। जल अमल कमल प्रफुल्लित बिशेखि। तल अमल बुद्धि आकाश देखि॥ यह शरदसुखद सबकाल आय। मोहिं ज्वाल माल बिन पियास॥

सो० अहे सुनो ब्रजनाथ बिन सँयोग प्रियनाथ के।
लखि अद्भुत यहगाथ शरद चांदनी देत दुख॥

चौ० फूले कास कुसुमबहुताई। जनुबरषा सहलईस बुढ़ाई॥
घटै द्रव्य दातालखि जैसे। बिन भावन बिरही तिय तैसे॥

छंद भुजङ्गी। अहे यूथ भौंरानके जोर धावै। जिसी ओरजावै मजाखूबपावै॥ भये मत्त नौनीलता नेह कीन्हे। घने फूलफुवा रयो पाय लीन्हे॥

त्रोटक छन्द। जलहू थलफूल भईसो भई। यहफूल मयन्दन के उनई॥ ऋतु शीतल २ पवन चलै। निशि रूप लखै अबकूफ हलै॥

दो० सबगुण सुखदायक सुकबि शरद निशानवनारि।
हसित लसतसी शशिमुखी गोरी शील उदार॥

सो० सुनसुमुखी यहपीर लेत देत बीराजगत।
मोहिंन बीराबीर खानो बिन माधो मिलै॥

(कार्तिक)

चौ०कार्तिकअमलमासजगजानत। नरनारीहरिसोंहितमानत॥

मोहिं न हरिके हित सुख होई। मेरो हरि माधव नल कोई।
छन्द झूलना। प्यारीप्यारेपीउ की नारी भरीअनुराग। पूजा करै हरिदेव की जल देवती बड़भाग॥ चर्चैंसुचन्दन चारुअंगनफूल हारसुवेश। धोती सुउज्ज्वलही हरै छुटे मेचककेश॥ गावै बजावै तारियां बोल हैं हरेहरिखूब। इहिमास मोहिं उदास करि गयो माधवा महबूब॥ देवें दिया आकाश को गृह बारदीपकपूर। गावै सुदीपक रागबालासजै भूषण भूर॥ खेलै जुवाजाइ बनावै देव गोधनधार। मदमत्त नाचैं ग्वालिया हंकरत लरतपचार। करिअन्नकूट बिशाल देव उठायनर नारीय। साजै सुगौन बिवाह मंगल गाय गनगारीय॥ वह देख आनँद मूल सब जग शूल मोहिय जान। देखे बिना द्विज माधवा क्यों लीजिये सुख मान॥

(मार्गमास)

सो॰ लाग्यो मारगमास जग ते भायो उस्मदल।
जलथल शीत प्रकास भारेसम बिरहिन भवन॥
यहमारग यहशीत मोहिं आन होतो रुचिर।
होतो माधो मीत हियरे परहियहार ज्यों॥

चौ॰ यहबिरंचिकीलखि चतुराई। दिलवरनरन दरदअधिकाई॥
माधव से महिरम नर काहीं। बन बिहार बस्ती घरनाहीं॥
नाहकनर उपहास बढ़ावै। गुन समुद्र को स्वादन पावै॥
नाहक नृपति निकारादीन्हा। हिय हवालकरहे लाउनकीन्हा॥
सातद्वीप की दीपत जो है। सोतो माधो नल कहँ सोहै॥
ताकहँ छाहँ न शीतल पानी। राजसाजकी कौन कहानी॥
यातें बिधि अविवे की देखा। रांगा रूपासम कर लेखा॥
दूजे जग के नर अज्ञानी। तिन माधोकी प्रिभित जानी॥
मूरख सभा चतु रनर कैसे। बगुलन माहिं हंसलखि जैसे॥
यातें बग मूरख छलछावैं। हंस सुजान रहन नहिं पावैं॥
औगुन कथन कामका कीन्हा। मारग मास छोड़िनिहि दीन्हा॥

(पूसमास)

लाग्यो पूसशीत सरसानो। बनिता फिर निजु हालबखानो॥
निशि दिन शीतल हैं नरनारी। तूलनतपी प्रीतमहप्यारी॥
तिनकोऋतुकोगुणसमलागत।जिनके हियलगके पियजागत॥
जिनके गेहन प्रीतमप्यारो। तिनहिं ज्वाल सम लगतहि मारो॥
होंहि बिवाह गीत तिय गावहिं। आधीरातबरात जिमावहिं॥
मड़वातर बरात छबिछाई। बजैं दांत जिमि बजतबधाई॥
परस्यो भातन आगे खाहीं। लूघर २ सब चिचयाहीं॥

(माहमास)

अबसुनसखी माघइत आयो। सबरेजगतमोदमदछायो॥
प्रथममकर अस्नान दान नित। फिर बसंत आगमप्रबीनचित॥
कहुंकहु आमन मौर निहारै। कहुं२ कोकिल बचन उचारै॥
हरितबाल जोबन हरियानो। आगम ऋतु बसंत को जानो॥
जतधमार नारदी गावै। रुचिर हारशृंगार बनावै॥
ऊंचे महल झरोखन झांकें। जिनकी लगी जिन्हों से आंखें॥

(फाल्गुनमास)

अब सुनसखीफागनियरानी। यहफागुनसबजगसुखदानी॥
चढ़ी चौखटा नार नवेली। निशिदिन जे प्रीतम सँग केली॥
समगर्मीसमशीतलताई। संयोगिन कहँ मौजबनाई॥
ऊपर ललित चँदेवा साजै। नीचे गिलम दुलीचा राजै॥
ताऊपर परयंक बिछायो। तिहिपर मदन युद्ध सरसायो॥
सनै सुगंध न लज्जात्यागे। लपटैं छुटेजुटे उठभागे॥
एकैनार आँगनके माहीं। गलबाहीं बैठी बहु आहीं॥
नाना रुचिर मनोहरा गावै। द्वारेकढ़त लट्ठले धावै॥
बरिया ई कर बासन मारै। बसनछीन कहि घनी तुकारै॥
बंधु बाप की आनन राखैं। मदमाती अबला सब भाखैं॥
बीण मृदंग झांझझनकावैं। नाच गाय सबलोग हँसावैं॥
ये के राज समाजनमाहीं। उड़त अबीर रंग सरसाहीं॥

केशर नीर अर्गजा बरषे। सनै गुलाल नारि नर हरषे॥
ए के फूंक होलिका आवें। भांति २ के स्वांग बनावें॥
गधा चढ़ै जारशिर बांधें। हाड़नकी माला आरा धैं॥
धूर उड़ावतगावत सोई। अनहोनी जो जग में होई॥
स० गोबरकीच सनैये बनै अरुकीन्हे कुसुंभेशराबके नस्सा। हाथ में लट्ठलटै बिथिरीं उन्माती सीनारिकिये रस मस्सा॥ घूरन पै लपटैझपटै सनै इल्लतगावै खसर फस्सा। को बरनै जो लख्योइन आंखन फागुन मासको धूमरधस्सा॥

(चैतमास)

चौ० सुनुसुमुखी बसंत ऋतु आई। माधो नलकी खबर नपाई॥
कूकन लागी कोयल पापिन। बिरहिन मरनलगी संतापिन॥
स० कोकिलयातेरो कुठार सोबान लगै पर कौन को धीरजरैहै। याते मैं तोसों करौं बिनती कबिबोधातुहीं फिरके पछितैहै॥ स्वारथ औ परमारथको फल तेरेकछूसुन हाथ न ऐहै। ठौरकुठौर बियोगिन के कहूं दूबरी देहनमें लगजैहै॥
बरवै। कूकन मार कोइलिया करि२तेह। लगिजात है बिरहिन के दूबरी देह॥
छंदपद्धारिका। लखिकंज खंज प्रफुल्लितबिशाल। किंशुक समाज ज्यों ज्वाल माल॥ लखिसुभट आम शिर धरेमौर। ऋतुराज आज शिरताज तौर॥ बनबागसबै पति झार देखि। यहचै तमास कारण बिशेखि॥ सबफूल युक्त द्रुमबोलि देखि। बेदन समान बिरही न लेखि॥ जलअमल चलतात्रिबिधा समरी। उरतीन तापसम लगतबीर॥ दिशि चारेचत सन्या निहार। कहि हाय मित्र भुइँपरी नारि॥
स० काकला पुकारत दरोसो दयो इतै देखपलाश समाज घटालौ। बाहे लखोतो घनै भृमरानकी श्यामता घोरलखातघटालौ॥ बठौरन बोधा बिना हरहै अमलानके मौर बितान घटालौ। येरी संत की फेरी पस्यो मन मास्यो फिरै चौगानबटालौ॥

छंदभुजंग प्रयात । दिशाचारहों पौनको चक्रधावै ॥ कहूं कोकिला कूकिके लाइलावै ॥ कहूं भीरभौंरानकी घोरभारी । कहूंतानसारङ्ग बीणनादन्यारी॥कहूं कामिनी कंथऊंचीअटारी । उठैकाम कल्लोलयोंरैनसारी ॥ दिशाबारहों द्वारिया चूबखोलै । हरीलाल पीरीडरी भूर्पडोलै ॥ खरी चांदनी ज्योंचंदेवा तनायो। घनो गारि घनसारसारै बहायो ॥ रची चांदनीसेज सुमनादनी की । अहैसेनि साकैंनिसारामजीकी ॥

स० लखिये पतिभ्कार पलास बढ्यो नवेली दवागिन ज्यों दहतीं । सुनि कोकिला कूकन काम भभूकन चंपक भूकनतै सहतीं ॥ कबि बोधा जे कोऊ प्रबासी कहूं तिनकी बनिता दुख यों कहतीं । धनिवेई त्रियाया बसंतसमय छतियाँलग कंथकीजे रहतीं ॥ बैशाख मास ॥

दो० संयोगी बिरहीनको तनतावत ज्योंलाख ।
सुन सुमुखीकी साखि यह बीस बिस्वाबैशाख ॥

छंदप्रमानिका । कठोरकोकिलाररै । पपीहराहियोहरै ॥ प्रचंडपवन ज्योंचलै । लतादि वृक्षत्योंहलै ॥ सखी कहाबिथाकहौं । दईदई सोई सहौं ॥ नमित्र इत्तआवही । न चित्तचैन पावही ॥

सो० सुनि सुमुखी यहपीर बालापन बेधन दई ।
क्योंकर धरियेधीर सुधि नहिं माधोनेलई ॥
बीते बारहमास मास २ गलमांस गयो ।
रहीनिगोड़ी श्वास माधोके श्वासनलगी ॥
माधो मेरेयार यारी में ख्वारी करी ।
बीती अवध अधार अबजीवों आधार किहि ॥

इतिश्रीमाधवानलकामकंदलाचरित्रभाषाबिरहीसुभानसम्बादेयुद्धखंडेलीलावतीबारहमासीसम्पूरणसमत्ताईसवांतरङ्गः २७ ॥
इश्कगुजराननाम श्रृंगारखंडे ॥

अट्ठाईसवाँतरङ्गप्रारम्भः॥

दो॰ स्वपने देखी माधवा लीलावती बिहाल।
हाप्यारी २ सुमिरि भूमिगिरयो तिहि काल॥
कष्टित स्वसुनि मित्रको कष्टित उठिअकुलाय।
हाय २ कहि कंदला द्विजको लयोउठाय॥

चौ॰ सखिन सहित कंदलानारी। माधोसों बोली तिहि बारी॥
सुनो बिप्रमाधोमेरे स्वामी। भई कहातुमको बेरामी॥
कहो बुझाय बाराजिनल्यावो। किहि कारण प्यारी गुहरावो॥
सो सुन बिप्रकह्यो तिहिपाहीं। अकथ कथाकहबे की नाहीं॥

सो॰ अहोप्रिया सुन प्रान शंकायुतमाधो कहैं।
मोहिंतोहिं चिंतान कानन हो कानन सुनी॥
कहीनयाते जाय जाय शील याके कहत।
तातें तनमें लाय तन ताऊँ ताकीतपन॥

चौ॰ यहसुन फेर कंदला नारी। माधोसों बोली सुकुमारी॥
कै करतूत सखिन कछु कीन्हीं। कै मैं चूकगई मतिहीनी॥
कै कछु कामसैन फिर कीन्हा। कै काहू दूती मत दीन्हा॥
कै कछु काल कला अवरेखी। कै कोऊ सपने प्रिय देखी॥
चूकैसखी दूरातिहि कीजे। मेरीचूक सिखापन दीजे॥
कामसैन को डर कछुथोरा। निकट उज्जैनपती को डेरा॥
दूतीचरित ध्यान करलीजे। निश्चय काज सुफल तोकीजे॥
काडर होनहारके माहीं। मोहिं तोहिं जब अंतरनाहीं॥
जो कदापिस्वप्ने प्रिय देखी। तोकर तासु तलाशबिशेखी॥
सत्य होय तो आन मिलाऊं। यद्यपि भवनभानुकेपाऊं॥
एक और शंकामो काहीं। जो गजरा दाहिने करमाहीं॥
रुचि २ काहूबाल बनावा। तुम्हरे करमें कैसे आवा॥
अबजिन मोहिं दुरावो स्वामी। जिनदिलपर ओढ़ो बेरामी॥
जोप्यारी पियके मनप्यारी। सो स्वामिन सौ बेर हमारी॥

ताके चरणझवाँले झाऊं। अन्हवाऊं अरुतेल लगाऊं॥
सजौं शृंगार सेज बैठारों। अपने कर बिजना तेहि ढारों॥
रुचि२ बीरा रुचिर खवाऊं। पानी पिवों हुकुम जब पाऊं॥
ताते नाथझेल नहिं कीजे। मेरोएकरार सुनलीजे॥

दो० जो पुहुपावति पुरी में बीती द्विज पर आय।
कहीकंदला बाल पै सत्य२ सो गाय॥
सो सुनि चलतिय कंदला मनमहँकारणआनि।
निकट बिक्रमादित्यके कही दीन ह्वै बानि॥

छंदद्रुबिला। हौंदीनबंधु भुआल। सुतबिप्र गोगोपाल॥ पर दुःख काटनहार। रघुबंश समऔतार॥ तुव प्रमित पारा वार। सो बिदित सब संसार॥ इकखंड मंडमहीप। तुव सुयश सातो द्वीप॥ चिरंजीवबिक्रम राज। गो दीन द्विज के काज॥ धर्मपुत्र पांडव को गावै। स्वाद सरस तब यश को पावै॥

दो० आना को बीघा जुतत माफी सबैहबूब।
फिर यह भुइँ कहँ पाय है तोसों राजाखूब॥
नहीं मेंड़मेंढ़ी कहूं गिरिपयोध सरहद्द।
जर्मान जाके राज में लखी कि सोभर रद्द॥
आमल को अरु मुल्क को खर्चबाहिरोछोड़।
जमारुपय्या कोशमें सुन छियानवे करोड़॥

चौ० तुमउजैनपतिहौनरनायक। तेरोयशगावैसोलायक॥
अवध नाथ गावै सुख पावै। अपनी मतितो सरिस दृढ़ावै॥
गावै शेशसहस फण ताके। दोसहस्र रसनाहैं जाके॥
यों सुनबचन कंदला केरे। हंसिनर नाथ कृपाकरि हेरे॥
अहोकंदला कहां तू आई। भईकहा तुमकहँ दुचिताई॥

दो० जो पुहुपावति में भयो माधो द्विज को हाल।
सो बिक्रम नरनाथ पै कह्यो कंदला बाल॥

चौ०जिहिलगिमाधोबीणबजायो।जिहिलगिसिरीरागपुनिगायो।
जिहिलागि पुरनारी अकुलानी। जिहि लखि प्रजाफिरादेठानी॥

जिहिलगि मंत्रिनमंत्र बिचार्यो। माधो नल को दयोनिकार्यो॥
लीलावति की प्रीति सुहाई। नृप पै काम कंदला गाई॥
दो० लीलावति द्विजकी सुता माधव ताकोयार।
प्रेमनमेंसमता सुभग राजा करतबिचार॥
चौ० माधो नलको पासबुलायो। कामसैन को कहिपठवायो॥
बजैंनगारे सबदल माहीं। कूच कीन्ह पुहुपावति काहीं॥
काम सैन बिक्रम बजरंगी। माधवनल बैताल प्रसंगी॥
गजरथ ऊपरसबै सम्हारे। भूमिपंथ जनु भानुपधारे॥
दलअपार बरणै कबिकोई। भरत खंड चलदल२ होई॥
कछुदिन मारग माहिं बिताये। पुहुपावती पुरी नृप आये॥
इतिश्रीमाधवानलकामकंदलाचरित्रभाषाबिरहीसुभानसम्बादे
शृंगारखंडेअट्ठाईसवांतरंगः २८॥

उन्तीसवांतरंगप्रारम्भः॥

चौ० योजन एक नगर लखिनेरा। कर्यो उज्जैन पती ने डेरा॥
मालासमपुहुपावति घेरी। घर २ खबरभई तिहि बेरी॥
जिहिमाधवकहँनृपतनिकारा। सोद्विजदेश उज्जैन पधारा॥
लै उज्जैन पती कहं आवा। कसन करी अपने मनभावा॥
सुमुखी खबर कहूं यह पाई। त्वरितहिं लीलावति ढिगआई॥
सुखअथाह गद्गदहिय फूला। मनसनेह केझूलन झूला॥
चाहै कहो किसा तिहि पाहीं। भरैगरोकहि आवत नाहीं॥
साहस कर यह बचन उचारा। यह दल बीच मीतसखितिहारा॥
यह कहि के लपटानी दोई। अधिककथा कहि जात न कोई॥
हियहिलके सुख कै सुखध्याई। सत्यअसत्य खबरतिहि पाई॥
पुनिधरिधीर सखीगहि बाहीं। यों बोली लीलावति पाहीं॥
सुनसखि चाहसत्य मैं पाई। नगर उज्जैन केर नृप आई॥
दूसर नृप कामावति केरा। तिनके साथ मीत पुनि तेरा॥
तीसलाख असवार गनायो। एकलाख लै पैदल आयो॥

दो॰ उतै माधवा बिप्रसों बिक्रम बोल्यो बैन।
चलौडगर चल देखिये पुहुपावति को चैन॥
चौ॰ दशहजार गजरथ सुभ साजैं। राजा देश २ के राजैं॥
नर समूह गनि पार न पाई। छिति तमाम तंबू तनछाई॥
यहसुनि खंड पाँच में प्यारी। लीलावति आई तिहि बारी॥
यथा मेघ माला छबि छाजै। यों दल पुरचकहूंदाराजै॥
पेशवान शत सातक संगी। माधव नल बिक्रम बजरंगी॥
डगर चले तिन पुरी निहारी। अमरावति ते सरस सवांरी॥
चारहुं दिशि आरण्य सुहाई। बागतड़ाग मँडल सघनाई॥
सुब्रन कलश मंदिर प्रति सोहैं। कलशन ललितपताकाजोहैं॥
चौक बजार दिवाले देवा। योगी यती करैं तहँ सेवा॥
सरिता रम्य अमल जल देखी। मंदाकिन सम शोभ बिशेखी॥
दो॰ वह अवास बसत तिय लीलावति तिहि नाम।
शीलवंत सुखमा सुरत गुणनवरसअभिराम॥
इत ने क्षण जन एकतहं कुन्नस करकर जोर।
अर्ज वंत ठाढ़ो भयो नजर अग्र भय छोर॥
निगह पाय बोला बचन हे कलिमलन कलेश।
आवत तेरे मिलन को गोबिंद चन्द नरेश॥
बचन सुनत क्षिति पती को जरद दुलीचा ल्याय।
करे बिछौना दूरतक भूमि सुगंध सिंचाय॥
सिंहासन परछत्र युत मसनद चारो भाग।
उचित २ बैठार ने सबराजन अनुराग॥
चौ॰ हुक्मपाय नरनायक केरा। तुरतहि खड़ाकीन्ह तिहिडेरा॥
बहुत बितान जरकसीताने। कितिक दुलीचा गिलम बसाने॥
दो॰ अये बिराजो बंधु यों बिक्रम अज्ञा दीन्ह।
मसनद नीचे पावँ धर अंगमालका कीन्ह॥
सभा बीच भूपति सबै मिलकर के कर प्रीति।
बैठे निज २ आसनन अपनी २ रीति॥

चौ० नजरानी सौंपीनरनायक । फिरबिनतीकीन्हींजोलायक ॥
भरतखंड मंडन क्षतधारी । और भूपसब प्रजातुम्हारी ॥
बड़े भाग प्रभु दरशन दीन्हों । घर बैठे सनाथ मोहिं कीन्हों ॥
इतनी सुन बिक्रम नरनाथा । गजरथ नजर कीन्हधर हाथा ॥
द्रव्य अनेक सों टीकाकीन्हा । प्रीति सहित बीरापुनि दीन्हा ॥
बिदा भयो नृपनगरी काहीं । कामसैन भेंट्यो मगमाहीं ॥
रीति बिरादर आदर जोई । दुहूंओर दोउ राजन होई ॥
फिरगोबिन्द चन्द्र नरनायक । आयो पुहुपावति सुखदायक ॥
नगरी मांझ नकीब फिरायो । मोदीओर दिवान बुलायो ॥
सीधा लेय तुम्हारे कोई । नृप बिक्रम के दल में जोई ॥
तासों दाम द्रव्य नहिंलेने । चाहै जिन्स तौल सो देने ॥
फिर नरेश डेरन में आयो । रघूदत्त को पास बुलायो ॥
तासों कही कथा समुझाई । बरष एक में जो हो आई ॥

इतिमाधवानलकामकंदलाचरित्रभाषाबिरहीसुभानसम्बादे
शृंगारखंडेउन्तीसवांतरङ्गः २९ ॥

तीसवांतरंगप्रारम्भः

चौ० बिक्रम कही माधवा काहीं । मनचिन्ता कछु कीजैनाहीं ॥
जोजातीय माधोनल केरा । सो कुल पूज्य मोर सौ बेरा ॥
जो कदापि यहकाज न कीजै । तो बिरोध को बीरा लीजै ॥
चलो नबरिये परघर आई । नाहक मरजादा पुनि जाई ॥
यहसुन जबरघुदत्त ने लीन्हों । ज्वाबसुदेश नृपातिकहँ दीन्हों ॥
जोकारज उत्तमप्रभु जानौ । करौ वही जो मेरेमन मानौ ॥
प्राण नाथ ज्योतिषी बुलायो । ताही क्षण तासों फरमायो ॥
सगुन सुमंगल मूल बिचारी । रचिसुमुहूरतसब सुखकारी ॥
सचिव ज्योतिषी औ पुरबासी । पंडित बैरागी सन्यासी ॥
पूज्य २ पूरुषऔ नारी । आये सब तहँ तेही बारी ॥
अजिर लिपायचौक शुभसाजा । मध्यदेव गणनाथ बिराजा ॥

गवरहि ध्याय सगुन शुभ पाई। मंगल बारको लगन लिखाई॥
जेठ कृष्णपंचम तिथिसाजी। घरी दोइगतराज बिराजी॥
वृश्चिकलगनश्रवण तहँ पायो। तीजे मकरचन्द्रमाआयो॥
चौथे शनि पाँचे भृगुहोई। नवमे सुन्दर सुरगुरु सोई॥
दूजेकेतु सातबुध सोई। अठयें राहु अशुभ नहिं होई॥
दशमें कुज सुन्दर शुठिआहीं। गेरहें सुन्न अशुभकछुनाहीं॥
लिखी लगन पंडित सुर ज्ञानी। शोध मुहूरत अति सुखदानी॥
हरद दूब्य चावर औ चन्दन। जरकस मय कपड़ा आनन्दन॥
पाँचलाखकी लगन सवाँरी। हय गजरथसब दिय सुखकारी॥
नाऊ ब्राह्मण भाटपठायो। चलि बिद्या पति के घर आयो॥
समाचार विदुवा ये पाये। कुटुम्ब सनेही सब बुलवाये॥
कुटुम्ब सहित बिक्रम ढिगआयो। घरको सबै प्रसंग सुनायो॥
सुनराजा अनेक सुखपायो। माधोनल को पासबुलायो॥
पर्योतातके पांयनमाधो। पुनि सनमुखहियलाग्योसाधो॥
तातपूत एकत्र भयेदोई। महाराज बिक्रम पुन सोई॥
लेहु लगन यहबात बिचारी। बिदाकरी राजा तिहि बारी॥
गजरथ और जवाहर दीन्हों। मंत्रिन सहित बिदानृपकीन्हों॥
कोटिक दीन्ह खजानासोई। तुरत ब्याहुकी त्यारीहोई॥
धन्य २ बिक्रम महराजा। अपने हाथ माधवै साजा॥
माधो सहित कंदला नारी। रथऊपर बैठेतिहि बारी॥
केतक भूप सुभट हयहाथी। कर पठये माधो को साथी॥
काम कंदला सहित सुहायो। दूलह बिप्र बनोघर आयो॥

दो० कलश पाँवड़े आरती गीतसुमंगल गाय।
माता युत नारी सबै मिलीं माधवै आय॥
पहुंचायोटीका सुकरि गौरि गणेशमनाय।
पुतहू युत निज पूतको माता चली लिवाय॥

चौ० पूतसहित पुतहू घरआई। घरीचार तक बजी बधाई॥
दानबहुत मँगनों कहँ दीन्हों। निवतो सबैनग्र को कीन्हों॥

अँगन लिपाय चौकपुरवायो। फलदानी समाज बुलवायो।
इत शृँगार माधोको साज्यो। सोरह कला मदन तब राज्यो॥
दूलह बन नृप चौकै आयो। सबहिन आंखिन को फल पायो॥
मंगल गान नारि सब गावैं। पंडित लोग अचार करावैं॥
पूजि गणेश लगन करधारी। भइ प्रसन्न हिमवान कुमारी॥
अर्घदीन दूलह घर आयो। धनसमूह बिदुवा ने पायो॥
लगन खोलि के सबहिं सुनाई। बीरादै पुनि बाँट मिठाई॥
फलदानिन जिवनार जिमावैं। भांति२ कीगारी गावैं॥
सजन जिंवाय बिदा पुनि कीन्हें। बजें दाम नाऊ कहँ दीन्हें॥
चलप्रतिथा नृप के गृह आयो। समाचार सब प्रभुहिसुनायो॥
सुनि नृप सकल समाज बुलायो। रघूदत्तके मंदिर आयो॥
अँगन लिपाय दिवालपुताई। जरकसमय बखरी सब छाई॥
जातरूप मय कलश सवाँरी। चित्रसहित बहुधा छबिवारी॥
हरित बांस मंडफ शुभ साजा। जामुन पल्लव छायबिराजा॥
नीचेजर अम्बर तनवाये। मणि मोतिन गुच्छा छबि छाये॥
सुवरणमय अनार छबि छायक। सुवरणमय थूँनी सब लायक॥
पंचम खंभ जवाहिरजड़े। मंडफ मध्य खड़े सो करे॥
जड़ित जवाहिर बंदन वारे। पौंरदार छबिदार सँभारे॥
द्वार कलश मंडफ महँ सोई। जगमगमग सबठौरै होई॥
गौरियापि मायें सबसाजी। करैं शृँगार नारिरत राजी॥
मोद भरी मंगल सब गावैं। एकैतीया तेल चढ़ावैं॥
एकै बनिता तपैं रसोई। हरबर २ सब ठां होई॥
कुटुम्ब बुलाय जमा सबकीन्हों। मंडफ भोग सबहिं कहँदीन्हों॥
भोरमायनोफेर रसोई। दरो बस्त बस्ती कहं होई॥
तीयन हरदी तेल चढ़ायो। नगर मध्यनाऊ फिरवायो॥
बरनअठारह सब पुरबासी। पंगत बैठी देत्र सभासी॥
बरन२पंगत सब न्यारी। जेंवत खोत्रा पुरीसुहारी॥
दूजेपुनसब कुटुम्ब बुलायो। बराभात मड़वाको खायो॥

फेर प्रभात नगर सब माही। कुदुवनके घरचढी कराही॥
तुलहि मिठाई गजलैं गावैं। छकरा भर जनवासे आवैं॥
पुरी कचौरी बहु तरकारी। ढेरीसब जनवासे डारी॥
चारो पानी लकड़ी सोई। कनिक दार घृत शक्कर सोई॥
जनवासो इहि भांति सम्हारी। मंडफ माहिं रची जेवनारी॥
टीका लाख दशक कर साजा। अपर अभूषण हय गय राजा॥

दो॰ आवनहार बरात की तय्यारी सुनिकान।
पुरबासी नर नारि सब देखन चढ़ीं अटान॥

इतिश्रीमाधवानलकामकंदलाचरित्रभाषाबिरहीसुभानसम्बादेशृंगारखंडेतीसवांतरङ्गः ३०॥

इक्कीसवांतरंगप्रारम्भः॥

दो॰ कामसैन बिक्रम नृपति द्विज माधव के साथ।
सहसतुरीगज तीनतहँ साजी सुभग बरात॥

चौ॰ नौबत बजै सुभगसहनाई। नगरी सब बरणन धुनिछाई॥
सिगरे नगर खोर सबमाहीं। आतस बाजी पूरण आहीं॥
कलश दीप महताब अलेखी। जानत वह जिन खूबी देखी॥
प्रथमभूप जनवासे आये। उचित २ डेरा लगवाये॥
मिजयानी सबहीने पाई। तौ तक निबतहरी तहँ आई॥
उमह्यो नगर नारि नर सोई। कुचमर्दन ठौरन में होई॥
नौबत बजी भई असवारी। आतसबाजी त्योंउजियारी॥
द्वारचार कहँ दूलह आयो। मनहुं भानु भूलोक में आयो॥
उमह्योनगर नृपति यह देखी। जिहिकरअपयश सुनतबिशेखी॥
महाराज बिक्रम तिहिबारी। कलश कंठ माला मणिडारी॥
दूलह उतर द्वार जबआवा। नेगन को तब योगलगावा॥
टीका किये बहुत रथबाजा। शिविका कनकथार गजराजा॥

मणि गण मालाबहुतकदीन्हीं। बिनती बहुप्रकारसों कीन्हीं॥
मंडफ मार फिरो दुल्हराई। सबबरात डेरन को आई॥
चढ़यो चढ़ायो बहु बिधि काई। नग अमोल कछु बरणिनजाई॥
बहुरिबराती डेरन आये। बीती निशि रबि उये सुहाये॥
फिरी राछ लीलावति की जबहीं। भाँवर सुघरी आई तबहीं॥

दो० गजमोतिन के चौकजब पुरवाये सुखपाय।
कनक पटा कंचनकलश तहां धराये आय॥
एक ठौर लीलावती सहित बैठि रतिनाथ।
मणि गण खचित जो मौर शिर बिप्रउचारहिंगाथ।
गणपति पावक पूजि के समिधसुपारी आन।
परि भाँवररति नाथ की बहु बिधि बजे निशान॥

चौ० डेरन गये सबै सुखपाई। रहस बधाये दुलहिन आई॥
कियेनिछावर मणिअरुहीरा। गजअरु बाजि बहुत बिधिचीरा॥
मंगल गावहिं हिलि मिलि नारी। गईभवनको दुलहिनप्यारी॥
मड़बाघर सब बरात काई। भोजन हितमंडफाहि बुलाई॥

दो० सबबरात कामावति नृपति माधो बिक्रमराय।
चलिपहुंचे रघुदत्त के तिन बैठारेसुखपाय॥

पद्धरी। बहुबिबिध भांति के अन्नपान। परसे सबको आनन्द-मान॥ जेवहिं सबमिलकरके जो प्रीति। गावहिं जो सु-न्दरी बहुत गीत॥

दो० भोजन कर भूपन सहित हर्षि चले रति नाथ।
सबहिन को बीड़ा दियो बड़ीप्रीति के साथ॥

मोतीदाम। विद्या पति आनन्द बढ़ाय॥ डेरनगये बहुतसु-खपाय॥ निशिभई हानि जबउयेभान। गर्जहिं निशान घनके समान॥

दो० सबबरात रघुदत्त ने बुलवाई तिहिबार।
साजि२ कै मंडफगये करिबे पलकाचार॥

रेशम को जो बिछावनो ऊपर तनो बितान।
बैठारे भूपन सहित रघुदत अति सुखमान॥
तोमरछन्द। पलकाबिचित्र बनाय। तापैबस्त्र दियेबिछाय॥ लीलावती माधोजाय। तहँबैठियों सुखपाय॥ सबबने भूषणअंग। पहिरेदुकूल सुरंग॥ शोभाअधिक सरसाय। मैं देहुं पटतरकाय॥ घनदामिनी बहुभांति। शशिदेखिताहिलजात॥

दो॰ नेगसकल कुलकेभये बेदनकहे बखान।
सबबरात डेरनगई अतिआनँद उरमान॥

मोतीदाम। कुलयजमान रघुदत्त बुलाय। गयेदेनदायजो सबकोलिवाय॥ गजबाजि रथ शिविकाबिशाल। मणिगण अनेक मुक्तानमाल॥ दीनेबहुत भांतिके कनकथार। अरुभांति २ अम्बर अपार॥

दो॰ बार २ बिनतीकरैंकहत जोरकरहाथ।
सेवाकोदासी दई तुमको मैं रतिनाथ॥
चौ॰ बहुप्रकारसों भयोबिवाहा। नरनारिन को भयो उछाहा॥ नेगसकल कुलकेभयेजबहीं। बिदाकरीबरातको तबहीं॥
दो॰ मातपिता कोभेंटके लीलावति सुकुमार।
चलीसासुरे भेंटिकै सबसखियन तिहिबार॥
चौ॰ हय गय बाजिदास अरुहाथी। माधोकोदीन्हें बहुभांती॥ लीलावतिके सहितसुहायो। दूलहबनो बिप्रघरआयो॥
दो॰ कलश पांवड़े आरतीगीत सुमंगलगाय।
मातायुतनारी सबै मिलीं माधवैआय॥
मुहछायनटीका सुकरिगौरि गणेशमनाय।
पुतहूयुतानिजपूतको माता चलीलिवाय॥
चौ॰ पूतसहित पुतहूघरआई। घरीचारतक बजीबधाई॥ दानबहुतमँगतन कहँदीन्हों। निवतासकल नग्रको कीन्हों॥ इहिबिधिब्याहु माधोकरभयऊ। सब पुरबासिनअति सुखलह्यऊ॥

लीलावती कंदला सोऊ। रहनलगीं अति सुखसे दोऊ॥
दो० माधोसेलैकर बिदा कामावति उज्जैननरेश।
सकलसैन्य तय्यारकर गये आपनेदेश॥

इतिश्रीमाधवानलकामकंदलाचरित्रभाषाबिरहीसुभानसम्बादे
श्रृंगारखंडेइकतीसवांतरङ्गसमाप्तः ३१॥
शुभम्॥

कृष्णसागर

राधाकृष्णजी रचित जिसमें श्रीकृष्णजीका नवीन रीति से परिपूर्ण चरित्र वर्णितहै ॥

बिश्रामसागर बहुत मोटे अक्षर व तसवीर

जिसको महन्त श्रीरघुनाथदास रामसनेहीने प्रेमियोंके लिये बनाया जिसमें छहों शास्त्र और अठारहों पुराणों के मत और नवीन रीतिसे श्रीकृष्णचन्द्र व रामजी के सरल चरित्र पद्य में रचेहुये हैं ॥

रघुवंश भाषा टीका सहित

जिसके मूल श्लोकों को कालिदास कबि और भाषा टीका को राजा लक्ष्मणसिंह साहब बहादुर डिप्टीकलक्टर बुलन्दशहर ने किया यह ऐसे कवि हैं कि इनकी कीर्त्ति हिन्दुस्तान से विलायत तक है जिस में राजा दिलीपका सन्तान न होनेसे रानी समेत वशिष्ठजी के आश्रमपर जाकर सुरभी की पूजाका उपदेशपा रानी समेत नन्दिनी गौकी सेवाकर राजाका २१ दिन गौको वन में चराना और गौको मायासे उपजेहुये सिंहसे बचा कर दूध और पुत्रहोने का वरदान पाना फिर दिलीपसे रघुका होना दिलीपका निन्नानबे अश्वमेध यज्ञ करना और सौवें यज्ञ में इन्द्रका घोड़ा हरलेजाने में रघु और इन्द्र से घोरयुद्ध होकर इन्द्रका सौवें यज्ञके फल पानेका वरदान पाना फिर रघुसे अज अजसे दशरथ दशरथ से रामचन्द्रादि चारों भाइयों की सम्पूर्ण कथा इत्यादि अनेक चरित्र १९ सर्गोंमें बर्णितहैं ॥

प्रेमसागरबातसवीर

लल्लूजीलाल कविकृत इसमें दशमस्कंध भागवतकी पूरी कथा ब्रजभाषामें वर्णितहै ॥

माधवबिलास

माधवप्रसाद तेवारीजी संग्रहीत इसमें नायकाभेदके कबित्त वर्णित हैं ॥